

ज्ञानाचार्यगिरिशुभाशुभ एवं ज्ञाननेका अपूर्व प्रण.

मेघमहोदय-वर्णप्रबोध.

कृता -

श्रीमन्महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि.

(हिन्दी अनुवाद संमत)

यदि आप सो वषों कष और सीननी बामेगी. मुकाल
होगा या दुकाल ये जानना हो तथा ममल प्रहार के भास्य,
सोना चादी आदि धान, रुई कपड़ा आदि वस्तु ये मईगा
होगा या सस्ता इत्यादि बहुत उपयोगी विषयों को जानने की
उत्कंठा हो तो इसको अवश्य मगवा कर पढ़िये ।

पृष्ठ ४२५ पकी जीन्द की कीमत ४) रुपिया पोस्ट
खर्च मलग ।

मिलने का पत्ता—

पं० भगवानदास जैन.

मेटियाँ जैन मिटिंग प्रेम.

बीकानेर. (राजपुताना)

इस विनाय उपराने के लिए जिन
 महाजयने महायना दी है
 उनही अभिनामावली.

- १५) विनाय पत्नी-निधार्मा सुमानमदुर्गा भारेष्ठा
 की धर्मपत्नी राजपति की माता से भेट ।
- १६) विनाय राजपति-निधार्मा भगवान्माता माधवा-
 मृणा की माता से भेट ।
- १७) विनाय राजा के धर्मपत्नी से भेट ।
- १८) विनायलोकाय निधार्मा सुनीया आजारामजी
 संपादानजी की माता से भेट ।
- १९) विनाय राजपति के भावक भाविकाओं की
 माता से भेट ।

इस पुस्तक मिलने का दिखाना—

श्रीगुरु रत्नलालजी मिसरूप

रंगी की गली -

बीकानेर (राजपुताना)

प्रस्तावना .

प्रियवर जैन बन्धुओं!

यह “ पूर्णक्षेमवह्मविलाम ” नामक छोटासा ग्रन्थ प्रकाशित कर भेंट रूपमें आपकी सेवा में उपस्थित किया जाता है, पूर्ण आशा है कि इसका अवलोकन तथा नैमित्तिक किया आदि विषय में सदुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ।

चिरकाल पूर्व इस ग्रंथ का संग्रह कर श्रीमान् मान्यवर गुरुवर्य प्रातःस्मरणीय श्री १००८ श्री क्षेमसागरजी महाराज ने परम कृपा कर मुझे इसे इसलिये सौंपा था कि मैं इसका प्रकाशन कर जैन समाज की सेवामें उपस्थित करूँ। मैं भी अपने ऊपर स्थित भार से उद्गुण होने के लिए चिर समय तक इच्छा और चेष्टा करता रहा, परन्तु दैवयोग से अब तक अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सका ।

क्षेत्रप्रशाना के अनुसार संवत् १९८२ का मेरा मास्य श्री पीकानेर नगरमें हुआ और पत्नी के

एवं सुयोग्य भर्माजील आश्रय वर्ग को यह बात किमो
 प्रकाश सिद्धि हो गई कि हम सब लोगों के लिए अनुपपत्ती-
 की तथा जैन समाज के लिये परम लाभदायक ग्रन्थ
 प्रकाशनार्थ प्रयत्न है, फिर भी क्या था। अधिकांश
 आश्रय, मण्डल इस के प्रकाशन के लिये अनुरोध करने
 लगा, ऐसा होने पर मैंने भी यह निश्चय कर लिया कि
 अब इसको ज्ञापित हो प्रकाशित कर अपने कर्त्तव्य का
 पालन करना चाहिये, इस निश्चय के कर लेने पर भी
 मैं अपनी संशोद्धील प्रवृत्ति के कारण समर्थ स्थाप-
 ना प्राप्ति के विषय में कुछ कहने सुनने में सहोष हो
 जाता रहा, अतः फिर भी कुछ दिनों तक अममंजसमें
 ही रहा रहा तथा आश्रय वर्ग से समर्थ हो ही की क-
 रता रहा, अन्ततः कतिपय भर्माजील आश्रय जनों ने
 स्वयमेव इस कार्य को अपने हाथ में ले कर इस के
 लिये उद्यम करना प्रारंभ किया, यम ऐसा होते ही
 कार्य का आरंभ हो गया और केवल यही से नहीं कि-
 न्तु बाहर से भी स्थापना प्राप्त होने लगी, प्रति फल
 यह हुआ कि लगभग दोष मास में ही ग्रन्थ मुद्रित
 हो कर भिजाना हो गया और मैं इसे आश्रय वर्ग में
 उपस्थित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करने में समर्थ
 हो सका।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन २ महाशुभाव सज्जनों तथा वाइयों ने आर्थिक सहायता प्रदान कर अमोघ धर्मशीलता का परिचय दिया है उनको इस धर्म कार्य में योग देने के हेतु धन्यवाद है, उनकी नामावली भी ज्ञानार्थ पहले प्रकाशन की गई है।

इस ग्रन्थ में—देववेदन, गुरुवेदन, सामायिक विधि, रायसी देवर्मा प्रतिक्रमण, प्रभ्याख्यान, गुरुवर कृत स्तवन, अष्टक, धुडियां, वासक्षेप पूजा, नवपद ओली विधि, प्रभ्याख्यान पारणविधि, चौबीस महाराज के १५० कलदाणक तथा वास विहरमाणजी के नाम, इत्यादि अनेक उपयोगी विषयां का संग्रह है, जिनकी उपयोगिता का निश्चय पाठक जन अवलोकनके द्वारा स्वयमेव कर सकेंगे।

मेरा विचार यह भी था कि—ग्रन्थ के अन्त में आचार्योंके निर्मिमत नीति और पैराग्व के उपदेशदायक कनिष्ठ उत्तमोत्तम श्लोकों का भी अर्थ सहित संग्रह कर संयोजन किया जाता कि जिससे गृहस्थ श्रावकों को नैतिक किया के ग्रन्थ के द्वारा ही उक्त विषय के उत्तमोत्तम श्लोकोंका भी अभ्यास होकर लाभ पहुँचना; परन्तु पुस्तकप्रकाशन की शीघ्रता आदि कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका, अस्तु—आशा है कि

किमी अन्य उपयोगी पुस्तक के साथ में गन्ना करनेवा
नुभाषणर नीति ही प्राप्त होगा ।

अन्न में हम धान में योगदान करनेवालों को
तथा पालीताना निषादी १० भगवान्दाम जिन ने
हमका मुक्त होने में परिश्रम दिया है हमलिये उस
को भी भण्डगाद प्रदान कर पाठकद्वारा से मेरा
निवेदन है कि घना में लेपन, शाधन और
मुद्रण जसादि के द्वारा जो २ पुष्टियां रही हो उन-
का संशोधन कर तथा अन्य का अन्वेषण और मनु-
ष्ययोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करें । किम-
चित् विज्ञेय.

निवेदक—

बीर मंत्र २४२२ ।

मुनि बलभसागर.

द्वितीय संस्करण १४

वीराने.

विषयानुक्रमणिका.

नं०.	विषय.	पृष्ठ.
१	देवचंदन विधि	१
२	गुरुचंदनविधि ..	११
३	मामायिक लेने की विधि	१२
४	मामायिक पारने की विधि ...	१८
५	राईप्रतिक्रमणविधि . . .	१६
६	मंघ्यासामायिकविधि	५७
७	देवसिधप्रतिक्रमणविधि	६२
८	जिनकुशलसूरिजी महाराजका स्तवन	१०३
९	पञ्चखलागविधि	१०४
१०	श्रीसद्गुरुगुणाष्टक	१११
११	श्रीकुशलसूर्यष्टकम . . .	११३
१२	श्रीगौतमदेव स्तवन ..	११४
१३	श्रीगुरुगुण स्तवन . . .	११६
१४	जन्ममहोत्सव स्तवन ...	११७
१५	श्रीपार्श्वप्रभु स्तवन	११७
१६	श्रीनेमिनाथस्वामी स्तवन	११८
१७	अजितनाथस्वामी स्तवन ..	१२०
१८	श्रीपार्श्वजिन स्तवन . . .	१२१

१६	मधुशान्ति मन्थन	१६१
२०	श्री गेरोपार्थिनगृहमन्थन (शशी मन्मायादिनी)	१६१
२१	श्रीगीनमन्मासी का गेद	१६०
२२	देमाषगामिकः पद्यरगाण सेनेका विधि	१३१
२३	देमाषगामिकः पद्यरगाण वारने का- विधि	१३४
२४	गामसेर दशा	१३७
२५	नवपद के नव गेमादहंदन, नव मन्थन मग नव गुं	१४१
२६	नवपदगृह मन्थन	१४४
२७	नवपद स्तुति	१४७
२८	नवपद गेमादहंदन	१४८
२९	नवपद स्तुति	१४९
३०	मादश घाटेन गम	१५०
३१	मिद्र अष्टगुण	१५१
३२	आचारिका छर्तासगुण	१५२
३३	उपाध्याय पद्यासगुण	१५४
३४	माधु के मन्मासीसगुण	१५५
३५	मन्मासी के मन्मासी भेद	१५६
३६	ज्ञानपद के मन्मासी भेद	१५७

३७	कारिग्रन्थ के ७० भेद	...	१७२
३८	तपपद के पचास भेद	...	१७६
३९	चोवीस जिन के १५० कल्याणक (पंचकल्याणक टीप)	...	१७८
४०	दीपमाला को गुणनो	...	१८३
४१	षीसविहरमान के नाम	...	१८३
४२	चारसाश्वता जिनवर के नाम		१८३
४३	मेरी भावना	...	१८७
४४	धारह भावना	...	१८८
४५	आठ थुई से दैववन्दन विधि	...	१९१
४६	चौदह नियमकी विधि	...	२०१
४७	आवकोंके प्रत्याख्यान के ४९ भांजा		२०७
४८	आराधना का स्तवन	...	२११
४९	पंचमी का छोटा स्तवन	...	२२२
५०	ग्यारस का स्तवन	...	२२२
५१	श्रीऋषभजिनेश्वर का स्तवन	...	२२४
५२	श्री सीमंजरस्वामी का स्तवन	...	२२५
५३	पर्युषण की स्तुति	...	२२८
५४	भगवंत के अंगपूजन का दृष्टा	...	२२८
५५	पद्मावती आराधना	...	२२९
५६	आवक का तीन मनोरथ		२३३

७३	सुनक विगार	२३६
७८	अतुल्यनी र्वःसंकी सुनक विगार	२३७
७९	इषीस जानका धोषण पाणी	२३९
८०	षावीस अभक्ष के नाम	२३९
८१	तपगच्छीय राहप्रतिप्रमणविधि	२४०
८२	जगच्चिन्तामणि दैत्यवन्दन	२४१
८३	भरद्देवर की सज्जाय	२४२
८४	सार्धवन्दना	२४२
८५	तपगच्छीय देवसिध प्रतिप्रमण विधि	२४८
८६	दीपमाला की स्तुति	२५१
८७	देवचन्द्रजी गृह स्नात्रपूजा	२५२
८८	अष्टप्रसारीपूजा अर्ध समेत	२५३



३७	चारिध्रपद के ७० भेद	...	१७२
३८	तपपद के पचास भेद	...	१७३
३९	चोत्तीस जिन के १५० कल्याणक (पंचकल्याणक टीप)	...	१७८
४०	दीपमाला को गुणनो	...	१८३
४१	षीसविहरमान के नाम	...	१८३
४२	नारसाश्वना जिनवर के नाम	१८३
४३	मेरी भावना	१८७
४४	पारह भावना	१८८
४५	आठ थुई से देवबंदन विधि	...	१९१
४६	चौदाह नियमकी विधि	...	२०१
४७	आवकोंके प्रत्याख्यान के ४९ भांजा		२०७
४८	आराधना का स्तवन	...	२११
४९	पंचमी का छोटा स्तवन	२२२
५०	गारस का स्तवन	...	२२२
५१	श्रीभृषभजिनेश्वर का स्तवन	...	२२४
५२	श्रीसामंवरस्वामी का स्तवन	...	२२५
५३	पुष्पग की स्तुति	...	२२८
५४	भगवंत के अंगरजन का दृष्टा	...	२२८
५५	पद्मायनी आराधना	...	२२९
५६	आयक का तीन मनोरथ		२३३

५७	मृतक विचार	२३६
५८	अनुवर्ती स्त्रीसंवेधी मृतक विचार	२३७
५९	इष्टीस जातका धोवण पाणी	२३९
६०	पावीस अभक्ष के नाम	२३९
६१	तथागच्छीय राहप्रतिप्रमणविधि	२४०
६२	जगचिन्तामणि चैत्यवन्दन	२४१
६३	भरद्देसर की सज्जाय	२४२
६४	तीर्थवन्दना	२४२
६५	तथागच्छीय देशमिष मन्त्रिप्रमण विधि	२४८
६६	दीपमाला की स्तुति	२५१
६७	देवचन्द्रजी मृत स्नायुजा	२५२
६८	अष्टप्रकारीपूजा अर्घ्य समेत	२५३



श्री पंच परमेष्ठिने नमः

मंगलाचरणम्

सुरनर वंदित योधमय, चन्दन हूँ श्रीअरिहंत ।
होन तुरत जिन भजन तें, भव कन्दन को अंत ॥१॥
सिद्धि सुधित सिद्धन नमूँ, पुनि आचार्य अनेक ।
जिन जिन शासन की करी, उन्नति सहित विवेक ॥२॥
उपाध्याय उपदेशप्रद, साधु साधुना लीन ।
प्रणमहुँ तिन के पदकमल, होय कर्म मल छीन ॥३॥
पूज्य पंच परमेष्ठि नित, शुभ मंगल के धाम ।
भय हेतु मैं तासु गुण, ध्यावहुँ आठहुँ याम ॥४॥
पूजनीय परमेष्ठि शुभ, पूरहि मम आश ।
सकल जैन जन लाभ हित, हो यह ग्रन्थ विकाश ॥५॥
पूर्णक्षेमवल्लभ सुजन, करिहहि पठन विलास ।
नित्य क्रिया विधि से इहहि, हुइ है हृदय उजास ॥६॥
मय विधि निपट अजोग मैं, कीन्हो ग्रन्थ प्रकास ।
सम्रन क्षमिहहि शुचि कहँ, यह मम दृढ़ विश्वास ॥७॥

सुजन कृपाभिलाषी—

साधु बल्लभसागर

पीकानेर.



धीरेव गुरुधर्मो नामः ।

धीरानन्द-वृन्द-गुरुधर्मो नामः ।

धीरेव-गुरु-धर्म-चन्दनविधिः ।

प्रथम पाठः ।

किमी स्थान में धीरेव गुरु धर्म भक्त हो धारक रहते थे, दोनो मंगे भाई थे, उनमें से बड़े का नाम विवेकचन्द्र और छोटे भाई का नाम विनयचन्द्र था, दोनो भाई सार्विक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई भगवन्त ही विवेकचन्द्र था, तथा छोटा भाई एवम् विनयचन्द्र था, बड़ा भाई विवेकचन्द्र प्रतिदिन को धीरेव गुरु धर्म चन्दनविद्या को निशुद्ध भाव से किया करता था, किन्तु छोटा भाई विनयचन्द्र छोटी अवस्था का होने के कारण उक्त विद्या में अनभिज्ञ था, अर्थात् उक्त विद्या के योग्य और लाभ को नहीं समझता था अतएव बड़े भाई, विवेकचन्द्र को यह हुआ थी कि मेरे समान मेरा छोटा भाई भी उक्त विद्या के महत्त्व और लाभ को समझे, तथा प्रतिदिन उसे अत्यावश्यक ज्ञान का पूरा को, अतएव एक दिन प्रातः काल विवेकचन्द्र, ने जिस प्रकार प्रतिबोध देकर अपने छोटे भाई को इस विद्या का महत्त्व बतलाया वह इसमें प्रवृत्त किया वह इस प्रकार है—

विवेकचन्द्र— भाई विनयचन्द्र! ऊठो प्रातःकाल होने का
 भाया है अब तक सोते रहना उचित नहीं है, क्यों की मनुष्य के
 प्रातःकाल शीघ्र ही उठकर शौच आदि आवश्यक क्रिया से निरत होकर
 श्रीदेव और गुरु आदि की वन्दन क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिये ।

विनयचन्द्र— (उक्त बात को सुनते ही शीघ्र उठ बैठा और
 बोला) हाँ भाई साहब! मैं उठ बैठा आज्ञा दीजिये ।

विवेकचन्द्र— अच्छा चलो पहिले अपने परमदेव बीतगा
 परमात्मा के दर्शन करें पीछे अन्य काम को करेंगे, क्योंकि शान्त
 और अलौकिक शोभावाले देव के मुखामुखिन्द का दर्शन करेंगे तो
 अपने को विद्या और सद्बुद्धि प्राप्त होंगे और उस के प्रभाव से अपना
 सब दिन का ध्यारदार मुक्तकारी होगा, नीतिशान्त्र में कहा है की
 प्रातःकाल महत्मा महानुभाव का दर्शन होने से मनुष्य का तम
 दिन अच्छे प्रकार बीतता है, उस को उत्तम लाभ होता है, तथा बुद्धि
 निर्मल रहती है तो भला अपने अभीष्ट देव के मुखामुखिन्द का दर्शन
 करने से बेसा ही क्यों नहीं होगा ।

विनयचन्द्र— हाँ भाई साहब ! आपका कहन यथार्थ है
 आजकी आज्ञा के अनुसार हम अभी आपके साथ चलेंगे, तथा सर्व सुख
 दायक परमात्मनः का दर्शन कर अपने को कृतार्थ करेंगे, (यह कहकर
 का साथ चलने के लिए तैयार हो गया) ।

विवेकचन्द्र— नीतिशान्त्र में कहा है की - देव मुद ग
 अपना महानुभाव के पास भाली हाथ नहीं जाना चाहिये, यथा

“विनिर्द्वयत्वेन नो देवाद् गजानं देवतां गुण्य ।” इस किण्व देवदरीन के किण्व करने समय अपने को गाली हाथ नहीं चलना चाहिये कुछ चारमोको से लेना चाहिये ।

विनयपत्र— जी साहब! मानाई (पायल से कर दोनो भाई चले और मन्दिरमें पहुँच कर नीचे निचे अनुमात्र वन्दन किया बो, इसी प्रकार सब को करना चाहिये ।

द्वितीयपाठ :

‘निमीही निमीही निमीही’ १ दह दाठमन्दिर में पैसना करना । (देवमन्दिर में जाकर विनय के साथ दह वास्य बोले) —

प्रलोक्य आनि हर नाथ! तुझे नमैं मैं ,
हे भूमि के विमल रत्न ! तुझे नमैं मैं ।
हे ईश! सर्वजगत के तुझे नमैं मैं,
मेरे भयोदधि नाशक ! तुझे नमैं मैं ॥ १॥

प्रभुमुद्रा को देखने हा दोनो हाथों को जोड़ कर तथा स्वरूप ... को नमस्कार किए मान प्रदक्षिणा देने समय यह भावना करनी चाहिये —

हे प्रभो ! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथमप्रदक्षिणां ददामि ।

दूसरी प्रदक्षिणा देने समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीयप्रदक्षिणां ददामि ।

तीसरी प्रदक्षिणा को देने समय यह भावना करनी चाहिये —

हे प्रभो! चारिध्रगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयप्रदक्षिणां
ददामि ।

इस के पश्चात् साधिया करे और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्माहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साधिया
बनाना हूँ ।

उस के पछे तीन पुंज (दिगल्लो) करे और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारिध्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्जं
रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारिध्र की प्राप्ति के लिए मैं
तीन दिगम्बियों का बनाता हूँ ।

और एक दिगम्बी पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे कुरुणामिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि। पुण्यमेकं च सिद्धवतिस्थन्यर्थं करोमि ।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थानकी प्राप्ति के लिये मैं
अर्द्धचन्द्राकारे समान आकार करता हूँ और एक दिगम्बी सिद्धममानस्थिति
के लिये करता हूँ ।

इसके पीछे भगवान की दाहिनी मुखा की तरफ लड़ा होकर
ज्याँझाँहो ना भगवान की बाईं मुखा की तरफ लड़ा होकर हाथ
भीड़कर तथा दोनों गोड़ा को और मन्त्रक को नमस्कर यह बोले

इच्छामि समसमणे ! वेदिं जुगुप्सुमि । निर्यादि-
ष्यामि । मन्थयिष्यामि ।

इस बार वही उठ बैठ के साथ में भीन दाग खोजना चाहि-
ए । इस के पीछे इतिहासी करना चाहिये ।

इरियावहियाण ।

इच्छाकारिणं मंदिमह भगवन् ! इरियावहियं परि-
क्षामामि ? इच्छं । इच्छामि परिक्षामिहं, इरियावहियाण,
विहाहणाणं समसममणे पाणक्षमणे वीपक्षमणे हरिय-
क्षमणे ध्यामा उभिंग पणम दम मदी मक्खहासंताणा
संक्रमणे, जं मे जीया विराहिया, पणिंदिया, वेइंदिया, तेइं-
दिया, पउरिंदिया, पंचिंदिया, अमिहिया, वत्तिया, लेमिया,
मंधारिया, मंधहिया, परियाविया, किलामिया, उहविया,
आणाधो आणं मंक्रामिया, जीवियाओ यपरोविया मत्स
मिच्छामि दुक्कहं ।

सम्म उत्तरा ।

सम्म उत्तराकरणेणं, पायन्निदसकरणेणं, विमोही-
करणेणं, विमह्ठीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घापण्डाण,
आमि काउम्ममं ।

अग्रन्थ उमसिणं ।

अग्रन्थ उमसिणं , नीसनिणं , स्वामिणं ,
छीणं , जंभाइणं , उहुणं , पापनिमणं , भम-

हे प्रभो! चारित्र्यगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयमद्विष्टं
वदामि ।

इस के पश्चात् साधिका कर और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साधिका बनाना हूँ ।

उस के पीछे तीन पुंज (दिगल) कर और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्जं
रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र्य की प्राप्ति के लिए मैं तीन दिगलियों को बनाता हूँ ।

और एक दिगल पीछे चर्द्ध चन्द्राकार कर और यह बोले—

हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि । पुञ्जमेकं च सिद्धवत्स्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं चर्द्धचन्द्राकार के समान आकार करता हूँ और एक दिगली सिद्धस्थान स्थिति के लिये करता हूँ ।

हम के पीछे भगवान् की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर
नगाली हो मो भगवान् की बाईं भुजा की तरफ खड़ी होकर हाथ
जोड़कर तथा दोनों गोदा को और मस्तक को नमस्कार यह बोले—

इन्द्रामिग्रमाममणो ! मंदिउ जायणिज्ञाण निमोहि-
 छाण मन्थणण संशमि ।

इस वाक्य को उड़-उड़ के साथ में मोन कर जानना चाहि-
 दे । इस के संज्ञे इन्द्राणी करना चाहिये ।

इरियावहिषाण ।

इन्द्राकारेण मंदिमत भगवन् ! इरियावहियं पदि-
 षमामि ? इन्द्रां । इन्द्रामि पदिषमिउं, इरियावहिषाण,
 विराट्णाण गमत्तागमणे पाण्डुमणे धीरुमणे हरिय-
 षमणे घोसा उज्जिम पाण्डु दग मदी मण्डासंनाना
 मंरुमणे, जे मे जाया विराट्णा, एगिदिगा, वेइदिगा, तेइ-
 दिगा, अइगिदिगा, पंचिदिगा, अभिहया, पत्तिगा, लेमिगा,
 मंयाइगा, मंघहिगा, परियाविया, किलामिया, उइविया,
 अणाओ टाण मंरुमिया, जावियाओ पपरोविया तास
 मिच्छा मि दुएटं ।

मम्म उत्तरा ।

मम्म उत्तरीकरणेणं, पापच्छिन्नकरणेणं, विमोही-
 करणेणं, विमट्टीकरणेणं, पायाणं वम्मणं निग्घावणद्वाए,
 आमि वाउममणं ।

असन्ध उममिण्णं ।

असन्ध उममिण्णं, नाममिण्णं, एवामिण्णं,
 छीण्णं, जंभाइण्णं, उइण्णं, पायनिसमणं, भम-

हे प्रभो! चारित्र्यगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयपदश्रिणां
ददामि ।

इस के पश्चात् साधिका को और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गुणनिर्मोहायै स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गुणों का नाश करने के लिये मैं साधिका
बनाना है ।

इस के पीछे तीन पुंज (दिगस्तो) को और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्जं
रचयामि ।

अर्थ हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र्य की प्राप्ति के लिए मैं
तीन दिगस्तियों को बनाना है ।

और एक दिगस्तो पीछे चंद्र चन्द्राकार को और यह बोले—

हे करुणामिन्धो! मिदमभ्यासप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि । पुरुषमेकं च मिद्व्यवस्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ - हे करुणामिन्धो! मिदमभ्यास की प्राप्ति के लिये मैं
चंद्र चंद्राकार बनाना चाहता हूँ और एक दिगस्तो मिदमभ्यास स्थिति
के लिए करता हूँ ।

इसके पीछे अश्वत्थ की दाहिनी भुजा को लटक गड़ा होकर
मज्जु-मो-ले अश्वत्थ की बाईं भुजा को लटक गड़ा होकर तथा
मोहक-लता-द्वारा लटका हुआ अश्वत्थ की लताका यह बोले—

इन्द्रामिन्द्रमामन्त्रो ! वेदिं उजाग्रनिष्ठां निमीहि-
ष्यात् मन्त्रेण वेदामि ।

इस वाक्य में उज्र वेद के साथ में मीन का बंधना चादि-
ये । इस के पछे इन्द्राजी ब्रह्मा काटिये ।

इन्द्रावहिषात् ।

इन्द्रावाग्नेः वेदिमह भगवन् ! इन्द्रावहिषं पटि-
ष्यामि ? इच्छं । इन्द्रामिन्द्रमामन्त्रं, इन्द्रावहिषात्,
विश्वानाम् मन्त्राणामन्त्रेण पाण्डुमन्त्रेण वेदिमहं इन्द्रा-
वहिषेण अग्निं उजाग्रं दग्धं सती सवितृमन्त्राणां
मन्त्रेण, जे में जीवा विराट्पिता, पृथिव्या, वेङ्गदिया, तेङ्ग-
दिया, पञ्चरिदिया, पञ्चिदिया, अभिरुद्रा, वसिष्ठा, लेमिया,
मन्त्राणां, मन्त्राणां, परियाविया, किलामिया, उद्दिष्टा,
आणाओ आणं मन्त्राणां, जीवियाओ यवरोविया तस
मिच्छामि दृष्टं ।

तस्म उत्तरी ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पापनिवृत्तकरणेण, विमोही-
करणेण, विमह्नीकरणेण, पावाणं कर्माणं निग्राहणद्वाए,
हामि काउमर्गं ।

अथ उन्मिषणं ।

अथ उन्मिषणं, नाममिषणं, त्वामिषणं,
जीणं, जम्भाङ्गणं, उद्गुणं, पापनिमग्नेण, भस्म-

लिपं , पित्तमुच्छ्राप , सुहृमेहि अंगमंचालेहि , सुहृमे-
हि खेलसंचालेहि , सुहृमेहि दिट्ठिमंचालेहि , एवमाइ-
एहि आगारेहि अभग्गो अविराट्ठिओ हुउज मे फाउ-
स्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं , नमुक्कारेणं न
पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं आणेणं अप्पाणं वो-
सिरामि ॥

किर एक लोगस्स का काउस्सग को, काउस्सग पारके एक संग-
स्स प्रगट कहे ।

लोगस्स उज्जोअगरे , धम्मनित्थयरं जिणे । अ-
रिहंते कित्तइस्सं , चउवीमं पि केवली ॥ १ ॥ उसभम-
जिअं च वंदे, संभवमभिगांदणं च सुमइं च । पउमप्प-
हं सुपामं , जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
पुष्कदंतं, सीअलमिउजंसवासुपुज्जं च । विमलमणं
च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभुं अरं च महिं
वंदे सुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पामं तह
वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुआ, विहुयरयमला
पहाणजरमरणा । चउवीमं पि जिणवरा, तिन्थयरा
मे पसीयंनु ॥ ५ ॥ कित्तिव वंदियमहिया, जे ण लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आगलगावाहिल्लभं, ममाहिपरमुत्तमं
दिनु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पयासयरा ।
मागरयरगंभारा, सिद्धा सिद्धिं मम दियंनु ॥ ७ ॥

जिणाणं जिअमगाणं ॥ ६ ॥ ते या चट्ठेणा भिन्ना, ते
या भवमंनिष्णागणं काले।मंपट्ठ या वडमाणा, मत्ते
तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावन्ति चेइयाटं उट्ठे अ अट्ठे अ निगियन्तेण प
मव्याटं माटं वेडे इह मत्तां तन्थ मत्ताटं ॥ १ ॥

इच्छामि म्ममाममणां वंदितं जायणिज्जाणं निर्मा
हिज्जाणं मन्थणं वंदामि ।

भगवन्!— जावन्न केविमाह भग्गेश्वरपमट्ठवि-
देहेअ। मज्जेमि तेमि पणअं निविहेण तिंदट्ठवि-
याणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्तिमद्वाचार्योवाध्यापसर्वमाधुभ्यः ॥ २ ॥

चोर्वास भगवान का स्तवन ।

ग्रह उठी मैं सदा नमं वारि हाथ जोड़ के साम ।
चोर्वासी जिनराज को मैं निन्य करूं परणाम ॥ १ ॥
(टंक) १ ऋषभ २ अजित ३ मंभर ४ अभिनंदन अरु
५ सुमति महाराज । ६ पद्म ७ सुपारम ८ चंद्राप्रभुजो से लग
न लगी है आज ॥ २ ॥ प्र० ॥ ९ सुविधि १० शीतल
११ श्रेयांस सवाई दीजें मुक्ति नाथ । १२ वासुपूज्य जिन
पारमा वारि १३ विमल १४ अनन्त क नाथ ॥ ३ ॥ प्र० ॥
१५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्धु जिनेश्वर १८ अरु
१९ महिल महाराज । २० मुनिमुघत २१ नमि २२ नेमजी

जिणाणं जिअमयाणं ॥ ६ ॥ ते आ आरुणा मिद्धा, ॥
 आ भवसंनिज्जाणणं काले। मंपट्ठं च वट्ठमाणा, स
 ति विहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावन्ति चेद्दयादं उट्ठं अ अट्ठे अ निगिन्देण प।
 सव्यादं तादं वेदे इह मंनो नन्ध मंनार्हं ॥ १ ॥

इच्छामि गमाममगो वंदितं जावणिज्जाणं निर्मा
 हिआणं मन्थणं वंदामि ।

भगवन!— जावन्त केवि साह्म भग्हेस्वपमहावि-
 देहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ ति विहेण तिंदट्ठि-
 याणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हन्मिद्वाचार्योपाध्यायमर्चमाधुभ्यः ॥ २ ॥

चोर्धाम भगवान् का स्तवन ।

यह उठी मैं सदा नमं चारि हाथ जोट के साम ।
 चोर्धामो जिनराज को मैं निन्य करूं परणाम ॥ १ ॥

(टेक) १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन अ
 ५ सुमति महाराज । ६ पद्म ७ सुपारम ८ चंदाप्रभुजी से ल

न लगी है आज्ञा ॥ २ ॥ प्र० ॥ ९, सुविधि १० शान्त

११ श्रेयांस सवाई दीजे मुक्ति नाथ । १२ वासुपूज्य जि

पारमा चारि १३ विमल १४ अनन्त क नाथ ॥ ३ ॥ प्र० ।

१५ धर्म १६ शान्ति अक १७ कुम्भु जिनेश्वर १८ अ

१९ मल्लिं महाराज । २० मुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेमन

अथ च सप्तमनिर्वाणं मन्त्रं चतुर्थं यत् सप्तमं चतुर्थं
 यत् सप्तमं चतुर्थं यत् सप्तमं चतुर्थं यत् सप्तमं चतुर्थं ॥ १ ॥
 मन्त्रं चतुर्थं यत् सप्तमं चतुर्थं यत् सप्तमं चतुर्थं ॥ २ ॥
 अथ च सप्तमनिर्वाणं मन्त्रं चतुर्थं यत् सप्तमं चतुर्थं ॥ ३ ॥

ਅਨੰਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ
 ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ
 ॥ ੨ ॥ ਸੁਦ੍ਰਿਸ਼ਿਤ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ, ਸੁਦ੍ਰਿਸ਼ਿਤ ਅਸਮਿਤਾ
 ਅਸਮਿਤਾ, ਸੁਦ੍ਰਿਸ਼ਿਤ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ॥ ੩ ॥ ਅਸਮਿਤਾ
 ਅਸਮਿਤਾ, ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ
 ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ
 ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ ਅਸਮਿਤਾ

इस के अन्तर्गत १५०००० से अधिक पत्रों को भी
लखे जाते हैं। १९५०-५१ में १००००० पत्रों को भी
लिखते हुए विशालाखा के १००००० पत्रों को भी
को भेज कर यह सब

नमोऽर्हमिद्वानायां व, प्यादमवैमाधुम्यः ॥ १ ॥

ॐ प्राज्ञानिनाभज्ञां, मानाहारु देव ।

मनमोहन स्यामा, अनुग्रह मूर्ति मेव ॥

मुझ गेम हलमिंगा, यन्त्रें प्रणामें नथ ।

शुद्ध समस्तित मीमांसा, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥ १७ ॥

इस प्रकार दर्शन का लक्ष्य भी है मनुष्यत्व का विकास।

स्मृती" को सोन बाग वट्ट का मन्दिर से बाहर निकालें ।

तृतीय पाठ : ।

द्वयोक्त गीति से देवानन्दनविधि का पूर्ण कानक पाठ मुकुन्दन विधि को करना चाहिये, अर्थात् गुरुमहाशय के सम्मुख खड़े होकर नीचे लिखे वाक्य से हाथ लगावमग्न देना चाहिये ।

इच्छामि गन्मासमगं धेदिउं जायणिज्जाणं निर्मा-
दिआणं मन्थणं धेदामि ॥ १ ॥

इस प्रकार समासमग्न देकर नीचे लिख पाठ को शोचकर गुरु महाशय से मुपमाग्न पूढनी चाहिये

इच्छाकार भगवन्! सुह राहण, सुह देवमिण सुण
तव शरीर निरापाप सुण मंगमपात्रा निर्वहं ओ जी
स्वामी मग्ना मे जी ॥ २ ॥

द्वयोक्त पाठ का कह का भाग्युक्त का नमो-स्तुत कर, पीछे नीचे बैठ कर उद्दिने हाथ का नीचे गिरकर तर्पण हाथ को गुरुपतिरत्न मुण पर लगाकर नीचे लिखे हुए पाठ को शोचना चाहिये

इच्छाकारेण मंदिमह भगवन्! अचमुट्ठिओउमि
अचिभनर रोहवे स्वामेउं इच्छं स्वामेमि देवमिणं, जं कि-
वि अपत्तिअं परवत्तिअं भरो पाणे विण्णु वेत्तावसे

१ दिगन्ते पाण्ड यजे तत्र यह पाठ कहना चाहिये, किन्तु पाण्ड यजने के पीछे "राहण" को जगह "देवमिण" शब्दको थोड़ना चाहिये ।

आण पूअणवत्तिआण सुक्कारवत्तिआण सम्माणवत्ति
आण षोहिलाभवत्तिआण निरुवसुग्गवत्तिआण ॥१॥
सद्धाण मेहाण विहेण धारणाण अणुप्पेहाण वड्डमाणो
ठामि काउत्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिण्णं नीमसिण्णं खासिण्णं छीणं
जंभाइणं उड्डुणं वायतिसग्गोणं भमलीणं पित्तमुच्चं
ए ॥ १ ॥ सुहुमेहि अंगमंचालेहि, सुहुमेहि खेलमंच
लेहि, सुहुमेहि दिट्ठिमंचालेहि ॥ २ ॥ एवमाइणं
आगारेहि, अभग्गो अविराट्ठिओ हज्ज मे काउत्सग्गो।
जाय अरिहेत्ताणं भगधेत्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥
नाय कायं टाणेणं माणेणं छायेणं अप्पाणं वोसिराप्ति।

इस के पीछे काउत्सग्ग में दोनों हाथों को नीचे की ओर
लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को नि
दिसाये यह विनियोग करना । काउत्सग्ग पार के (पीछे दोनों हाथों
को जोड़ कर यह बातें -

नमोऽर्हस्मिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीशान्तिनाथजी, साताकारक देव ।

मनमोहन ग्यामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥

मुझ गेम हृलसिया, बन्दूँ प्रणमूँ नाथ ।

गूढ समस्त मार्ग, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस प्रकार इतने कर तथा पीछे पड़्य समाप्त कर के -

मन्त्री" को भीन दार दह कर मन्त्रि से कह। नर ।

तुर्नाय पाठ :

द्वितीय गीति स टेवयन्दनविधि का उपाय करना के ॥२॥ पुस्तक ॥
विधि को करना चाहिये, अथवा शुभमहायान के मन्त्रों से हाक
नीचे लिखे वाक्य से दो बार खनभमरा दन चाहिये ।

इच्छामि स्वमात्मसंगो वंदितं जगज्जिज्ञाण निर्मा-
हिआए सन्धरणं वंदामि ॥ १ ॥

इस प्रकार स्वसाक्षिण द्वय नाच निरुद्ध १२ को चालक का मुख
महागज से सम्बन्धिता प्रतीत नाहिने

इच्छाकार भगवन्! सुहृद्गणप, सुहृद्देवमिष सुख
मर शरीर निराबाध सुख संशयशत्रु निर्वहो ॥ जे
श्यामी भाना जे जी ॥ ७ ॥

[illegible]

इच्छाकारेण संदिमत् भगवन्! अद्भुद्भिर्भाऽभि
 व्यभिन्नर रोडये स्वामेकं इच्छं स्वामेभि देवसिप, ज कि-
 नि अपत्तिभ्यं परपत्तिभ्यं भजे पाणे विगण येऽप्रायवे

१ दिनके यात्रा पत्र नक़्क़ा पाट करना चाहिये, किन्तु यात्रा पत्रने के पत्रों "राइय" की जगह दरमियान नक़्क़ा खोजना चाहिये।

आण पृथग्यसिआण सकाग्यनिआण सम्मानयति-
 आण पोहिआमवत्तिआण निरयमग्गयनिआण ॥१॥
 सद्धाण मेहाण विहेण धारणाण अणुणेदाण यदुमाणा
 ठामि काउम्मगं ॥ २ ॥

अन्नस्य उमसिणं नामसिणं गामिणं जेणं
 जंभाइणं उदुणं वायनिसग्गेणं भमलीणं पित्तमुच्चा-
 ण ॥ १ ॥ सुहमेहि अगमं चालेहि, सुहमेहि मेयमं
 लेहि, सुहमेहि दिट्ठिमं चालेहि ॥ २ ॥ एवमाएहि
 आगारेहि, अभग्गो अविगाहिअो हृत्त मे काउम्मगो।
 जाय अरिहेताणं भगयंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥३॥
 ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोमिरामि।

इस के पीछे काउम्मग में दाना हाथों को नीचे की ओर
 लम्बे काँके नेत्रों को बन्द काँके तथा होठ और जीभ को छि-
 दिलाये यह चिन्तन करना । काउम्मग पाद के (पीछे दोनों हाथों
 को जोड़ कर रह लेते -

नमोऽर्हसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीशान्तिनाथजी, साताकारक देव ।

मनमोहन स्वामी, अनुग्रह मूर्ति सेव ॥

सुध राम हृलमिया, बन्दू प्रणमूँ नाथ

शुद्ध समकित माँगूँ, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस प्रकार दर्शन का तथा पीछे पञ्चकखाण कर के प्रणाम

आलावे संलावे उचासणे समासणे अंतरभासाण उ
 गिभासाण जे किंचि मज्झ विण्ण परिहीणं, सुद्धमे
 पापरं वा तुक्कमे जाणह, अहं न जाणामि, तस्म मिच्छा
 बुद्धं ॥ ३ ॥

उक्त पाठ को बोल चुकने के पीछे नीचे लिखे हुए वाक्य
 बोल कर आहार पानी के लिये निवेदन करना चाहिये—

इन्द्राकारेण संदिमह भगवन्! भानवार्णारो लाभदीप्तो

चतुर्थपाठ : ।

पूर्वांक मुश्नन्दन के पीछे सामादिक करना चाहिये, सामा
 करने के समय पहिले श्रीगुरुजी के सामने (यदि श्रीगुरुजी उपस्थित
 हों तो स्वाध्यायार्थी के सामने) दाहिना हाथ कर के नीचे लिखे
 हुए नमस्कारवच्य को गान या गुणना चाहिये—

गमो अरिहताणं ॥ १ ॥ गमो मित्राणं ॥ २ ॥
 गमो आगमिणं ॥ ३ ॥ गमो उवडभाषाणं ॥ ४ ॥
 गमो लोप मय्यमाहणं ॥ ५ ॥ गमो पंचणमुकारे ॥ ६ ॥
 मय्यमावणममणं ॥ ७ ॥ मंगलाणं च मय्येभि ॥ ८ ॥
 वरमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

इस के पीछे श्रीगुरुजी के सामने अपना स्वाध्यायार्थी के ग
 दादिभेद का जो अर्थ है वही इस समय नीचे लिखे गान के
 दादिभेद का अर्थ है

१-गुरु, २-मित्र, ३-आगम, ४-उवडभाषा, ५-लोप, ६-पंचणमुकार, ७-मय्यमावण, ८-मय्येभि, ९-वरमं हवइ मंगलं

१-महति महत्तमाशुद्धिः, २ प्रत्यक्षगुणार्थः ३ दृष्टान्तगु
द्धिः, ४-महति पांच आश्रय पात्रे पला । ५०
अनुसोद्वै, ११-मनोगुणि । १२ गचनगुणि । १३ कायगुणि
व्यादर्भे ॥

[illegible]

इच्छामि श्वसामममो' वदितु ज्ञानाणिज्ञान निम
द्विज्ञान मन्थरण वंदामि ॥ १ ॥

इस के पीछे भी यह प्रतीति है कि हमें अपने अतीत से सीखना है।

इच्छाकारेण संदिग्ध भगवन् अन्तर्दृष्ट्याभिर्ज्ञान-
परराष्ट्रं ग्यामेतं । इच्छं । ग्याममि देशमिष । ३ किञ्चि
अपत्तिगं परपत्तिगं भन्ते पाणं विणाय वेत्तावन आलावे
संलावे उद्यामणे समामणे अन्तर भासाग एवमि भासाग
जे किञ्चि मज्झ विणाय परिहाण सुद्धम वा वापर वा
कुम्भे जाणाह, अहं न जाणामि मम्म मिच्छामि दृक्कटं ॥ २॥

३५४ इस प्रकार बोधे

इन्द्राक्षरेण संदिग्धं भवति । सामाधिकं मुदय-
ति पटिते ? ॥३॥

इस के पीछे इन्होंने ११११ दुसरे पापमोहना के
मुद्राचित्र का परिचयेदगा किया चाहिये। उस समय नीचे लिखे
मुद्राचित्र परिचयेदगा कथा बहुत परिचयेदगा के चोन्ने को चोन्ने
मन से गिनना करना चाहिये, इससे सब विषय मुद्राचित्र के म
मोन्नों को करना चाहिये

मृग्य अभिसांशो मरुदं ॥१॥ मरुगयमोहनाय
मिथ्यायमोहनाय ॥ ३ ॥ मिथ्रमोहनाय परिहर्तुं ॥४
कामराग ॥५॥ स्नेहराग ॥६॥ दृष्टिराग परिहर्तुं ॥७॥

इस के पीछे साधनाय का परिचयेदगा क समय नीचे लि
खे नव मोन्नों को मन न मोलना चाहिये -

सुगुरु-सुदेव सुधर्म आदः ॥१॥२॥३॥ कुगुरु कुदेव
कुधर्म परिहर्तुं ॥४॥५॥६॥ ज्ञान-दर्शन चाग्रि आदः
॥७॥८॥९॥

इस के पीछे साधन ज्ञान का परिचयेदगा करना चाहिये, नव
मोन्ने लिखे हुए नव मोन्नों को बालना चाहिये—

ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्रविगधना
परिहर्तुं ॥१॥२॥३॥

मनागुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति आदः ॥४॥५॥६॥

मनोदण्ड वचनदण्ड काय दण्ड परिहर्तुं ॥७॥८॥९॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए अगपटिलेदगा के चोन्ने को चोन्ने चाहिये—

कूटलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, ये तीनों

मामके परिहर्ते । षाद्विगारय, रम्यगारय, मानागारय,
ये तीनों मुझे परिहर्ते । मायागाल्य, निपाणगाल्य, मि-
च्छादमणगाल्य, ये तीनों हृदये परिहर्ते ।

क्रोध, लोभ, ये दोनों दाहिने गम्भे परिहर्ते ।

माया, मान, ये दोनों पापें स्वम्भे परिहर्ते ।

हान्य रति अरति ये तीनों पापें हाथे परिहर्ते ।

भय शोक दुर्गन्धा ये तीनों दाहिने हाथे परिहर्ते ।

पृथ्वीकाय, अकाय, तेजकाय, ये तीनों पापें पादे
परिहर्ते । पाउकाय, घनम्पनिकाय, घसकाय, ये तीनों
दाहिने पादे परिहर्ते ।

ऊपर पर्वत दृष्टे निम्न से महत्पण्डितको पदिलेन्वा मर चमत्ता
ममत्त देका-

इच्छाकारेण मंदिसह भगवन्! सामागिक मंदिसा-
हं?, इच्छं ।

इस पदार्थों परकर तित ममत्तमन्त्र देका —

इच्छाकारेण मंदिसह भगवन्! सामागिक आडे, इच्छं ॥
एक नरकाय गुणना । पीले

इच्छाकारेण मंदिसह भगवन्! पन्नायहमी सामा-
गिकदेहक उचरायो जी । तहत्त ।

इस के बाद नीचे लिखे हुए मानसिक मृत वा तीनवा उवा-
च्य वचना चाहिये—

इस के पीछे “उन्मत्त” कहकर दुमरा समझना ।
 मुदपत्ति की पड़िलेइया कानों चाहिये, उम समय नीचे लिखे
 मुदपत्ति पड़िलेइया तथा सङ्ग पड़िलेइया के बोलों का गिना
 मन में चिन्तन करना चाहिये, प्रथम नीचे लिखे मुदपत्ति के
 बोलों को कहना चाहिये —

मृत्र अर्थ सौचो मदहृं ॥६॥ मय्यन्त्रमोहनीया॥
 मिथ्यात्वमोहनीय ॥ ३ ॥ मिथ्रमोहनीय परिहर्म् ।
 कामराग ॥५॥ स्नेहराग ॥६॥ दृष्टिराग परिहर्म् ॥७॥

इस के पीछे बायें हाथ की पड़िलेइया के समय नीचे ।
 हुए नव बोलों को मन में बोलना चाहिये —

सुगुरु-सुदेव सुधर्म भादम् ॥१२३॥ कुगुरु व
 कुधर्म परिहर्म् ॥४५६॥ ज्ञान-दर्शन चारित्र्य अ
 ॥७८९॥

इस के पीछे दाहिने हाथ की पड़िलेइया कानों चाहिये,
 नीचे लिखे हुए नव बोलों को बोलना चाहिये—

ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्र्यविरा
 परिहर्म् ॥१२३॥

मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति आदम् ॥४५६॥

मनोदण्ड वचनदण्ड काय दण्ड परिहर्म् ॥७८९॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए अंग पड़िलेइया के बोलों को बोलना चाहिये

कृष्णलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, ये

सुहृमेहिं दिद्विमंचालेहिं एवमाङ्गहिं आगारेहिं अभग्गो
 अयिराहिओ हृज्ज मे काउत्तग्गो जाय अरिहंताणे भगवे-
 ताणे, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं टाण्णं मोग्गणं
 छाणेणो अप्पाणं वेमिरामि

यदा एव चायं 'नयका' 'अभयराजक' 'लोगम्भ' का काउत्तग्ग
 काके 'समो अरिहंताणं' यदाय काउत्तग्ग का 'पान' चाहिये
 पीछे अरहत्त्व मे नाथे निगरे एण 'लोगम्भ' इत्यादि १४ वी का ना
 चाहिये—

लोगम्भ उज्जाअगरे, भम्मनिन्धयेरे जितो । अरिहंते
 किन्तइस्सं, यउवांसं पि वेधलो ॥१॥ उसभम्मजिस्सं च वदे
 संभयमभिणंदण च सुमउ च । पउमण्यह सुपांसं,
 जिगां च वंदणहं वदे ॥२॥ सुविहिं च पुण्णदंत, रीअल
 मिउज्जंस पासुपुज्जं च । विमलमणमं च जिगां, भम्मं संमि
 च वंदामि ॥३॥ कुंघुं अरं च महिं, वदे सुणिसुव्ययं नमि-
 जिणं च । वदामि रिद्धिंमि, पामं सह पट्टमाणं च ॥४॥
 एवं मण अमिधुआ, विहुयरगमना परीणजरमणा ।
 यउवांसं पि जिगवरा, तिन्धपरा मे पमोयंतु ॥५॥ किन्तिप
 पदिय महिया, जे न लोगम्भ उन्नमा निद्रा । आग्ग-वा-
 हिलाभं समारियामुत्तमं दितु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलयरा
 आहंसेसु अहियं पयासयरा । सागरघरंभारा, मिद्रा

सिद्धिं मय दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पश्चात् एक एक समासमग्न देकर नीचे लिखे हुए पाठों को बोलना चाहिये—

१- इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! वेसणे संदिसा-
उं? इच्छं ।

२- इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! वेसणे ठाउं?
इच्छं ।

३- इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सज्जाय संदि-
माउं? इच्छं ।

४- इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सज्जाय कर्हं ।

जिसे पौनर्वायतमग्न देकर भाटपाठनाकार मन्त्र को बोलें।

॥ इति प्रभात सामाधिकविधिः संपूर्णः ॥

मन विरह प्रसन्न निमित्त को होता है जिसमें ज्ञान ध्यान काना।

इसके पश्चात् सामाधिक को पढ़ना चाहिये उसकी विनियम है—

१६ मग्नमग्न देकर मग्न को पढ़िये काना चाहिये, जिसे

दृष्टा मग्नमग्न देकर नीचे लिखे पाठ को बोलें —

इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामाधिक पाठें, पश्चात्

१६ के पाठ जिसे मग्नमग्न देकर नीचे लिखे पाठ को बोलें—

इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामाधिक पाठें, पश्चात्
मग्नमग्न ।

देकर नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छासारेण मंदिमह भगवन्! चैत्यवन्दन करूँ,
इच्छं ।

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए मंत्रों को क्रमशः बोलें—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेतुंजि उज्जं-
नि पहु नेमिजिण जयउ धार म्मउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअच्छय मुणिसुव्वय, मुहुरि पाम दुह-दुरिय-खंडण।
अवरविदेहिं जे तित्थपरा, चिहंदिमि विदिसि जं केवि।
तीयाण्णागय-संपड य वंदं जिण सुव्वेवि ॥ २ ॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूर्माहिं पट्टम-संघयणि, उक्कोसय
सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लव्वमड । नव-कोडीहिं
केवल्लण, कोडी- सहस्स नव माहु-संपड । संपड जिणवर
धासमुणि, विहुंकोडीहिं वरनाण । ममणह कोडीसहस्स
दुअ, धुणिउज्जह निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवड सहस्सा,
लक्ख्वा न्णप्पन्न अट्ठ कोटी ओ । चउमयल्लायामीया, तिल्लिके
चेइण वंदे ॥ २ ॥ वंदे नवकोटिमयं, पणवीसंकोटी लक्ख
तं वग्गा । अट्ठावीस महम्मसा, चउमय अट्ठामिया प-
ट्टिमा ॥ ३ ॥

जं किंचि नामातिव्यं, मग्गे पायान्ति मागुसे लोण ।
जाइं जिणपिंदाइं, ताइं मय्याइं वदामि ॥ ४ ॥

नमोऽधुणं अरिहंताणं भगवंताणं आङ्गराणं त्रिप-
 यराणं संपंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिमसीद्दाणं पुरि-
 रिसवरपुंडरीकाणं पुरिसवरगोपहृत्पाणं लोमुत्तमाणं लोग-
 नाद्दाणं लोगहिक्काणं लोगपईवाणं लोगवज्जोअमराणं
 अभयदयाणं अवरबुदयाणं मग्गदयाणं सरग्गदयाणं यो-
 हिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्म-
 सारहीणं धम्मवरचाउरंतचव्वदीणं अप्पडिहयवर-
 णदंसण-घराणं विअट्ठ उमाग जिणाणं जावयाणं निद्धाणं
 तारयाणं बुद्धाणं योहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं
 सव्वदरिमाणं मिवमयलमरुअमणं नमस्सव्वमज्जायाहम
 पुणरावित्तिसिद्धिगइनामपेवे ठाणं संपत्ताणे नमो जिणा-
 णं जियभयाणं ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्मं-
 ति णागण काले । संपड अ दट्ठमाणा, मज्जे निविहेण
 चन्दामि ॥ १ ॥

(जावन्ति चेइआहं)

जावन्ति चेइआहं, उट्ठे अ अहे अ निरियत्ताए अ ।
 मज्जाहं ताहं धंदे, इह मत्ता नत्थ मत्ताहं ॥१॥

(जावन्त केवि साह)

जावन्त केवि साह, भरहेइवमयाविदेहे अ । स-
 ज्जेमि तेमि पणआं, निविहेण तिइहविरयाणं ॥१॥

(परमेष्ठि नमस्कार)

देकर नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन करूँ,
इच्छं ।

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए सूत्रों को क्रमशः बोले—

जयउसामिय जयउसामिय, रिसह सेतुंजि उज्ज-
नि पहु नेमिजिण जयउ धार सुचउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअच्छव मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुह-दुरिय-खंडण।
अवरविदेहिं जे तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि।
तीयाण्णागय-संपइ य वंदु जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं पढम-संघयणि, उक्कोसय
सत्तरिसय जिणवराण विहरन लब्भइ । नय-कोडीहिं
केवलण, कोडी- सहस्म नय साहु-संपइ । संपइ जिणवर
वीसमुणि, विहुंकोडीहिं वरणाण । समणह कोडीसहस्म
दुअ, धुणिउजइ निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवउ सहस्सा,
लक्खा अप्पन्न अट्ठ कोडीअं ॥ चउमयआयासीया, तिल्लुक्के
चेइण वदे ॥ २ ॥ वंदे नयकोडिसयं, पणवीसं कोडी लक्ख
तेयना । अट्ठावीस महत्ता, चउमय अट्ठासिया प-
ट्टिमा ॥ ३ ॥

जं किंनि नामतिह्यं, मग्गे पायालि माणुसे लीण।
जाइं जिणयिथाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ४ ॥

[illegible]

(जायसि चंद्रघाट)

જાણેલિ એકજાણે, ઉઠે જ અઠે જ નિશિચલોય થય।
મળ્યાઠે સાઠે ધેરે, દુઃખ મનના મન્ય મંનાઈ ॥૨॥

(जायंम पैयि माइ)

जायन्त येति साह, भरतेर्यगमसाविदेहे अ । स-
व्येति तेति पण्ठां, निदिष्टेण निदंष्टविरम्याम् ॥१॥

(परमैष्टि नमस्कार)

इच्छं ।

कुसुमिण-दुसुमिण-राई- पायच्छिन्नविमोहणत्वं
करेमि काउसग्गं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिये हुए "सज्ज" उममिणं" इत्यादि
पाठ को ध्यानना चाहिये—

असन्ध उममिणं भीममिणं खामिणं ह्रीणं
जंभाइणं उइ एणं धायविमग्गेणं भमलिणं पित्तमु-
च्छाणं । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि सेत्तमंचाले-
हि सुहमेहि दिट्ठि वंचालेहि एवमाइएहि आगारेहि अ-
भग्गो अरिणदिक्को सुज्ज मे काउसग्गो जाय अरिहंताणं
भमवंचाणं न सुपारेणं न पारेमि साय कायं ठाणेणं मो-
णेणं भाणेणं अप्पाणं वामिरामि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवका मन्त्र वा चिन्तन करते हुए पाउ
+सग्ग का ना चाहिये, इसके पश्चात् "सग्गो अरिहंताणं" इस वाक्य
को बह बार काउसग्ग को एक बार नीचे लिये हुए "सोगसन"
एकदि पाठको ध्यानना चाहिये—

सोगसन उउज्जो अगरे, भम्मनिहपपरे जिणो । अरि-
हंते कित्तइसं, चउथांसं पि केयली ॥१॥ उमभमजिणं
च वंदे, संभइमभिगदणं च सुमई च । पउमप्पहं सुवासं,
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंसं, स्ती-
अल सिउजंस वासुपुजंस च । विमलमणंसं च जिणं, ध-

नमोऽहंमिन्द्राचार्योपागतागमर्गमाधुभ्यः ।

(उपमर्गादभ्यगत्)

उपमर्गादहं तामं, तामं वंदामि कम्मवगमुहं । वि-
सदरविमनिद्वामं, मंगददद्वामगमातामं ॥१॥ विमदर
फुलिगमंनं, कंटे पारेड जां मया मणुभां । नम्मग्गदो-
गमारी-दुद्वजरा जंति उपमामं ॥२॥ निद्वउ दूरे मंनो,
तुल्लम पणामोवि पट्टकलो होइ । नरतिगिणमुविजाया,
पावंति न दुक्खदोहगं ॥३॥ नृद मम्मन्ने लद्वे, विना-
मणि कणपायवच्चमहिण । पावंति अविग्गेणं, जाया अ-
यरामरं ठाणं ॥४॥ इय मंशुआं महायम!, भत्तिज्जम-
निव्वभरेण हियण्ण । ता देव! दिज्ज वोहिं, भवे भवे
पास जिणनन्द ॥५॥

(जय वीथराय)

जय वीथराय ! जगगुरु! होउ ममं तुद पभावओ
भववं। भवनिध्वेओ मग्गाणुमारिया इद्वकलसिद्धा ॥१॥
लोगविरुद्वचाओ, गुरुजणपूजा परत्थकरणं च । सुद-
गुरुजोगो नच्चयणसेवणा आभवमर्गडा ॥२॥

इस प्रकार चैत्यवन्दन करने के पीछे स्वनाममण देकर नीचे
लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण-दुसु-
मिण-राई-पायच्छित्त-विसोहगत्यं काउस्सग्ग करूँ ?

इच्छं ।

कुसुमिण-दुसुमिण-राई- पावच्छित्तविमोहणत्थं
करेमि काउरसगं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "मन्त्रः कुर्यात्" इत्यादि
पाठ को ध्यान से चाहिये—

असुमिणं उदसमिणं नीममिणं खामिणं लीमिणं
जेमिणं उद-एणं वापनिमिणं भममिणं विममि-
णं । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि सेलमंचाले-
हि सुहमेहि दिट्ठि वंचालेहि एवमाहं हि आगारेहि अ-
भगं अविहं हि को हुल्ल मे काउरसगं जाय अविहं नाणं
भगवंताणं नमुपारेणं न पारेमि ताव कागं आणेणं मा-
णेणं आणेणं अप्पणं वामिगमि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवकार मन्त्र का चिन्तन करने हुए काउ-
रसग करना चाहिये, इसके पश्चात् "इमं वापनिमिणं" इत्यादि
को यह का काउरसग को पाठ कर नीचे लिखे हुए "लोगस्स"
इत्यादि पाठको ध्यान से चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मनिद्वयरे जिणे । अरि-
हंसे कित्तहरसं, चउर्यात्तेपि वेयली ॥१॥ उदभमजिअं
च वंदे, संभरमभिगंदणं च सुमडं च । पउमप्यहं सुवासं,
जिणे च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंमं, सी-
अल्ल सिउजं स पासुपुजं च । विमलमणं च जिणं, ध-

ममोऽर्थिना दानादिना दानादिवैभवात् ।

(1770/1771)

[illegible]

(जग योषागण)

जय धीषण्य ! जगद्गुरु! होउ मम तुह वनायभो
 भयवं। भयनिश्रेयो मग्गाणुमाग्गिण इद्वकलमिद्धी ॥१॥
 लोगविरुद्धाओ, गुम्भजणपुआपान्वकरणं य । सुद-
 गुम्भओगो नव्यणमेवणा आभवमस्यंटा ॥२॥

इस प्रकार चैत्यचन्दन करने के पीछे गमामन्त्र देकर नीचे लिखे हुए पाठ को ध्यान में चाहिये—

इच्छाकारेण मंदिमह भगवन् ! कुसुमिण-दुसु-
मिण-राई-पायच्छित्त-विमोहगत्यं काउस्मग्ग फरुँ ?

इच्छं ।

कुसुमिण-सुसुमिण-राई- पावनिष्ठसचिसोहणत्वं
करेमि काउससगं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "ससगं उममि रो" इत्यादि
पाठ को धोतना चाहिये --

अमन्य उममिणं नीममिणं स्वामिणं ह्रीणं
जंभाहणं उद्दणं चायनिष्ठसगं भममिण विममु-
च्छाण । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि गेलमंचाल-
हि सुहमेहि दिट्ठि वंचालेहि एवमाहंति आगारेहि अ-
भगं अविहादिओ हुज्ज मे काउससगं जाय अगिहनाणं
भगवनाणं न सुधारंणं न पारेमि नाय काये ठाणेणे सो-
णेणं भाणेणं अप्पाणं धोमिरामि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवका मन्त्र ३। विनयन कान्त हुए १। २
ससग कान्त चाहिये, इसके प ३। १ ' सुममिणं न ' इस ३। १
को यह का काउससग को पाव दा नीचे लिखे हुए 'लोगमम'
इत्यादि पाठको धोतना चाहिये-

लोगमम उज्जो मगरे, भम्मनिन्धये जिणे । अरि-
हंसे कित्तइसं, चउथात्तपि केवला ॥१॥ उसभमजिअं
च वेदे, संभयमभिगेदणं च सुमई च । एउमप्पहं सुवासं,
जिणे च चंदप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंसं, सी-
अल सिज्जंस पासुपुज्जं च । विमलमणं च जिणे, ध-

‘संज्वरेस्तेषु राह्य-दुषितेषु-दुष्कृतास्तिषु-दुषिद्विषु,
इच्छं तस्स मिच्छा मि दुष्कटं ॥ १ ॥

इत फे पीछे दूरे लिजा हुआ “अमोत्यु नं” का पाठ बोलना चाहिये। तदनन्तर खड़े होकर नीचे लिजा हुआ “करेमि भन्ते” का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भन्ते! सामाहणं सायज्जं जोगं दयकखामि
जायं नियमं पज्जुवासामि दुविहं ति विहेणं मणे गं घापा-
ए काएणं न करेमि न कारयेमि तस्स भन्ते! परिष्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि ॥ १ ॥

इत के पद्यतु नीचे लिजा हुआ “इच्छामि ठ मि” का पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काइस्संगं जो मे राइओ अइआरो
काओ काइओ पाइओ माणसिओ उरसुत्तो उम्मगो
अरप्पो अकरणिओ दुज्जमाओ दुविनिनिओ अणापा-
रो अणिच्छिय्यो असायगपाइगो माणे तह दंसणे च-
रित्तापरित्ते सुए सामाहण निणहं सुत्तोणं चउण्हं कखा-
याणं वंददहमणुज्जयाणं निणहं सुवज्जयाणं चउण्हं सि-
क्खत्तापयाणं पारसविहस्स सायगधज्जस्स जं खंदिपे जं
विराहिवं तस्स मिच्छा मि दुष्कटं ॥ १ ॥

इत के पद्यतु नीचे लिजा हुआ “एतम उरणी” का पाठ बोलना चाहिये—

ममं मेनिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभं अं च महिं, यै मुनि
 सुव्ययं नमिजिणं च । वंदामि गिद्वेनेमिं, वामं तद यद
 माणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अमिभुआ, विहवागमन्
 पहीणजग्मग्गा । चउर्यामं पि जिणयरा, मिअयरा मे प
 मीयंतु ॥ ५ ॥ किनिअ-वेदिय-महिआ, जे एल्लोगम्म उम
 मा मिद्धा । आरुगयोहिल्लान ममाहिअग्मुत्तमं दि
 ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आट्ठेसु अट्ठिं पयासप
 रा । सागरवरगंभारा, मिद्धा मिद्धि मम दिमंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे पट्टिकमण के छानने का विधि का कर्त्तव्य है कि—
 ये, उस की विधि यह है कि—

१- प्रथम खमामण देकर “आरुगयोहिल्लान मिअग्मुत्तमं” कहकर वन्दन करना चाहिये ।

२- दूसरा खमामण देकर “आरुगयोहिल्लान मिअग्मुत्तमं” कहकर वन्दन करना चाहिये ।

३- तीसरा खमामण देकर “जह्णन्नुगप्रधान वर्त्तमान भद्रं श्रीबुद्धजी” का नाम लेकर वन्दन करना चाहिये ।

४- चौथा खमामण देकर सर्वमावुओ को वन्दन करना चाहिये ।

इस प्रकार चार खमामण देकर पट्टिकमण को ठाकर गोद
 हन- आसन से बैठकर मस्तक को नमाकर दोनों हाथों से मुंहपत्ती को
 मुखपर देकर नीचे लिखे हुए “ मय्यस्सवि ” इत्यादि वाक्य को बोलना चाहिये—

५ 'सुखं संसृजि' राइय-दुचिनिप-दुजभासिप दुचिद्विप,
इच्छं तस्स मिच्छा मि दुष्कटं ॥ १ ॥

इस के पीछे दूरे लिखा हुआ "सोन्धु णं" पाठ कोलना पा-
दिये। तदनन्तर खड़े होकर नीचे लिखा हुआ "वंमि भने" वा पठ
कोलना चाहिये—

करेमि भने! सामाइयं सायज्जं जोगं पचक्खामि
जाय निगमं पज्जुवास्सामि दुविहं निविहेणं मणेगं घापा-
ए काणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते! परिक्कमामि
निदामि गरिहामि अण्णाणं वामिरामि ॥ १ ॥

इसके पधत् नीचे लिखा हुआ "इच्छामि ठ मि व" पाठ कोलना
चाहिये—

इच्छामि ठामि काइस्सगं जो मे राइओ अइआरां
कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुओ उम्मगो
अक्कओ अकरणिओ दुजभाओ दुविचिनिचिओ अणापा-
रो अणिच्छियव्यो असायगपाउगो नाणे तट्ठ दसणे च-
रित्ताचरित्ते सुए सामाइए निपटं गुत्ताणं चउण्हं कस्ता-
पाणं पंदहमगुज्जदाणं तिपटं गुणव्वपाणं चउण्हं सि-
क्खायपाणं पारसविहस्स सायगभरमस्स ज खंदिपं ज
विराहिपं तस्स मिच्छा मि दुष्कटं ॥ १ ॥

इसके पधत् नीचे लिखा हुआ 'तस्स उस्सो' वा पठ कोलना
चाहिये—

दुष्खरधरदीवहे, धापइसंदे अ जंबूदीये अ । भ-
 रहेरधयबिदेहे, धम्माइगरे नमंस्सामि ॥१॥ तमतिमिर-
 पटलविद्धमणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स । सोमाधरस्स
 धरे, पण्कोटियमोहजालस्स ॥२॥ अ.ईजरामरणसोगप-
 णासणस्स, कल्लाणपुण्खलधिसालसुहायहस्स । को दे-
 वदाणवनरिंदगणधिगस्स, धम्मस्स भारमुवलब्भ करे
 पमारं ॥३॥ सिद्धे भो पयओ खमो जिगमणं नंदी स-
 पा संजमे, देवंनागसुवसकिअरगणसब्भूअभायधिण् ।
 लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेत्तुअमथासुरं । धम्मो
 वड्डुअ सासओ विजयओ धम्मनुत्तरं वड्डुअ ॥४॥ सुअ-
 स्स भगवओ करेमि काउत्सगं ।

इस के पीछे पूर्व लिखे हुए “वंदयः विमारे” इत्यादि पाठ
 को तथा “अचारः उमसिरयं” इत्यादि पूर्ण पाठ को बोल कर भाउ
 नवकारमन्त्र का काउत्सग करना चाहिये ।

काउत्सग में आहुता चार प्रहर को बिताना चाहिये, जो
 घाने आसोपणाविधि में लिखी जावेगी, इस के पीछे नीचे लिखें हुए
 “सिद्धाणं सुद्धाणं पारमयाणं परंपरमयाणं । लोअ-
 ग्गामुयगयाणं, नमो सपासअसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण
 वि देवो, अं देवा पंजली नमंसंति । नं देवदेवमहिअं,
 सिरसा धरे भदावीरं ॥ २ ॥ इको विअनुफारो, जिणवर

सिद्धाणं सुद्धाणं पारमयाणं परंपरमयाणं । लोअ-
 ग्गामुयगयाणं, नमो सपासअसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण
 वि देवो, अं देवा पंजली नमंसंति । नं देवदेवमहिअं,
 सिरसा धरे भदावीरं ॥ २ ॥ इको विअनुफारो, जिणवर

तस्मै उत्तरीकरणेणं पायच्छिद्रसकरणेणं विसोदीकर-
णेणं विसद्वीकरणेणं पायाणं कम्पारणं त्रिग्यापणद्वार-
ठामि काउत्सग ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “मन्त्रत्थ ऊत्सिरयं” का इ-
पाठ बोलना चाहिये ।

इसके पीछे चरित्युद्धि के निमित्त चार नवकारमन्त्र प्रत्य-
पूर्व लिखे हुए एक “लोगस्” का काउत्सग करके उनको नार क-
फिर दशंयुद्धि के लिये पकट रूपसे पूर्व लिखे हुए “लोगस्” इत्या-
दि पाठ को बोलना चाहिये ।

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ पाठ को बोलना चाहिये—

सन्वडोए अरिहन्तचेइआणं करेमि काउत्सगं ॥१॥
बंदगवत्तिआए पूअणवत्तिआए सङ्गारवत्तिआए सम्मा-
णवत्तिआए घोहिलाभवत्तिआए निरुवसगवत्तिआए
सद्दाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए बहुमाणी-
ए ठामि काउत्सगं ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “मन्त्रत्थ ऊत्सिरयं” इत्यादि
पाठ बोलना चाहिये ।

तदनन्तर चार नवकारमन्त्र का अथवा पूर्व लिखा हुआ एक
“लोगस्” इत्यादि पाठ का काउत्सग करके, पारके पीछे ज्ञानाचार्य
के निमित्त नीचे लिखा हुआ पाठ बोलना चाहिये—

घसहस्र घट्टमाणसम् । संनारमाणरात्रौ, तारेण नरं व
 नारि वा ॥३॥ उज्जिनसेटसिहरे, दिक्का, नार्ण निसी-
 हिआ जस्स । तं धम्मवक्कवट्ठि, अरिट्ठनेमि नमंसामि ॥
 ४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो ग वंदिथा ज्जिणवरा चट्ठवीसं ।
 परमट्ठनिट्ठिअट्ठ, सिद्धा सिद्धि मूम दिमंतु ॥ ५ ॥

१३३ : फिर तीसरे अक्षरपक्ष की मुहपत्ती पड़िलेइया, कानी चाहिये।
 बायें हाथ में मुहपत्ती को लेकर उन में वंसे ज्ञान से दाहिने कान तक
 लड़ाट को घूँककर मुहपत्ती को आगे रखनेना चाहिये और उस के
 मध्यभाग में गुरुवरण की कल्पना करनेना चाहिये ॥

१३४ : सुगुम्फुन्दना का पाठ यह है—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिअं जावणिज्जाणं निसी-
 हिआए अणुजाणह मे मिअगहं । निसीहि । अट्ठोकाणं
 कापसंकासं खमणिज्जां मे कल्लामो अप्पविअताणं
 पट्टसुभेण मे राई वड्ढकंता, जत्ता मे जावणिअं च मे,
 खामेमि खमासमणो । राइयं वड्ढकं, आइत्तियाणं
 पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए ति
 तीसन्नपराए जं किंचि मिच्छाए मणहुक्कडाए वयहुक्कडाए
 कापहुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिया-
 ए सव्वमिच्छोवपाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणा-
 ए जो मे अइअरो कओ तस्म खमासमणो । पडिक्कम-
 मि । निदामि । गरिहामि । अप्पाणं । वोसिरामि ॥ १॥

— यह सुगुणवन्त का यह सर्वत्र उत्कृष्टि में हो कर रहना चाहिये, तथा दूसरी जगत् करने के मन्त्र “ क इन्द्रियम् ” यह एक यह नहीं करना चाहिये, मया इस के वंछे नीचे लिखे हुए पाठ को ध्यान चाहिये—

इच्छामारिण संदिग्ध भगवन् राक्ष्यं आलोडं
इच्छं, आलोडमि ओ मे राडो इच्छारो० ॥

इच्छाः वंछा, संदिग्धं, संदिग्धं, इच्छाः इच्छाः इच्छाः
सर्वत्र पाठ हो वाञ्छा, चाहिये ।

इस के पश्चात् सर्वत्र उत्कृष्टि में हो कर रहना चाहिये
लिखे हुए पाठ से करे—

आहुता नार महार रात्रि में मैंने जो विराध्या होय,
सातलाय पृथिवीकाय, सातलाय अक्षय, सातलाय
सेवकाय, सातलाय यादकाय, दत्ता लाय मन्येक वन-
स्रनिकाय, चौदह लाय साधारणवन्तरनिकाय, दोलाय
वेष्ट्रिकाय, दोलाय मेष्ट्रिकाय, दोलाय चौष्ट्रिकाय, चार
लाय देवता, चार लाय नारका, चारलाय निर्द्वारमेष्ट्रि-
य, चौदह लाय मनुष्य, एवं नारकाय के चौदह लाय
जीवपानि में मेरे ऊपर मेरे काई ऊपर कणों होय, हण-
कणों होय, हणकणों मन्ये भन्यो ऊपरों होय, से कण्ये
मने वनने कायायें वंछा तम मिच्छामि इच्छं ॥

“ वह मुगुरगन्दना का पाठ सर्वत्र उत्तमविधि से दो बार कहना चाहिये, तथा दूतरी बार कहने के समय “ वागस्तिदाय” वह एक बार नहीं कहना चाहिये, तथा इस के पंखे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छासारेण सेदिरुह भगदन् रादृच्छं आलोके?
इच्छं, आलोमि जो मे राइओ अदृशारो० ॥

इत्यादि बोलकर पीछे पूर्व लिखे हुए “ इच्छानिदामि” इत्यादि समस्त पाठ को बोलना चाहिये ।

इस के पश्चात् वागस्तिदाय की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करे—

आहुणा चार ग्रह राशि में मैंने जो बिराध्या होय,
सानलाख पृथिवीकाय, सानलाख अपराय, सानलाख
ते उकाय, सानलाख पाउकाय, दश लाख प्रत्येक पर्व-
रातिकाय, चौदह लाख साधारणवनरातिकाय, दोलाख
वेइन्द्रिय, दोलाख तेइन्द्रिय, दोलाख चौरिन्द्रिय, चार
लाख देवता, चारलाख नारकी, चारलाख निर्दशवधेन्द्रि-
य, चौदह लाख मनुष्य, एवं चारगति के चौरासी लाख
जीवायानि में मेरे जीवने जे कोई जीव हण्यो होय, हण्यो
होय, हण्यो प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सख्येहुं
मने पचने कायायें करी तरस बिच्छामि इच्छं ॥

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की भालोचना नीचे हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन पाप
क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कण्डह अभ्यास्य
शुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्या
शाल्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवगात्र्य
सेवनां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सब्ये हूँ मन बच
पापें करी तस्म मिच्छा मि दुष्कण्ड ।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पंथा ठवणी कबल
कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय,
कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देश
स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप
न्दादि कीधूँ होय, कराव्यु होय, करनां अनुमोक्ष हो
सर्व मने बचने काय, ये करके रात्रि अतिचार आ
ण कर के पडिष्कमणा में आलोउं तस्म मिच्छा मि दुष्क

इस भालोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ "सत्यम्न
इय" पाठ भोजना चाहिये ।

इस के पीछे संझरा का प्रमाणन कर आसन पर बैठ
दाहिने गोड़े को ऊँचा और बायें गोड़े को नीचा कर कर
"मगसु! गृत्र भणै" इस के पीछे " इच्छ" बड़का ता
नवकार मन्त्र को तग सोन बार पूर्व लिखे हुए " कोमि

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैयुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान वैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्व शल्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवरात्र्या होय सेवनां प्रत्ये भला जाय्या होय, ते सव्ये ह्ये मन वचन का पापें करी तस्स मिच्छा मि दुक्खं ।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कयलीख कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनं कर्मोदानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परनिन्दादि कीछू होय, कराव्यु होय, करतं अनुमोद्यु होय मोसर्व मने वचने काय, ये करके रात्रि अनिचार आलोचन कर के पडिक्खमणा में आलोचें तस्स मिच्छा मि दुक्खं ।

इस आलोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ “सव्यम्स मि ताव” पाठ होयना चाहिये ।

इस के पीछे संडामा का प्रवर्जन पर आसन पर बैठ कर दाहिने गोंदे को ऊंचा श्री करिये गोंदे को नीचा कर कह कि — “मगान! गृध मरू” इस के पीछे “इच्छ” पढ़कर तीन बार मन्त्र को तीन बार पूर्व लिखे हुए “ करमि मेने”

इत्यादि पाठ को बड़ पर " इच्छामि पटिक्कमिउं ओ मे राद्धो" इत्यादि " इच्छामि टमि" इत्यादि सम्पूर्ण पाठ को बोल कर नीचे सिङ्गादुमा वनिःसु सुत्र को बोलना चाहिये, तथा इस सुत्र को ४२ वीं गाथा तक बैठ कर ही बड़ना चाहिये, तथा होयपाठ गाथामें को लंदे हो कर बड़ना चाहिये—

यंदिनु सव्यसिद्धे, षम्मापरिण अ सव्यसाहु अ ।
 इच्छामि पटिक्कमिउं, सावगयम्माइआरस्स ॥१॥
 ओ मे वयाइआरो, नाये तह दंसये परिस्से अ । सुहु-
 मो अ पापरो या, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २॥ दुवि-
 हे परिग्गहंमि, सायमे दहुविहे अ आरंभे । कारावणे
 अ करणे, पटिक्कमे राइयं सव्यं ॥३॥ उं पट्टमिदिण्हि,
 नडहि वत्साण्हि अण्यसत्तेहि । रामेण च दोसेण च, तं
 निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निगमये, ठाणे
 पंरुमणे अणामोमे । अमिआंगे अ निआंगे, पटिक्कमे
 राइयं सव्यं ॥ ५ ॥ संज्जंत्तपिगिच्छा, पंरंस तह
 संगयो कुलिगीहु । रुम्मत्तरसइआरे, पटिक्कमे राइयं
 सव्यं ॥ ६ ॥ द्दप्पायरुमारंभे, पयणे अपयायणे अजे
 दाहा । अत्तट्ठा च परट्ठा, उभयट्ठा वेय तं निंदे ॥ ७ ॥
 पंचण्हमणुज्जपाणं, दणव्यपाणं च तिरहमइआरे ।
 सिक्खपाणं च चउरहं, पटिक्कमे राइयं सव्यं ॥ ८ ॥ परमे
 अणुव्यपंमि, धूसुगपायाइवापविहंओ । आपरिअम-

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्यास्यानवैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्व शल्प, ये अठारह पापस्थानक से व्याप्त होय, सेवरात्र्या होय सेवनां प्रत्ये भला जाय्या होय, ते सब्ये हूँ मन धवन कर पायें करो तस्स मिच्छा मि दुक्खं ।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पांथी टवणी कयलीन कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनो कर्मोदानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परिनिन्दादि कीधूँ होय, कराव्यु होय, करतां अनुमोक्षु होय मो सर्व मने धवने काय. ये करके रात्रि अतिचार आलोचन कर के पडिक्खमणा में आलोचं तस्स मिच्छा मि दुक्खं ।

इस आलोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ “सब्यस्स मि त इय” पाठ बोलना चाहिये ।

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर आसन पर बैठ कर दाहिने गोड़े को ऊँचा और बायें गोड़े को नीचा कर कहे कि—
“मगगन्! सुउ भणूँ” इस के पीछे “ इच्छु” कहकर तीन व नवकार मन्त्र की तम तीन बार पूर्व लिखे हुए “ करेमि मंते

त्पादि पाठ को कह कर “ इच्छामि पट्टिमिउं जो मे राखी”
 त्पादि “ इच्छामि ठामि” इत्यादि सम्पूर्ण पाठ को बोल कर नीचे
 सज्जाहुआ वरिष्ठ सुत्र को बोलना चाहिये, तथा इस सुत्र को ४२
 गी गाया तक बैठ कर ही करना चाहिये, तथा छेप पाठ गायामों
 को खदे हो कर करना चाहिये—

यंदिनु सव्यसिद्धे, धम्मापरिण अ सव्यसाहू अ ।
 इच्छामि पट्टिमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥
 जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे परिसे अ । सुहु-
 मो अ पापरो या, तं निदे तं य गरिहामि ॥ २॥ बुवि-
 हे परिगहंमि, सायत्ते दहुविहे अ आरंभे । कारावणे
 अ करणे, पट्टिमि राइयं सव्यं ॥३॥ जं मद्धमिदिपहिं,
 यउहिं कसाएहिं अणसत्थेहिं । रागेण य दांसेण य, तं
 निदे तं य गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निगमणे, ठाणे
 धकमणे अणामोणे । अमिआंमे अ निआंमे, पट्टिमि
 राइयं सव्यं ॥ ५ ॥ सेवकंखविनिपणा, पसंस्स तह
 संथयो कुलिगीसु । सुम्मत्तरस्सइआरे, पट्टिमि राइयं
 सव्यं ॥ ६ ॥ द्दयापसमारंभे, पपणे अ पयायणे अ जे
 दांस्स । अत्ताहा य परहा, उअयहा चेय तं निदे ॥ ७ ॥
 पंचण्हमसुण्दपाणं, पुण्यपाणं य तियहमइआरे ।
 सिक्खणाणं य यउरहं, पट्टिमि राइयं सव्यं ॥ ८ ॥ पदमे
 अणुप्यपंमि, भूलगवायाइयावपरिहंमो । आपरिअम-

एतत्तये, इत्थं पमायन्संगेण ॥ ६ ॥ यह्यं पंचविच्छेप,
 अङ्गारे भतशणवुच्छेप । पदमवयसइआरे, पद्विमे
 राउपं सत्यं ॥ १० ॥ वीण अणुवयंमि, परिपूना
 अलिमरणविरईयां । आयरिमपसत्ये, इत्थं पमा
 पसंगेण ॥ ११ ॥ मटमारहसदारे, मोसुवणे अ
 कडोदे अ । वीणवयमडुआरे, पद्विमे राउपं सत्यं ॥
 १२ ॥ मण अणुवयंमि, भू नमवरदवहरणविरईयां ।
 आयरिमपसत्ये, इत्थं पमापसंगेण ॥ १३ ॥ तेना
 हहयभांगे, मणविरुत्ते विच्छगमणे अ । कडतुल कूट
 भांगे, पद्विमे राउपं सत्यं ॥ १४ ॥ सउत्ते अणुव
 यंमि, निचं परदारममगविरईयां । आयरिमपसत्ये,
 इत्थं पमापसंगेण ॥ १५ ॥ अपरिमहिष्ठा इत्ता,
 अंगम रिवाह निच्य अणुवयंमि । सउत्थवयमडुआरे,
 पद्विमे राउपं सत्यं ॥ १६ ॥ इतो अणुवयंमि दंगममि
 आयरिमपसत्ये । परिमाणविरईयां, इत्थं पमाप
 संगेण ॥ १७ ॥ भण-वत्त-मिन्न-वत्त-साण-सुवणे अ
 कूटमममि । मण सउत्थवयंमि अ, पद्विमे राउप
 सत्यं ॥ १८ ॥ ममपसत्य परिमाण, दिताय उट्टं अहं
 म रिमिं अ । मूट्टमड अवरदा, पद्विमे अणुवयं
 मि ॥ १९ ॥ अयमि म मंमि अ, पद्विमे अ वले अ
 म उट्टं अ । उवमंममि मंमि, वीणमि मणवयंमि रिमि

२० ॥ सविसे पट्टिपट्टे, अप्पोलिदुप्पोलियं च आहा-
 । तुच्छोसहिमक्खणया, पट्टिपमे राइयं सुव्यं ॥
 । ॥ इंगालो-यल्लासालो-भाही फोही तुदज्जण कम्मं ।
 गिज्जं चेव देन-त्तफल-रस-वेस-विस-विसयं ॥ २२ ॥
 । खु जंतदिहण-वम्मं निहंछणं च दग्गसं ।
 देहनलायमोमं, अमग्गोमं च वज्जिजा ॥ २३ ॥
 त्थिगिमुसलजंता-तण्णसुं मंनमृत्तमेसजे । दिक्खे ददा-
 णं वा, पट्टिपमे राइयं सुव्यं ॥ २४ ॥ यत्ताणुज्जद्वणदग्ग-
 लेयणं सुदुस्सरसंगं । दत्थान्ण आभरणे, पट्टिपमे
 इयं सुव्यं ॥ २५ ॥ वंदप्पे कुज्जण, मोहरिजहिमरण
 भाजदरित्ते । दंठमि अणट्ठाण-नट्ठंमि गुणज्वाण नि-
 ॥ २६ ॥ निविहे दुप्पणिहाणे, जग्गवट्ठाणे तद्दा सुइ
 हणे । सामाज्जयविनट्ठण, पट्टमे सिक्खायण निदे ॥
 ७ ॥ आणुयणे पेनयणे, नरे सुवे अ पुग्गलपत्तेवे ।
 आदगासिपमि, धीणं सिक्खायण निदे ॥ २८ ॥
 शमयारविरी-पमाय माह चेव भोगगाभाण । पोसह-
 हिविपगिण, तद्दा सिक्खायण निदे ॥ २९ ॥ सविसे
 विस्ववगे, विट्ठिणे दयणममच्छरे चेव । बालाज्जमदा-
 ण्णट्ठे सिक्खायण निदे ॥ ३० ॥ सुहिंसु अ दुहिण
 अ, जा मे असंजणसु अणुत्तंता । सारेण य दोसेण
 सं निदे मं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहसु सेविभाणो,

न कश्चो तवचरणकरणजुतेसु । संते फासुजदंगे,
 निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीवि
 मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, माम
 हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पट्टिकमेवा
 यस्स वायाए । मणसा माणसिअहस, सब्बस्स वयाइ
 रस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु रुक्काकसायंदे
 । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥
 रुम्महिट्ठी जीवो, जइ विहु पावं समायरइ किंचि । जने
 होइ पंचो, जेण न निद्वंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पि हु सपडिक्कमणं, रुपपरिआधं सउत्तरगुणं
 खिण्णं उवत्तामेइ, चाहिव्व सुखिखओ विज्जो ॥ ३७ ॥
 जइ विसं कुट्टमणं, मंतमूलविसारया । विज्जाहं
 मंतैहिं, तो तं हवइ निधिसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं क
 रगदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिण्णं
 णइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणुस्सो, आलो
 निदिप गुरु-सगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरि
 भरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण साव
 जइवि पहरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अ
 रेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा दहुविहा, नयसं
 रिया पट्टिकमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे
 च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलपत्त

सुमेग भे राई वड्कना, जत्ता भे जवणिजं च भेस
 मेमि खमासमणो राइयं वड्कनं, आवस्सियाए पडि
 मामि खमासमणायं राइ आण आसायणाए तिसीरुत्त
 राए, जं किंचि मिच्छाए भगवुक्कडाए वयवुक्कडाए काय
 वुक्कडाए कोहाए भाणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए
 सव्वमिच्छोवयाराए सव्ववयमाइक्कनणाए आसायणाए
 जो मे अइमारो दओ तरस खमासमणो! पडिक्कनामि
 निंदामि गरिहामि अप्पाजं घोसिरामि ॥ १ ॥

इन के पीछे अग्रप्रद में ही गृहते हुए नीचे लिखे हुए पाठ को
 चोलना चाहिये—

इच्छाकारेण मंसिस्स भगवन्! अब्भुट्ठिओग्धि
 अविभतराइयं खामेडं, इच्छं, खामेमि राइयं। जं किंचि
 अरत्तिपं परपत्तियं भने पाणे विण ग वेयावचे आलावे
 संलावे उच्चासणे ममासणे अंतरभासाण उवरिभासाए
 जं किंचि मज्झ विगपरमिट्ठाण सुहुमं वा पापरं वा तुब्भे
 जाणह अह न जाणामि नम्म मिच्छा मि वुक्कहं ॥

इस पाठ को वाचक गदाभा ३१ प्रवचन का गार्हपत्य-आगत
 में बैठकर दोनों हाथों का पटिवेदम् का मुद्रापी को दाहिने हाथ में
 मुच पं देखर और दाहिने हाथ को मुद्र के गानने हुए कर गदाभी वे
 को नमस्कार “जं किंचि अरत्तिपं” इत्यादि “अब्भुट्ठिओग्धि” का
 सम्पूर्ण पाठ करना चाहिये, फिर दोहरा “सुगुफांशगा” देखर अूमि

प्रमनान्न करते हुए पीछे पाने भरप्रद के बाहर जाना चाहिये,
 पान नीचे लिये हुए पाठ को बोलना चाहिये—

आपरियउदज्जाए, सीसे माटमिए कुलगणे अ ।
 जे मे वेड कसाणा, मध्ये निविहेण खामेमि ॥ १ ॥ मध्यस्स
 समणसंघस्स भगवओ अंजलि करिअ सीसे । सव्यं
 खमावइत्ता, खमामि सुव्यस्म अहंपि ॥ २ ॥ सुव्यस्स
 जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिप नियचित्तो । सव्यं
 खमावइत्ता, न्यमामि सुव्यम्म अहंपि ॥ ३ ॥
 इस के पीछे नीचे लिखा हुआ “वरणिमंते” का पाठ बोलना

चाहिये—

करेमि भंते! सामाएयं सावज्जं जोग पयस्सुखामि जाव
 नियमं पज्जुताहामि दुविहं निविहेण मणेगे वायाए काए-
 ओ न करेमि न कारवेमि तस्म भंते पटिक्कामामि निंदामि
 गरिहामि अप्पाण तोनिरामि ॥ १ ॥
 इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए “इच्छामि टामि” इत्यादि प

को बोलना चाहिये -

इच्छामि टामि काउस्सग्ग, जो मे राइओ अइय
 फओ, पाइओ पाइओ माणमिओ उरगुत्तो उग्ग
 अक्खणो अकरगिज्जो दुज्जाओ दुत्तिनिनिओ अण
 रो अणिउअव्या अग्गायपाट्ठो नाणे ताए
 परित्तानरित्ते सुए सामाए । तिण्ण सुत्तीणं,

कसायाणं, पंचण्डमगुञ्जयाणं, त्रिण्डं गुणज्यायाणं, चउपणं
 सिक्खाययाणं, पारसचिह्नस मत्तगधम्मस्स जं संद्वियं
 जं धिराद्वियं तस्स मिच्छा मि दुक्खं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए “ तम्म उत्तरी ” इत्यादि पाठ को
 बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेण पापच्छिन्नकरणेण विसोदीकर-
 णेण विसल्लीकरणेण पाचाणं कम्माणं निग्वायणद्वाए ठामि
 काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे यह बोलना चाहिये कि—

श्रीमहावीरस्वामि- छम्मासोत्तप- चिन्तन- निमित्तं
 करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए “ चउपणं ” इत्यादि पाठ को
 बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊत्तसिएण नीससिएण खासिएण छीएणं
 जं भाइएणं उड्डुएणं धायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए
 अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं
 एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो धवि-
 ह्व मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं भग-
 वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं भोणेणं
 क्काणेणं अप्पाणं धोसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बद्धकर बाउस्तग करना चाहिये तथा उस में श्रीमहावीर स्वामीके किये हुए छमासी तप का विन्तन करना चाहिये, भयना चौबीस नवकार या छ . “ लोगस्त ” का बाउस्तग करना चाहिये, तथा बाउस्तग को पाकर नीचे लिखे हुए “ लोगस्त ” इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगस्त उज्जोगरं, धम्मतिथपरं जिणे । जरिहं-
 ते कित्तस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिंअ
 च पदे, संमयमभिणंदणं च सुमइं च । पउमपहं सुपासं,
 जिणं च चंदपहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,
 मीअलसिंअस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं,
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंयुं अरं च मल्लि, वंदे
 मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह
 बद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवंमण अमिधुअ, विहपरपमला
 पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तिथपरा मे
 पहीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिअ महिआ, जे एलोगस्त
 उत्तमा सिद्धा । आरुगपोहिलाअं, रुमाहिबरुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलपरा, आरुवेसु अहिअं पपा-
 रुपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिहंतु ॥ ७ ॥

उक्त पाठ को बद्धकर सुदली की पहिले या बार के नीचे लिखे हुए “ सुगुणवन्दना ” पाठ को दो बार बोलना चाहिये—

उक्त वाक्य को मत्तिपूर्वक बोलना चाहिये ।

इस के पीछे गुरुमुख से पदान्ताग का के “इच्छानो वसु-
सहि” इस वाक्य को बोलना चाहिये ।

इस के पीछे “नवकारम्भो” से लेकर ओ कोई पदस्त्राय का-
ना हो उसे काना चाहिये, पदस्त्राय की विधि यह है कि—

नवकारसहियं मुहिसहियं पधकस्याप चउध्विहंवि
माहारं अस्सणं पाणं खाइमं साइमं अत्तन्धयाभोगेणं
तहसानारेणं महत्तरागारेणं मध्यममाहिवसिआगारेणं
शोसिरामि ॥ १ ॥

पीछे “एनो लमासनगाए, नमोऽर्हसिद्वाचापोंपाध्यावसर्वमा-
धुम्भर.” इस पाठ को बोल कर नीचे लिखे हुए “परसमपनिमिरतरणि”
अथवा “संसारदावा” इत्यादि दोनों पाठों में से किसी एक पाठ के-
आरम्भ की तीन गायत्रियों को बोलना चाहिये—

परसमपनिमिरतरणि, भवसागरपारितरणवर-
णिम् । रागपरागसमीरं, मन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥
निरुद्धसंसारनिहारकारिदुरन्तभायारिगणा विक्रामम् ।
निरन्तरं कैवल्यसत्तमा वो, भवायहं मोहभरं हरन्तु
॥ २ ॥ मन्देहकारिकुनयागमरुदगद-सम्मोहपङ्कहरणा-
मलवारिपूरम्, संसारसागरममुत्तरणोत्तभायं, वीरागमं
परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

इस के बाद नमोऽर्धुयं बहना ।

परिमलभरलोभालोदलोलालिमाला, वरकमल-
निवासे हारनीहारहामे, अथिलभवकारागारविच्छित्ति-
कारं, कुरु कमलकरे ! मे मङ्गलं देवि ! मारम् ॥४॥

संसारदावानलदाहर्नारं, संमोहधृतीहरणे समी-
रम् । मायारसादारणसारमार्गं, नमामि धारं गिरिसारके-
रम् ॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलो-
कमलावलिमालितानि । संपूरिताभिननलोकममीहिना-
नि, कामं नमामि जिनराजपदानि नानि ॥२॥ बोधागा-
धं सुपदपदवीनीरपराभिरामं, जावाहिमाविरललहरी-
सङ्गमागाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममर्णामङ्गलं दूर-
पारं, सारं वीरागमजलनिधि मादरं माधु मेव ॥ ३ ॥
अभूलालोलधूर्त्यवहुलपरिमलालोदलोलालिमाला

भङ्गारारावसारामलदलकमलागारभूर्मानिवासे ।
द्रापासम्भारसारं वरकमलकरं तारहाराभिरामे, वागी-
सन्दोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि ! मारम् ॥४॥

इम के पद्यान् नांचे लिखे ह्ये भजमान्युण उपादि पाठ को
बोल्नना चाहिये—

नमोऽस्तु ते परितेनां भगवन्नां आङ्गरां निन्ध-
परां मयंमं बुद्धां पुरिमुत्तमां पुरिममोहां पुरिस-
परपुंढरीयां पुरिमवरं भद्रार्थां लोमुत्तमां लोगना-
हां लोगहिआं लोगपईयां लोगपज्जोअगरां अभ-

दयाणं चरमुदयाणं मग्गदयाणं मरगादयाणं बोद्धि-
 दयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसिध्याणं धम्मनायकाणं धम्म-
 सरहीणं धम्मवरचाउरंतचक्रवर्दीणं अप्पट्ठित्तवरणाण-
 दसणधराणं विअट्ठउमाणं जिणाणं जावयाणं तिलाणं
 नारायाणं बुद्धाणं बोद्धयाणं सुत्ताणं सोअगाणं सज्जनूणं
 मज्जदस्सीणं सिवमयलमरुअमणं नमस्सवयमज्जायाह-
 मणुजरावित्तिमिद्धिगइनामोणं ठाणं मभ्यत्ताणं नमो जि-
 णाणं जिणभयाणं, जे अ अइया मिद्धा, जे अ भविसंनि
 णागाणं वात्ते। मंउअ बट्ठमाणा, मज्जे निविहेण वंदामि ॥१॥
 इस के पीछे गड़े हो का नीचे लिखे हुए "अग्रित जट्ठा-

मं५ इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अरिहंतनेइआणं करेमि काउस्समां ॥ १ ॥
 इस के पीछे गड़े हो का नीचे लिखे हुए "चंदमयसिध्याण-

इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

चंदमयसिध्याणं पूअणवनिआणं सवारावत्तिआणं
 सम्माणवनिआणं बोद्धिलाभवत्तिआणं निरुवमगावत्ति
 आणं मद्धाणं मेहाणं भिद्दणं धारणाणं अणुप्पेहाणं प
 माणाणं ठामि काउस्समां ॥ १ ॥

इस के पश्चात् गड़े हो नीचे लिखे हुए "अग्रत्थ उत्त-

मं५ इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अग्रत्थ उत्तमिणां नीमसिणां खामिणां तं

परिमलभरलोमालीदलोलालिमाला, - वरकमल
निवासे हारनीहारहामे, अविरलभवकारागारविच्छित्ति-
कारं, कुरु कमलकरे ! मे मङ्गलं देवि ! मारम् ॥४॥

संसारदावानलदाहनारं, संमोहधृतीदरण्ये समी-
रम् । मायारसादारणमारम्भारं, नमामि धीरं गिरिसारक-
रम् ॥१॥ भावावनाममुरदानवमानवेन, चूलाविलोल
कमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकममीहितानि,
कामं नमामि जिनगजपदानि तानि ॥२॥ बोधागा-
धं सुषट्पदवीनारप्राभिगमं, जावाहिमाविरललहरी-
सङ्गमागाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममर्णामङ्गलं दूर-
पारं, मारं धीरागमजलनिधि मादरं माधु मेवे ॥ ३ ॥

आमृलालोलधृतीवहृतपरिमलालीदलोलालिमाला -

भङ्गारागवमारामलदलकमलागारभ्रमीनिवासे
द्रापासम्भारमारं वरकमलकरं तारहागभिगमे, वागी-
मन्दोददेहे भवविग्रहवरं देहि मे देवि ! मारम् ॥४॥

इस के पश्चात् नाच निम्न लक्ष्मी-पञ्चाङ्ग-इत्यादि पाठ को
बोझना चाहिये -

नमोऽन्धुणं अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आट्मराणं तित्थ-
पराणं सप्रेमेषुद्राणं पुरिसुत्तमाणं पुरिमर्माङ्गाणं पुरिस-
वरपुन्दरीकाणं पुरिसवरगन्धर्व्याणं लोगुत्तमाणं लोगना-
हणं लोगहिआणं लोगपद्म्याणं लोगपद्मोअगराणं अम-

जंभाइएणं उद्धुएणं धायनिसग्गेणं भमटिए पिसमुच्छा-
 ए सुहुमेहिं अंगमंणालेहिं, सुहुमेहिं रेलसंचालेहिं,
 सुहुमेहिं दिट्टिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अमग्गे
 अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गे । जाय अरिहंणं
 भगवन्णं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं
 मायेण अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठों को बोल कर एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, एक श्रावक काउस्सग्ग पाठ कर 'नमोउद्धंसिद्धचायोंना धायसर्वसाधुम्भ' उक्त वाक्य को कटकर नीचे लिखी हुई स्तुति (युई को बोले—

सिद्धं चक्रं चाहं वन्दे ॥ १ ॥

इस के पश्चात् काउस्सग्ग को पढ़ना चाहिये, तथा इसी विधि को आगेकी तीन स्तुतियों में भी करनी चाहिये ।

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "लोगम्म" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगम्म उज्जोअगरे, धम्मनिट्थवरे जिणे । अरिहं-
 ते कित्तइस्सं, पउर्यासं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं
 च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमडं च । पउमप्पहं सुपासं,
 जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,
 मीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणं च जिणं,
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वंदे

सुणिसुध्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पास तह
 वट्ठमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण्णमभिपुग्गा, विहरयमल्ल
 पहीणजरमरणा । पउपीसं पि जिण्णवरा, नित्थपरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिय महिपा, जेण लोगस्स
 उत्तमा सिद्धा । धम्मगणोदिलाभं, समाहिवरमुत्तमं
 दित्तु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइयेसु अदियं पया-
 सयरा । सागरयरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

उक्त पाठ को बोलना तथा “मन्वलोर् भरिहंसचैश्चाय क-
 रेणि काउत्सगो” इस पाठ को बोलना तथा “वंदयपत्तिमए” इत्या-
 दि पाठ को बोलना तथा “भन थ उमस्तिण्ण” इत्यादि पाठ को
 पढ़ कर एक नमस्कार का काउत्सग करना चाहिये, इस के पश्चात्
 नीचे लिखी हुई दूसरी स्तुति (युई) को बोलना चाहिये—

श्रीप्रत्येकं पादो वंदे ॥ २ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए “पुणस्सदादीरइदं” इत्यादि
 पाठ को बोलना चाहिये—

पुणस्सरघादीयइ, धापइसंडे अ जंबूदीये अ ।
 भरहेरययविदेहे, धम्माहगरे नमंतामि ॥ १ ॥ समनिमि-
 रपटलविट्ठंसणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमा
 परस्स वंदे, एक्कोट्टियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजराम-
 रणसोगपणासणस्स, काट्ठाणपुवरलविसालागुरायहस्स
 को देवदाण्णनरिंदगणधिपरस्स, धम्मस्स सारमुयलन्भ-

करे पमाय ॥ ३ ॥ मिद्रे भो पयओ णमो जिगम
 नदी मया मज्जे, देव नागसुवन्नकिन्नरगणसञ्चभूअभावे
 चिण । लागा जम्ब पट्टिओ जगमिणं तेत्थुक्कमच्चसुरो
 धम्मो बट्ट म्मासओ विजयओ धम्मुत्तरं चट्ठउ ॥४॥
 सुअम्म भगवत्ता करेमि काउम्ममं ॥

“मम हण ‘‘नदणवत्तिपाण’’ इत्थणि

। ३ पीछे पूर्व लिखे हण ‘‘अत्ते

‘‘ सा चत्तिना चाहिये, उक्तपाठ

‘‘ नदण सा काउम्ममं कामे

‘‘ नाम्ना मुनि (पृष्ठ) के

आख्य नामक कर्त्तव्यताः ॥ ३ ॥

‘‘मिमांसु बुद्धिगं अथादिप

‘‘मिमांसु बुद्धिगं अथादिप
 नाम ॥ ३ ॥ अथादिप नाम अथादिप ॥२॥ अथादिपवि
 नाम अथादिप नाम अथादिप, अथादिपमहिम्नां, मिमांस
 अथादिप नाम अथादिप नाम अथादिप, जिगमवयमहस
 अथादिप नाम अथादिप नाम अथादिप, मागेह नमं य नादि य
 ३ अथादिप नाम अथादिप नाम अथादिप नाम अथादिप नाम
 अथादिप नाम अथादिप नाम अथादिप नाम अथादिप नाम

सारहीणं धर्मवरचाठरंनचक्रवर्त्तण अणदिहप्रवरनाण
 देसणधराण विअइहउमाण जिणाणं जायवार्णं निजाण
 तारयाणं बुद्धाणं घोइयाणं मुत्ताणं सो अगाणं सव्वन्तं
 सव्वदरिसोणं सिवमयलमस्यमगतमरस्यमव्वायाह
 सपुण्णरानित्तिं सिद्धिमहुनामंअणं ताणं सव्वत्ताणं नमा जि
 णाणंजिणंनयागं जे म अइया सिद्धा, जे अ भविमंति
 णागणं कालं । मःह अचइमाणा, सज्जे निविहेण वंदामि ॥

॥ १ ॥ मःहपडिअमणं सपुण्णं ॥

॥ मःहपडिअमणं सपुण्णं ॥

मन आमासभरतिन बैरगवन्दन—

१ । जगजिनुषन भारिदान, पंगममनि गार्मा । जगज-
 । २ मणा ज्ञानं दांन, नविजन हिनकार्मा । जग जग
 ३ न्द नार्द वृद्ध, मेवित निरनार्मा । जगजग अनिश-
 गाननवस, अमर्मान जामा ॥२॥ पश्य विदेह विगज-
 माण आर्मासभर म्याम । शिरगण-शुद्ध शिह वारणं,
 नित प्रति करं प्रणाम ॥ ३ ॥

३ विवि नामनिम्नं, मागे वादाळे माणुगे लोण ।
 मःह जिणविवाहं, मःह मयाह वंदामि ॥२॥

वमाणुणं अमिन्नाणं भगवन्ताणं ॥२॥ आहममाणं
 न्दवराणं मग्गेवृद्धाणं ॥२॥ पृमिगुणमाणं, पृमिगुणं-

द्वाणं, पुरिसवरपुंडरीकाणं, पुरिसवरगंधहन्त्रीणं ॥३॥
 लोपुत्तमाणं लोमनादाणं, लोमहिआणं, लोमपईगाणं,
 लोमपड्जोआगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं धवस्तुदयाणं
 मगदयाणं सुरणदयाणं बोहिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
 धम्मदेमिआणं धम्मनाथाणं धम्मसारहाणं धम्मवरणा-
 उमेत्तवववदीणं ॥ ६ ॥ अणटिहववनाणंदसणभराणं
 निअट्टउमाणं ॥ ७ ॥ जिगाणं जावयाणं निगाणं तार-
 याणं तुट्ठाणं गेहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सुअत्तुणं
 तप्पदरिमीणं त्रिअपलमहअमगनमअत्तपसअवाह-
 मपुणराविणि मिदिगइतापयेय दाग मरत्तगण नयो
 जिगाण जिअभयाण ॥९॥ जे अ अईयामिइहा. जे
 अ भविस्सेनिअणगाण काले । संपई अ वट्ठमाणा, सव्वे
 निविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावनि चेहपाई उट्ठे अ अहे अ निरिल्लाण वा
 गइपाई माई वंदे इह संनो तत्थ संताई ॥ १ ॥

इच्छामि यमाममणो वंदिउं जावणिआण निरा-
 दिआण सन्धण्ण वंदामि ।

जावन्त वेविमाह भरहेरपपमहाविदेहे अ । मय्येमि
 तेमि पणअं निविहेण तिदेहविरयाणं ॥ १ ॥

नमांउहेन्निट्ठानायांवाध्यायमवेसाधुभ्य ।

मेदाए विहेए भारणाए अणुप्यहाए बहुमाणाए ठामि
काउसमगो ॥ २ ॥

असत्तर ऊससिण्णे नोससिण्णे खासिण्णे कोएण
जंभाइण्णे उट्टण्णे वायनिमग्गेण भमलिण्णे पिसमुचा-
ए, सुहुमेहि अंगसंघातेहि, सुहुमेहि गेलसंघातेहि,
सुहुमेहि दिट्ठिसंघातेहि एवमाइएहि आगारेहि अभग्गां
अविरादिओ दुज्ज मे काउसमगो । जाव असिहंनणं
भगंवाणं नमुपारेणं न पारेमिनायकणं ठाण्णं मोगेणं
भोगेणं अण्याणं वोमिरामि ॥ १ ॥

१३. नववाक्यं सारं १. ३ के २११ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥
२३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥

सतोमंजुषा पुण्णसोवत्त-देव जणायुदणं वेवल्लङ्गा-
णोदं । महाणंदलच्छा बहुवुदिगयं सुसेवामि मोम-
परं निम्भरणं ॥ १ ॥

अथ श्रीमद्विष्णुसूक्तम् । १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥

श्रीसिद्धाचलजी का चण्डिका ।

जय जय नाभि नरिद नंद.सिद्धाचल मंजुषा । जय
जय प्रथम जिह्मद चंद भव दृष्ट्य विहंष्ट्य । जय जय
मणु सुरिद विद, पंडित परमेसर । जय जय जतदाचंद
नंद. श्रीरिवभ जिहंसर । अमृतमम जिनपर्मना ए.
दायक अगमं जाण । शुभ पद पंकज प्रानि पर. निजि



इच्छामि स्वमाममणो वंदितं जावणिञ्चाण निमी-
 ष्माण मत्थणण वंदामि ।

जावन्त केयि माह भरोस्वाममहाविदेहे अ । सच्चं-
 स तेमि णणओ तिविहेण तिदंढचिरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हस्मिद्धाचार्योपाध्यायसर्वमाधुभ्यः ।

॥ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे भग्य भाग्य हमारं ॥
 मल्लाल गिरि ० ॥ एह गिरिवरनां महिमा महोदो-
 जेतां न आये पारा । रागणस्स ममोसरथा म्यामी,
 ये नयाणुं पारा रे ॥ ५ ० ॥ १ ॥ मूलनाथक श्री आदि
 जेनेश्वर, श्रीमुख्य प्रतिमा चारा । अष्ट द्रव्यमेषु जो भावें,
 समकित मूल आचारा रे ॥ ५ ० ॥ २ ॥ दूर देशभी हं
 हां आगं, अथग सुणी गुण तहारा । पतिवड्धारण
 वेन्द तुमारे, एह तीर्थ जग मारारे ॥ ५ ० ॥ ३ ॥
 माय भक्तिमें प्रभु गुण गार्ये, अपना जन्म सुधारा ।
 ताआ करि भविजन शुभ भावें, नरक निर्पेन गति चारा
 ॥ ५ ० ॥ ४ ॥ संवन अहार प्रयार्मी मान आपादे,
 यदि आठम भोमचारा । प्रभुके चरण परतापमे मंगमें,
 समारतन प्रभु प्यारारे ॥ ५ ० ॥ ५ ॥

जग बीषगाय जगगुरु, होउ ममं तुह पभायओ भग-
 यं । भगनिध्येओ मग्गानुसारिण इट्ठफलनिर्दी ॥ १ ॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

पिछले प्रश्न भर्गवात्मा में जाकर बहा उसका प्रमार्जन कर
 आदि की पड़िलेहवा करनी चाहिए । यदि देर हो गई हो तो
 तबल दृष्टि प्रतिभेयना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी
 प्रियमान हो तो उन के सामने (यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के
 सामने) आ कर भूमि का प्रमार्जन कर आसन की बायें पास में
 गणेशममण देना चाहिए । यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक
 वेनी पड़े तो नीचे वाग नयकार मन्त्रको कहकर स्थापनाचार्य के प्र-
 भेभेयन के तगर बोली का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्था-
 पना करलेनी चाहिए, इस के पीछे गणेशममण देकर नीचे लिखे
 हुए पाठको बोलना चाहिये -

**इच्छाकारेण संदिशत भगवन् ! सामायिक मुद्रप-
 नी पडिलेहुं ? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर गणेशममण दे कर मुद्रपत्ती का पड़िलेहुन कर,
 फिर एक गणेशममण का देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

**इच्छाकारेण संदिशत भगवन् ! सामायिक संदि-
 शायं ? इच्छं । इच्छाकारेण संदिशत भगवन् ! सामा-
 यिक टायं ? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर एक गणेशममण दे कर बर्गवन्त हो कर
 नीचे वाग नयकार मन्त्र का गुणना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को
 बोले—

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

पिछले प्रहर धर्मशाला में जाकर बहा उसका प्रमात्रन कर मन्त्र आदि की पडिलेहया करनी चाहिए। यदि देर हो गई हो तो केवल इष्टि प्रतिशेगना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्यमान हो तो उन के सामने (यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के सामने) आ कर भूमि का प्रमात्रन कर आसन को बायें पास में रखकर खनाममण देना चाहिए। यदि स्थापनाचार्य के सामने भामायिक लेनी पड़े तो तीन बार नवकार मन्त्रको करकर स्थापनाचार्य के प्रतिशेगन के तेंद्र बोधो का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे खनाममण देकर नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये -

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक मुह्य-
नी पडिलेहूं? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर खनाममण दे कर मुह्यती का पडिलेहन करे, फिर एक खनाममण को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक संदि-
माउं? इच्छं । इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामा-
यिक ठाउं? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर एक खनाममण दे कर अर्द्धावनन हो घर मोन बार नवकार मन्त्र का मुखना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

लोगविद्वद्वाओ.गुरुजगपृथ्यापरन्थकरणंच। सुहृणु
जोगो तव्ययणसेवगा आभवमग्यंडा ॥२॥

अरिहंत चेद्व्यागं करेमि काउम्ममं. वंदणवत्ति-
आण पूअणवत्तिआण मक्कारवत्तिआण मम्माणवत्ति
आण वोहिलाभवत्तिआण निम्बमगावत्तिआण ॥१॥
सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अराणुणेहाए वड्डमाणो
ठामि काउम्ममं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊममिणं नाममिणं खामिणं छीणं
जंभाइणं उट्टणं वायनिसग्गेणं भमलित्त पित्तमुच्छा-
ए सुहृमेहिं अंगमंचालेहिं, सुहृमेहिं गेलमंचालेहिं, सु-
हृमेहिं दिट्ठिमंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभागो
अविराहिओ हृज्ज मे काउम्ममो । जाय अरिहंताणं
भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं टाणेणं मो-
णेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं भेमिरामि ॥१॥

एक नवकार का काउम्मम करके 'नमाइहि भगो गणधि पण
विमग्ग्य', योत्तर नीचे गुरुजग मिहायल ॥ ५॥ भवति गणे

शत्रुजयगिरि नमिये, कपभदेव पुडरीक । शुभन
नो महिमा, मुणि गुरु भुग्व निरर्याक ॥ शत्रु मन उ
वामे, विधिमु चैत्य वंदनाक । करिमे जिन आगल
ली यवन अलीक ॥१॥



अथ मन्त्र्यासामायिक-विधिः ।

जिसके द्वारा धर्मशास्त्र में उक्त बात उसका प्रमाणन का कर खादि की परिशेषता करनी चाहिए । यदि देर हो गई हो तो केवल यदि अनिवार्यता करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्वान् हैं तो उन के सामने । यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के सामने । जो वा भूमि का प्रमाणन का अधिन को बाये पास में गुरु गुरुगुरु देना चाहिए । यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक खेती पड़े तो तीन बार नवका मन्त्र को करकर स्थापनाचार्य के अनिवार्यता के संग गोमो का विनय करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे गुरुगुरु देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिए—

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक मुहप-
नी पटितेहं? इच्छं ।**

इस के पीछे जिस गुरुगुरु दे कर मुहपनी का परिशेषन को, जिस एक गुरुगुरु को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलें—

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक संदि-
माहं? इच्छं । इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामा-
यिक टाउं? इच्छं ।**

इस के पीछे जिस एक गुरुगुरु दे कर अर्द्धावनन हो कर मोन वा नवका मन्त्र का गुरुना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोलें—

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्! पसाय करी सप्प
यिक दंडक उचरायां जी?

इस के पीछे नीचे लिखे हुए " करेमि भंते " मन्त्र
को मुखचन का अनुभाषण करते हुए तीन बार कहना चाहि-

करेमि भंते! मामाडयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
जाय नियमं पज्जुवामामि, दुच्चिहं निविहेणं मण्णं
याण काण्णं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पज्जि
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

फिर एक प्रभामरण दकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना
चाहिये—

उच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्! इरियावहियं पवि
क्कामामि । उच्छं । उच्छामि पट्टिक्कमिउं । इरियावहियं
विगहणाण गमणागमणे पाणाक्कमणे वीयक्कमणे हरि
क्कमणे ओमा-उत्तिग-पणग-दग-मट्ठी-मक्कहा-संताण
संक्कमणे, जे मे जीवा विगहिया एमिदिया वेइदिया
तेइदिया चउरिदिया पंचिदिया अभिहिया वत्ति
लेनिया संघादिया संघदिया परिपाविया किलामिया उ
दविया टाणाउट्टाणं संकामिया जीवियाओ चवरोक्क
तस्स मिच्छामि दूक्खं ॥१॥

“तस्स उत्तरा” का पाठको बोलना चाहिये—

नाम उत्तरीकण्ठे पापविनाशकण्ठे विमोही
 कण्ठे विमोहीकण्ठे पापानां कर्माणां निश्चायद्वार
 तामि वाडस्मरामि ॥२॥

अथ अरविणं नीममिणं त्रामिणं उ-
 णं जंभाहणं उहृणं धामिमिणं भमलिणं वि-
 षमुराण । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि गेलमं-
 चालेहि सुहमेहि दिहमंचालेहि । अथमाहं हि आगा-
 रेहि अभगो अविगहिओ हृद्य मे वाडस्मरामो । जाय
 अरिहंताणे भगवन्तां नमुदारेणं न पारेमि, ताव कायं
 टाणेणं मोणेणं भतणेणं अप्पणां बोमिरामि ॥३॥

इमं वे. पीठे एक. 'लोमम्भ' को अथ॥ पाठ दारुण का
 मरुमम वरना चाहिदे, तथ 'लोमो अविगहिओ' वर वर वाड-
 म्भमम को दारुण चाहिदे, इम वे. दधन वरुट गानि मे नीमो लिखे
 ए 'लोमम्भ का पाठ को वरना चाहिदे

लोमम्भ उओअगरे, भममिण्यरे जिणे । अरिहं-
 मे किण्हस्मं, पउयोमं पि वेवर्त्ता ॥ १ ॥ उमभमजिणं
 य वंदे, मंभवमभिणंदणे य सुमहं य । पउमपपहं सुपामं,
 जिणं य वंदस्सहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं य पुण्णदंमं,
 मीअलमिअंसं यामुपुअं य । विमलमणं य जिणं,
 एअं मेति य वंदामि ॥ ३ ॥ कुंठुं अरं य महिं, वंदे

सीमघपेराणं जं किंनि मिच्छाणं मणदुष्काणं वयदुष्काणं
 कायदुष्काणं कोहाणं माणाणं मायाणं लोभाणं सव्य-
 कालिणाणं, मव्यमिच्छोयपाराणं सव्यभम्माइकमणाणं
 आसायणाणं जां मे अइआरं कम्मो तस्स यमासमणो!
 वट्ठिक्कामि निंदामि गिरिहामि अप्पारं योसिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक यमासमण इ कह नीचे लिखे हुए पाठ को
 पालना चाहिये

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! मज्झमाणं संदिमाउँ ?
 इच्छं ॥

सिद्ध दुस । यमासमण देव ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! मज्झमाणं कर्त्तुं ?

इच्छं ॥

इस के पीछे यमासमण देव आठ नवकाय वल गुणन करना
 चाहिये, सिद्ध एक यमासमण इ कह नीचे लिखे हुए पाठ को पालना
 चाहिये

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! वेसणे संदिमाउँ ?
 इच्छं ॥

सिद्ध दुस । यमासमण देव ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! वेसणे ठाउँ इच्छं ? ॥

यदि शील आदिके काम न कर भोदने आदिकी आवश्यकता
 हो तो एक यमासमण देव ।

मुणिसुख्यं नभिजिणं च । वंदामि सिद्धनेमिं, पासं त्व
 वद्वमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुञ्जा, विहपरपमला
 पक्षीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थपरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिय महिया, जे ए लोगस
 उत्तमा सिद्धा । आरुगयोहिलाभे, समाहिवसुत्तमं
 दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहिपं पण
 मयरा । मागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके बाद नीचे बैठ कर चउविहाहार उपवास कीया हो ने
 मुहपती नहीं पडिखेइना और वादणा भी नहीं देना, पजरमाण
 भी किया गया हो तो कीर नहीं करना । यदि 'निविहाहार उपवास' हो ने
 मुहपतीका पडिखेइना करना, किंतु वादणा नहीं देना चाहिये और
 यदि 'आयस्मिन् एकाशन कर भोजन किया हो तो मुहपती का
 पडिखेइना करना और दो बार 'मुमुख्यादना' दनी चाहिये और
 दूसरी बार वादणामें 'आयस्मिया' पद नहीं करना चाहिये -

इच्छामि स्वमाममणो! वंदितं जावणिज्जा. निर्मा
 हियाण थणुजाणह मे मिउग्गहं । निर्माहि । अहांसं
 कयमंस्समं स्वमणिज्जां मे किलामो अप्पविल्लयां
 बहुमुभेग मे, दियमां यउकंलो, जन्ना मे जवणिज्जे च मे
 म्भामेमि स्वमाममणो दिवमिपं यउकमं आयस्मिया
 वडिहमामि स्वमाममणार्ण देयमिअण आमायणा नि

षेस! पास! धंभणपपुरट्टिज ॥१॥ नइ ममरंन लहंति
 भक्ति चरपुत्तकलत्तइ , धण्णसुवण्णट्टिरण्णपुगण जण
 भुंजइ रज्जइ । पिकखइ सुक्ख अमंखसुक्ख तुह पास
 पसाइण, इच्च निहुजणयरकप्पसुख सुक्खइ कुण मण
 जिण ॥२॥ जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्टहु सुकुट्टिण,
 चक्खुक्खीण खपय खुण्ण नर सहिय सुलिय । तुह
 जिण सरणरसायणेण लहुहंनि पुणण्णय, जयधंनरि
 पास मह वि तुह रोगहरो भय ॥३॥ विज्जाजोडसमेन-
 तंतसिद्धिउ अपयत्तिण, सुवणज्जुउ अट्टविह सिद्धि
 सिज्जहि तुह नामिण । तुह नामिण अपयित्तयां वि
 जण होइ पयित्तउ, तं निहुअणकल्लायकोम तुह पाम
 निरुत्तउ ॥४॥ खुदपउत्तइ मंमरंतजंनइ विसुत्तइ, च-
 रथिरगरलगाहुग्गवगारिउवग्ग विमंजइ । दुत्थियसन्ध-
 अणत्थयन्ध नित्थारइ दय करि, दुरियइ हरउ म पाम
 देउ दुरियवरियेसगि ॥५॥

इसके पश्चात् "जरतिट्टमय" की नाथे लिखी हुई अन्तिम
 दो गाथाओं की संख्या सादिदे *

जह तुह रुविण किणवि पेअपाइण वेलेपियउ, मउ
 जाणउ जिण पास तुम्ह हउं अंगीकरिअउ । इय मह

* इतिहास के अनुसार इन गाथाओं की संख्या २० लिखी है ।

इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु, रक्खं तह निप-
 कित्तिणेय जुअइ अवहीरणु ॥२९॥ एह महारिय जत्त-
 देव इहु न्हवणमहसउ, जं अणलियगुणगहण तुम्ह
 सुणिजणअणिसिद्धउ । इस महं पसिहसुपासनाह
 भंभणयपुरट्ठिअ, इय सुणिवरु सिरिअभयदेव विण-
 षइ आणिदिअ ॥३०॥

इसके पीछे “जयमहायस” को बोलना चाहिये—

जय महायस जय महायस जय महाभाग ज-
 चित्तियसुहफलय, जय समन्थपरमत्थ जाणय जय ज-
 गुरुगरिम गुरु। जय दुहित्त-सत्ताणताणय भंभणयट्ठि-
 पास जिण, भयियह भीमभवत्थु भयअवं गांताणां
 गुण तुज्झ तिसंझ नमोत्थु ॥१॥

इसके पीछे नमोत्थुण को बोलना चाहिये—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगरा-
 तित्थयराणं मयंमंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरि-
 माहाणं पुरिमवरपुंडरीआणं, पुरिमवरगंभट्ठर्थाणं ॥ ३ ॥
 ओगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईआणं
 लोगपझाअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, शक्रबुद्धाणं
 मग्गदयाणं सरणदयाणं पोट्ठिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदया-
 धम्मदेहिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरत्थ

भगवन्ताणं नमुकारेणं न पारेमिताय काये ठाणेणमे
णेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं धोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग करना चाहिये, व
मनुष्य काउस्सग को पार कर- “ नमोउद्हरिसद्वाचार्योपायदर्श
साधुभ्यः ” इस वाक्य को कह कर नीचे लिखी स्तुति को बोलें-

श्रीशान्तिनाथजी, साता कारक देव । मनमोहन
स्वामी, अनुपम मूरति सेव ॥ मुझ रोम हुलसिया, व
नूँ प्रणमूँ नाथ । शुद्ध समकित माँगूँ, जोड़ प्रभु ॥
हाथ ॥ १ ॥

उक्त स्तुति को सुनके पीछे अन्य लोग काउस्सग को पार
इस के पीछे “लोगरस” को बोलना चाहिये—

लोगरस उच्चोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । जरि
हते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजि
य वेदे, संभयमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्यहं सु
पामं, जिणं च वंदप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्कदं
सीअत्त सिञ्चंस यासुपुञ्चं च । विमलमगांतं च जिणं
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वं
मुणिगुण्यणं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमि, पासं तर
यदमाणं च ॥ ४ ॥ एवे मए अमिधुआ, विहपरपमत्ता
पट्ठाण-जर-माणा । चउवीसंपि जिणयरा, तित्थयरा मे
पसीपंतु ॥ ५ ॥ किन्तिप वंदियमहिषा, जे एल्लोगस्स

सिद्धिमा सिद्धा । आरज्यपोहिताभै, ममादिपरमुत्तमं
 दिनु ॥ ६ ॥ चेरेषु निम्मलपरा, आइयेसु महिषं पपा-
 त्सयरा । सागरपरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिस्तु
 ॥ ७ ॥

इसके पीछे "ममाभ्ये" अरिहंतेइत्यादि कोवि काउत्सगां"
 इत्येवम्। वेदव्यतिशय "वेदना दाहिदे—

वेदव्यतिशय आह पृथग्व्यतिशय मयाव्यतिशय
 ममाव्यतिशय योहिन्नाभयतिशय निरवसगाव-
 तिशय सद्वाह येहाह धिरेह धारणाह अणुप्येहाह
 पट्टमाणीह तामि काउत्सगां ॥ १ ॥

इसके पीछे "ममाभ्य" को वेदना दाहिदे—

असम्भ्र उत्समिणं नमस्तिष्ठणं एवमिणं धीमिणं
 जेभाहणं इहृहणं वायनिसगोणं भमलिह विसमुच्छा-
 ण सुहमेहि धंगसंचालेहि, सुहमेहि गेलसंचालेहि,
 सुहमेहि दिष्टिसंचालेहि, एवमाहहि आगारेहि अभगो
 अविराहिमो ह्यम मे काउत्सगां । जाय अरिहंताणं
 भगवन्ताणं नमुकारेणं न पारेमि नाथ कायं ठाणेणं मीणेणं
 काणेणं अण्णाणं योसिरामि ॥ १ ॥

इसके पीछे एक नवका का काउत्सगा काहे, दूर के
 सगुन एक मनुष्य पहिले काउत्सगा को पाव का नीचे-लिखी हुई

घंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सफारवत्तिआए
सम्माणवत्तिआए पांहिहाभवत्तिआए निरुपसुग्गय-
त्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए
बहुमाणीए ठामि काउत्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " कवत्थ " को बोलना चाहिए—

अज्झत्थ जससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
अंभाइएणं उड्डुएणं पापनिसग्गेणं भमल्लिण पित्तमुच्छा-
ए सुहमेहि अंगसंचालेहि सुहमेहि खेत्तसंचालेहि,
सुहमेहि दिट्ठिसंचालेहि, एवमाइएहि आगारेहि अमग्गे
अविराहिओ हुअ मे काउत्सग्गो । जाय अरिहंताणं
भगवंतारं नमुफारेणं न पारेमि ताव काये ठायेणं मोणेणं
झाणेणं अप्पाणं दोसिरामि ॥ १ ॥

एक नरकारका काउत्सग्ग करे उसे पार कर एक स्तुत्य को
नीचे लिखे हुई सोमरी स्तुति को बोलना चाहिए—

घर आगम जिनवर भाये अर्थ विचार , श्रीगण-
घर गुरु ते गूँध्या गुण हितकार । हे श्रीसद्व सकल को
उत्कृष्टो आधार , निज नित भवि तेवो श्रुतसागर
सुरकार ॥ ३ ॥

इस के पीछे " गिद्धाणं बुद्धाणं " को बोलना चाहिए—

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारमयाणं परंपरगयाणं । लोअ-
मासुयगयाणं, ममो सथा सव्वसिद्धाणं ॥१॥ ओ देवा-

णवि देवो, जं देवा पंजली नमंसेति । तं देवदेवमहिं,
 सिरसा धंदे महावीरं ॥ २ ॥ इकोवि नमुकारो, जिणवा-
 वसहस्स वट्ठमाणस्स, संसारसागराद्यो, तारेइ नं व
 नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जित-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं नि-
 सीहिआ जस्स । तं धम्मचक्रवर्द्धि, अरिहनेमि नमंसाणि
 ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउ-
 ध्यासं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंनु ॥ ५ ॥

इस के पीछे " वेआवयवगराणं " को बोलना चाहिये—

वेआवयवगराणं संतिगराणं सम्महिट्ठिसमाहिगराणं
 करेमि काउस्सग्गे ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ ऊत्तसिण्णं " को बोलना चाहिये,

अन्नत्थ ऊत्तसिण्णं नीत्तसिण्णं खासिण्णं ह्योण्णं
 जंभाहण्णं उद्दुहण्णं धापनिसग्गेणं भमत्तिणं पित्तमु-
 च्छाणं । सुहृमेहि अंगमेचालेहि सुहृमेहि खेलमंचा-
 लेहि सुहृमेहि दिट्ठिसंचालेहि । एवमाइएहि आगारेहि
 अन्नागे अविरादिओ ह्रस्व मे काउस्सग्गो । जाय अ-
 रिहेत्ताणं अगपेत्ताणं नमुकारेणं च पारेमि, ताव कायं
 टाणेण मोणेणं इण्णेणं अप्पाणं यांसिरामि ॥ २ ॥

एक नमस्कार का कार्यक्रम करने पीछे एक आदमी काउस्सग्ग
 को पारका " नमोऽर्हं महापायोराव्यायमर्माभुव्यः " इतना बोल

को कह कर नीचे लिखी हुई चौकी स्तुति कहे और शेष मन्त्र स्तुति को सुन कर पीछे काउस्तग को पारें—

ॐ जिन शासनदेवी सकल मनोरथ पूर, फर म-
हल माला मय सङ्कट को चूर । सुख पूरण स्वामी
खरतरगच्छ सुखखान , इन सब को यन्दे क्षेमसागर
शुभध्यान ॥ ४ ॥

इम के पीछे बैठ कर “नमोस्तुतं” बोलना चाहिये—

नमोस्तुतं अरिहंताणं भगवन्ताणं ॥ १ ॥ आङ्गराणं
तित्थपराणं सपंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
सोहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगदिआणं, लोगपईयाणं,
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अमयदयाणं, चक्रबुदयाणं,
मग्गदयाणं सरणदयाणं पोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचा-
उरंतचक्रवटीणं ॥ ६ ॥ अप्पहिहयवरनाणदंसणधरा-
णं पियट्टउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तित्थाणं
तारयाणं बुद्धाणं पोहयाणं सुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वधूणं सव्वदरिमाणं सिद्धमपलमरुअमगंअमस्सव-
मज्जायाहमपुणरावित्ति सिद्धिगाहनामधेयं ठायं संप-
त्ताणं नमो जिणाणं जिअमयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइ-

एतं कत्तमाणां पंदराभजुज्जयाणं विगटं गुणज्जयाणं
एतं विगटं तावत्ताणं पारमविहस्स मायाधम्मम्स जं
एतं जं विगटिजं नम्म मिच्छामि दुपटं ॥ १ ॥

इस के दोहे का अर्थ "इसी को " विगट काटिये—

मात्र उत्तमेश्वरयोगे पापनिवृत्तकारणयोगे विस्तोही-
योगे विस्तोहीकारणयोगे पापयोगे कम्मयोगे निग्राहकाद्वारा
मि काउस्मगो ॥१॥

इस के दोहे का अर्थ "इसी को " का खोचना चाहिये—

अतएव उत्तमिणं नाममिणं ग्यामिणं जी-
जंभादणं उट्टणं पापनिवृत्तयोगे भमलिणं वि-
मुच्यताम् । सुट्टमेहि अंगमेवालेहि सुट्टमेहि सेलसं-
लेहि सुट्टमेहि दिट्ठिमेवालेहि । पवमाइणहि आगा-
हं अभगो अचिरादिजं हृत्त मे काउस्मगो । जाय
रिक्ताणं भगवन्माणां नमुच्यते न पारमि, ताव कापं
पेण मोणेणं भाणेणं जणायं योमिरामि ॥१॥

इस के दोहे का अर्थ "इसी को काउस्मगो करना चाहिये ।

उ " नमो विगटं " का काउस्मगो हो पाए का प्रसन्न
मि मे " मोमग " को खोचना चाहिये—

लोगस्म उत्तमेश्वर, धम्मनिवृत्तयोगे जिणे । अरिहं-
विस्तदस्स, पट्ठवस्स वि वेदंता ॥ १ ॥ उत्तममजिणं

च वंदे, संभवमभिर्गुणं च सुमहं च । . . .
 जिणं च चंदपहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्पं,
 सीमलसिद्धं च वासुपुत्रं च । विमलमणं च जिणं
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंयुं अरं च महिं, के
 मुणिसुव्यं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तं
 वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अमिथुआ, विहूय फलं
 पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थवरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्ति य वंदिय महिया, जे ए लोकास
 उत्तमा सिद्धा । आरुग्गपोहिलाभं, समाहि वरमुत्तमं
 दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइवेसु अहियं पपा-
 मपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ अ

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर बैठ कर तीजे भावर-
 फ की मुहपत्ती का पडिलेहन करना चाहिये, इस के पश्चात् नीचे
 लिखे हुए पाठ से 'मुगुर वन्दना' करना चाहिये—

इच्छामि स्वमासमणो! वंदितं जावणिज्जाए निसी-
 हिआए अणुजाणाह मे मिउगाहं । निमीहि । अहोकार्य
 कार्यसंकासं स्वमणिज्जो मे किलामो अप्पकिंलतावं
 पट्टसुभेण मे, दियसो वदयंतो, जत्ता मे जवणिज्जं च मे,
 त्यामेमि स्वमासमणो देवसियं वदकमं आबस्सियाए
 पट्टिप्पमामि स्वमासमणाणं देवसिआए आसायणाए ति-
 सीसन्नपराए ज किंचि मिच्छाए मणहुकडाए वक्कुक्कडाए

स्यपुच्छदाः कोटाः माणाः मापाः शोभाः सख-
 त्रिपाः, सखमिच्छोवपाः सखधम्माइकमयाए
 मासायणाः जो मे अइआरो कओ तस्स लमासमणो!
 सहिष्णामि निंदामि गिरिहामि अप्पाणं बोमिरामि ॥१॥

वह पाट दो बार बोलना । हम में हमरां बार 'बावमियाए'
 गद नहीं बोलना चाहिये ।

इस के पीछे कथन में १। सड़े गू का नीचे बिरो हुए पाट
 को बोलना चाहिये—

इच्छावारेण संदिसह भगवन् ! देवमिअं प्वालोलं?
 इच्छं । आलोएमि ॥ १ ॥

इस के पीछे " जो मे देवमिअं " को बोलना चाहिये -

जो मे देवमिअं अइआरो कओ कइओ बाइओ
 भाणमिओ उस्तुत्तां उम्मगो अकप्पो अकरणिओ दु-
 ज्जाओ दुग्घिचिनिओ अणागरो अणिस्सिद्धय्यो प-
 सावगपाउगो भाणे तह दंसणे परिस्तावरिभं सुए मा-
 माइए । निगहं शुलीणं चउण्हं कत्तागागां पंचणहमणु-
 प्पयाणं निण्हं शुणध्ययाणं चउण्हं मित्रसायपाणं पार-
 सविहस्म मायगधम्मस्स अं थंदिपं अं विगट्ठिये तस्स
 मिच्छामि दुषटं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे बिरो हुए " बागुया बागप्रहर " इत्यादि
 पाट दो बोलना चाहिये—

अनुणा चार प्रहर दिन में मैंने जो

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सा
लाख तेडकाय, सात लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्ये
क वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय,
दोष लाख वेडन्द्रिय, दोष लाख तेडन्द्रिय, दोष लाख
चौरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख
तिर्यक्पञ्चेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
के जीरमा लाख जीवायानि में मेरे जीव ने जे कों
जीव हण्यो होय हणाय्यो होय हणनां प्रत्ये भलो जा
ण्यो होय ते मय्ये हँ मने वचने काया में करी तम
मिच्छामि दुषटं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिख पाठ का बोलना चाहिये

प्राणानिपान मृषावाद अदत्तादान मैथुन परि
ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभय
मृशान पैशुन्य रनि अरनि परपरिवाद मायामृषाया
मिथ्याम्यज्ञान्य, ये अटारं पापम्यानक सेव्या होय, से
गय्या होय सेवनां प्रत्ये भला जाण्यो होय ते मय्ये
मने वचने काया में करी तम मिच्छामि दुषटं ॥ १

इस के पीछे नीचे लिख पाठ का बोलना चाहिये

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पार्षी पोषी उदरणी कयली न
अवर्णी देव गुरु धर्म की आशानना करी होय, प

कर्मोद्दाने की कर्मोद्दाना करी जाय गजकथा देनाकथा
 निरुद्धा भवताकथा करी जाय. ध्याय नो कीर्ति पाय पर-
 निरुद्धा वंशुं दीप, कर्मोद्दान जाय. परमा अनुमोदुं दीप
 सो भरी भरी कर्मोद्दान कर्मोद्दान कर व दिन अनिपार भयो
 पण कर्मोद्दान पणिकथा में ध्यायार्थ नम्र मिच्छामि
 बुद्धं ॥ १ ॥

जाय जाय वंशुं दीप, कर्मोद्दान जाय. परमा अनुमोदुं दीप
 सो भरी भरी कर्मोद्दान कर्मोद्दान कर व दिन अनिपार भयो
 पण कर्मोद्दान पणिकथा में ध्यायार्थ नम्र मिच्छामि
 बुद्धं ॥ १ ॥

मन्त्रमन्त्रि देवमन्त्रि दुर्मन्त्रि दुर्भन्त्रि दुर्मन्त्रि
 मन्त्रमन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि
 बुद्धं ॥ १ ॥

मन्त्रमन्त्रि देवमन्त्रि दुर्मन्त्रि दुर्भन्त्रि दुर्मन्त्रि
 मन्त्रमन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि
 बुद्धं ॥ १ ॥

भक्तमन्त्रि ! मन्त्र मन्त्र ? बुद्धं ।

मन्त्रमन्त्रि देवमन्त्रि दुर्मन्त्रि दुर्भन्त्रि दुर्मन्त्रि
 मन्त्रमन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि
 बुद्धं ॥ १ ॥

कर्मोद्दाने ! मन्त्रमन्त्रि मन्त्रमन्त्रि मन्त्रमन्त्रि
 जाय निरुद्धा वंशुं दीप, कर्मोद्दान जाय. परमा अनुमोदुं दीप
 सो भरी भरी कर्मोद्दान कर्मोद्दान कर व दिन अनिपार भयो
 पण कर्मोद्दान पणिकथा में ध्यायार्थ नम्र मिच्छामि
 बुद्धं ॥ १ ॥

अनुणा चार प्रहर दिन में मैंने जो विचार
 सात लाख पृथिवीकाय, मान लाख अण्काय,
 लाख तेडकाय, मान लाख वायुकाय, दश लाख
 क वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय,
 दोष लाख वेदन्द्रिय, दोष लाख नेदन्द्रिय, दोष लाख
 चौरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारका, चार लाख
 तिर्यक्षपञ्चेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
 के चौरसो लाख जीवायोनि में मेरे जीव ने जे कों
 जीव हण्यो होय हणाय्यो होय हणनां प्रत्ये भली जा
 ण्यो होय ते सच्चे हैं मने बचने काया ये करी तस्मिन्
 मिच्छामि दुष्कटं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये—

प्राणानिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परि-
 ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्या-
 सुषान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद
 मिथ्यात्वशक्त्य, ये अठारें पापस्थानक सेव्या होय, सेव-
 राव्या होय सेवतां प्रत्ये भला जाण्यो होय ते सच्चे हैं
 मन बचन काया ये करी तस्मिन् मिच्छामि दुष्कटं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पाठी पोथी टवणी कबली नव-
 कारवाली दिव गुरु धर्म की आज्ञातना करी होय, पनरे

तद् संपद्यो कुलिगीसु । सम्मत्तस्तद्भारे, पट्टिकमे दे-
 वसिपं सख्यं ॥ ६ ॥ हृत्कायसमारंभे, पयणे अ पयाघणे
 अ जे दोसा । अत्तद्वा य परद्वा, उभयद्वा नेय तं निदे
 ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्यपाणं, गुणव्यपाणं च तिण्हमइ-
 भारे । सिक्खपाणं च चउण्हं, पट्टिकमे देवसिपं सख्यं
 ॥ ८ ॥ पइमे अणुव्यपंमि, धूलगपाणाइयायविरईओ ।
 आपरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ यद्
 गउविच्छेए, अइभारे भत्तपाणयुच्छेए । पइमययस्स-
 भारे, पट्टिकमे देवसिपं सख्यं ॥ १० ॥ पीए अणुव्यपं-
 , परियूलगअलिपययणविरईओ । आपरिअमप्प-
 , इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्स भारे,
 अ कूटलेहे अ । पीपययस्सइभारे, पट्टिकमे
 सख्यं ॥ १२ ॥ तद्दए अणुव्यपंमि, धूलगपरद-
 विरईओ । आपरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-
 ॥ १३ ॥ तेनाहउप्पओगे, तप्पट्ठिरूवे विरुद्धग-
 । कूटनुलकूटमाणे, पट्टिकमे देवसिपं सख्यं ॥
 चउत्थे अणुव्यपंमि, निपं परदारगमणविरईओ ।
 , इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १४ ॥ अप-
 इत्तर, अजंगविवाह तिप्यअणुरागे । चउ-
 तद्भारे, पट्टिकमे देवसिपं सख्यं ॥ १५ ॥ इत्तो
 ए देवमेमि आपरियमप्पसत्थंमि । परिमाणय-

इम के पीछे “ इच्छामि पटिक्कमित्तं जो मे देवसिद्धिं ” के
बोलना चाहिये—

इच्छामि पटिक्कमित्तं जो मे देवसिद्धिं अइज्जतां
कओ काइओ याइओ माणसिओ उम्मुत्तां उम्ममो
अकप्पो अकरणिओ दुक्काओ दुब्बिचिनिओ अण-
यारो अणिच्छियओ अमायगपाउगां नाणे तह् दंस-
णे चरित्ता चरित्ते सुणं सामाइणं निण्हं गुत्तीणं चउ-
ण्हं कसापाणं पंचण्हमणुब्बयागां निण्हं गुणब्बयाणं च-
उण्हं सिक्खाययाणं यारसविहस्स मायगधम्मस्स जं
खंडिअं जं विराट्ठियं तस्स मिच्छामि दुक्कहं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए ‘वदितुसूत्र’ पाठको बोलना चाहिये—

वदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मापरिणं अ सव्वसाहं अ
इच्छामि पटिक्कमित्तं, सावगधम्माहं आरस्स ॥ १ ॥ जो
मे वयाइज्जारो, नाणे तह् दंसणे चरित्ते अ । सुहुमे
अ पायरो धा, तं निदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुक्किं
परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ
करणे, पटिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं वट्ठमिदिएहिं
चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं
निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे
चंक्रमणे अणामोगे । अभिओगे अ निओगे, पटि-
क्कमे देवसियं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंखविगिच्छा, पसं

तद् संपद्यो कुलिगीसु । मम्मत्तस्तद्भ्यारे, पट्टिकमे दे-
 वसिपं सत्यं ॥ ६ ॥ हृदापसमारंभे, पयणे अ पयावणे
 अ जे दोमा । अत्तद्वा य परद्वा, उभयद्वा नेच ते निदे
 ॥ ७ ॥ पंचणहमणुज्यपाणं, गुणज्यपाणं अ तिण्हमइ-
 च्छारे । मिरखाणं अ अउण्हं, पट्टिकमे देवसिअं सत्यं
 ॥ ८ ॥ पदमे अणुज्यपेमि, धूलगपाखाइयायविरईओ ।
 आपरियमप्पमत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ यह
 रंधपट्टविज्जेण, अइभारे भत्तपाणपुच्छेण । पदमवयस्स-
 इभारे, पट्टिकमे देवसिपं सत्यं ॥ १० ॥ पीए अणुज्यपे-
 मि, परिधूलगअलिपययणविरईओ । आपरियमप्प-
 मत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्स द्वारे,
 मोसुयपमे अ कूटलेहे अ । पीयवयस्सइभारे, पट्टिकमे
 देवसिपं सत्यं ॥ १२ ॥ तइए अणुज्यपेमि, धूलगपरद-
 ध्वहरणविरईओ । आपरियमप्पमत्थे, इत्थ पमायप्प-
 मत्थे ॥ १३ ॥ तेनाहटप्पओगे, नप्पट्टिस्त्वे विरुद्धग-
 मणे अ । कूटतुलकूटमाणे, पट्टिकमे देवसिपं सत्यं ॥
 १४ ॥ अउत्थे अणुज्यपेमि, निधं परदारगमणविरईओ ।
 आपरियमप्पमत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अप-
 रिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह निध्वअणुरागे । अउ-
 त्थययस्सइभारे, पट्टिकमे देवसिपं सत्यं ॥ १६ ॥ इत्तो
 अणुज्यए पंचपेमि आपरियमप्पसत्थंमि । परिमाणप-

चित्तेन, इत्येव वचसाय वसंता ॥ १७ ॥ धनधनसिन्धु-
 त्वा, सप्तमृदं अ कु रिय अरिमाणे । दुष्पण चङ्कपयंमि-
 म, पत्तिवपे देवमिरे मन्त्र ॥ १८ ॥ गमणस्मड परिमाणे,
 दिमासु उरु अहे अ नि गे अं च । बुद्धिसडअंतरद्वा,
 पदममि गुण-वप निद ॥ १९ ॥ नल्लमि अ मंसमि अ,
 पुण्णे अ पत्ते ज ग वपने अ । स्वभोग पराभोगे, दी-
 यंमि गुणवप निद ॥ २० ॥ रत्तने पट्टिवट्टे, अपोति
 दृत्तातिने च प्राप्ता । नल्लमि अ मंसमि अ, पट्टि-
 क्रमे देवमिरे मन्त्र ॥ २१ ॥ उरु । वगमाटी, भाडीको-
 टी सुवज्जण कम्म । दत्ते च वपदलकवरमकेसवि-
 मविमव ॥ २२ ॥ । वपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 च दवदाण । मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 ॥ २३ ॥ मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 दिने दवदाण । मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 ॥ २४ ॥ पहा-
 गुदवट्टणक्षत्तम विनेदो । मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 मण, पट्टिवट्टे । मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 ॥ २५ ॥ बंदणे कुट्ट-
 ण, मोहमि अरिमाणे । मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 द्वाण, नदममि गुण-वप निद ॥ २६ ॥ निविहे दुष्पणि-
 दाण, अणवदाण नल्लमि अ मंसमि अ । मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 पदमे मिरुयावप निद ॥ २७ ॥ मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-
 स्त्वे अ पुगलवपने । मन्त्रवपदलकवरमकेसविमव निहंरुण-

षण् निदे ॥ २८ ॥ रंथाङ्गारविही-पमाय तद् जेष
 भोयणाभोण । पोमहवितिवियरीण , तद्गण सिक्त्वा-
 षण् निदे ॥ २९ ॥ मन्विने निक्खिग्गणे , विहिणे-
 पयणम-मच्छरे जेय । वान्ताङ्कमद्राणे , चउत्थे सि-
 क्खणाण् निदे ॥ ३० ॥ सुत्तिणसु अ द्दुत्तिणसु अ ,
 जा मे अमंजणसु अणुक्कंता । रागेण य दोसेण य ,
 मं निदे मं य गरिहामि ॥ ३१ ॥ माहसु मंविभागो ,
 न कप्पो मयणरणकरणजुत्तेसु । मंने फासुअदाणे , तं
 निदे मं य गरिहामि ॥ ३२ ॥ इट्ठलोण वरलोण , जीविअम-
 रणे अ आमंसपआगे । पंचविहो अइपारो , मा म-
 उमं हउअ मरणं ते ॥ ३३ ॥ वण्ण काइअस्म , पट्ठि-
 कमे वाटअस्म यायाण । मणमा माणमिअस्म , सव्य-
 म्म ययाइआस्म ॥ ३४ ॥ धंदणययमिक्खणागा-रवेसु
 मत्ताकत्तायइहेसु । गुत्तिसु अ मनिईसु अ , जो अइ-
 आरोअ मं निदे ॥ ३५ ॥ मम्महिट्ठी जीयो , जइ वि हू पावं स-
 मायरइ किंवि । अणो मि होइ यंथो , जेण न निद्वंधसं
 कुणइ ॥ ३६ ॥ मं पि हू मपडिक्कमं , मण्णरिआयं स-
 उत्तरगुणं य । दिव्यं उयसामेइ , वाहिज्य सुसि-
 विक्खणो विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा दिमं कुट्ठगयं , मंतमूलवि-
 मारया । विज्जा हणंनि मंनेहि , तो मं हयइ निव्विमं
 ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं , रागदोससमज्झियं ।

आलोअंनो अ निर्दंनो, गिणं हणइ सुमायणो ॥४०॥
 कणपायोवि मणुम्मो, आलोअंनं निर्दिणं सुम्मगामे
 होइ अइरंगलहूओ, आंअग्गिअमकव्व भागवतो ॥४१॥
 आयस्सणं पणं मायओ जइ वि यइहूओ होइ । इ
 कल्याणमंसकिरिअं, कात्ता अचिरंण कालेण ॥४२॥
 आलोअणं यहुयिहा, नय संमरिअ पडिअमणक
 । मूलगुण उत्तरगुणे, ते निर्दे ते च गरिहामि ॥४३॥

इस के पथान् पढ़े हो कर " वटिण् " मूल का नी
 लिखा हुआ अवशिष्ट पाठ बोलना चाहिये - -

तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्म । अचुत्थिआग्गिआरा
 णए, विरओग्गि विराहणाए । निविहेण पडिअंनो, वंदा
 जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जानंति चेइआइं, उट्ठे
 अहे अ निरियलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह सं
 तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साह, भाहेरव
 महाविदेहे अ । सव्वेसि तेसि पणओ, निविहे
 निर्दंअविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए
 भव-सय-सहस्समहणीए । चउवीसजिणविणिग्गय
 हाइं षोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम संगलमरि
 ता, सिद्धा साह सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी दे
 दितु समाहिं च योहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं क
 किष्साणमकरणे पडिअमणं । असहणे अ तथा, वि

विपदात्तताम् ॥ ४८ ॥ गामेमि गमाममगो, गन्ने जीया
गमेषु मे । मिता मे गमभूषणसु, मेऽं मङ्गल न वेणई
॥ ४९ ॥ एदमं आलोदय . निदिष्य गरिष्य दुगे-
तिमे गममे । निदिष्टेण पटिपंनो . ददामि जिणे पउ-
त्थामे ॥ ५० ॥

गां दो दय " तुमुगमगो " द.० पादिये को दय
दय गममा मे " गमभूषणसु " एद मी वाना पादिये

इच्छामि गमाममगो ! ददिठे लायणिज्जाण नि-
योदिआण अणुलाणा मे मिहमाहे । निर्मादि । अहो-
कारे वायसंवासे गमणिज्जो मे विट्ठामो अप्पचिं-
माणं पट्टमुभेग मे, दिवसो यइपंनो, जन्मा मे जयणिज्जे
ण मे, गामेमि गमाममगो देवमिगे यइपमे आय-
मिरयाण, पटिपमामि गमाममगाणे देवमिआण आ-
मायणाण निर्भायसाराण जं विणि मिच्छाण मणदुष्-
हाण ययदुष्हाण कायदुष्हाण कोहाण माणाण मायाण
लोभाण सव्यकालियाण, सव्यमिच्छोचाराण सव्यप-
ग्माइदमणाण आमायणाणओ मे अइआरो कओ तम्म
गमाममगो ! पटिपमामि निंदामि मिरिहामि अप्पणां
योमिरामि ॥ १ ॥

काव कायण मे ही गदेम, वा नीचे लिखे हुए पाठ को
देखना चाहिये—

इच्छाकारेण मंदिमह भगवन् ! अञ्जुष्टिमोम्हि,
अविमंनर देवसिअं स्वामेअं? इच्छं स्वामेमिदेवसियं॥१॥

उक्त पाठ को ध्यान कर गोइयाँ चामन में बैठ कर कर्ण
हाथ से मुद्रपत्ती को मुग पर रख कर तथा दाहिने हाथ को गुह
के सम्मुख रख कर “ अञ्जुष्टिमो ” शोचना चाहिये—

जं किंचि अपत्तिगं परपत्तिगं भस्ते पाण्ये विण्ण
वेआयवे आलावे संलावे उच्चासणे समामणे अंतरभा-
साण उवरिभासाण जं किंचि मज्झ विणयरिहोणं
सुहुमं वा वायरं वा तुभे जाणह अहं न जाणामि
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे दो बार ‘सुगुहवांणा’ देनी चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिअं जावणिज्जाणं निसी-
हिआण अणुजाह मे मिअगहं निसीहि अहोकायं काय-
संकासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसु-
भेण भे दिवसो वइक्कंनो। जत्ता भे जवणिज्जं च भे स्वा-
मेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं। आवरिसआण पडि-
क्कमामि खमासमणाणं देवसिआण आसायणाणं तित्ति-
सन्नयराणं जं किंचि मिच्छाणं मणदुक्कडाणं वयदुक्कडाणं
कायदुक्कडाणं कोहाणं भाणाणं मायाणं लोभाणं सब्ब-
कालिणं सब्बमिच्छोवयाराणं सब्बवग्गाइक्कमणाणं आ-
सायणाणं जो मे अइआरो कअो तस्स खमासमणो।

પરિષ્કામિ નિન્દામિ તરિણમિ અણ્યાણં યોમિ-
રામિ ॥ ૧ ॥

આ કે રીતે " અણિદિવસવચ્ચ " એ વચ્ચેના વારિદે—

આપરિષ્કામણ, મીમે આપમિત્તુ કુલમણે અ ।
જે મે વેદ વચ્ચાણ, મધ્યે નિરિદેણ ત્રામેમિ ॥ ૧ ॥
મધ્યમ મમત્તમેચ્ચત્ત મમચ્ચો ડંડલિ કરિજ મીમે ।
મધ્ય ત્રામાદના, ત્રામામિ મધ્યમ અહરંપિ ॥ ૨ ॥
મધ્યમ જીવરાતિમ્મ આવચ્ચો ધમ્મનિરિઝનિરિણ-
નો । મધ્ય ત્રામાદના, ત્રામામિ મધ્યમ અહરંપિ ॥ ૩ ॥

આ કે રીતે " યોમિ મે " એ વચ્ચેના વારિદે—

કરેમિ મેમે! ત્રામાદરં ત્રાવચ્ચં જોમે પરરત્રામિ,
જાણ નિવચં વજ્જુવામામિ, દુવિતં નિરિદેણં મમેગં વા-
ચાણ વચ્ચણં, મ કરેમિ ન પરરેમિ તત્તમ મેમે! પરિષ્કા-
મામિ નિન્દામિ તરિણમિ અણ્યાણં યોમિરામિ ॥ ૧ ॥

આ કે રીતે " રુચ્છામિ ટામિ " એ વચ્ચેના વારિદે—

રુચ્છામિ ટામિ વાટમ્મગં જો મે દેવમિથો અદ્-
ધારો વાટો વાટચો વાટચો માણમિજો ઉમ્મુત્તો ઉ-
ન્નમ્મગો અજ્જણો અજ્જણિજો દુડ્ડમાચ્ચો દુવિચિવિતિજો
મજ્જાપારો અણિનિરિઝન્યો અનાવગપાટગો માણે તદ્-
દમણે તરિણાપરિણે સુણ મામાદણ । નિજંદે સુત્તીણં
વરુણં વચ્ચાણાં વંચજ્જમણુવચ્ચાણં નિજંદે સુણાવચ્ચાણં

पामं, जिणं च चंदप्यहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्पदंतं,
 शीघ्रं निजं च वासुपुत्रं च । विमलमणंतं च जिणं,
 धम्मं वेदिं च वेदामि ॥ ३ ॥ कुंतुं चरं च मद्धि, वेदे
 मुणिरुज्जये नमिजिणं च । वेदामि रिद्धेमि, पामं मह
 पट्टमार्गं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिपुत्ता, विहपरयमला
 पहीण-जर-मरणा । चड्ढासंपि जिणपरा, नित्थपरा मे
 परोपंतु ॥ ५ ॥ किन्निपवेदियमहिषा, जे ए लोमस्स
 उन्नमा सिद्धा । आग्गपोत्तिताभं, समाहिषरमुत्तमं
 दिनु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइसेसु अहिपे पया-
 सपरा । मागरपगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

सव्यलोए अरिहंतचेइआणं वारेमि वाउरसग्गे ॥ १ ॥

वेदंणयत्तिआए पूअणयत्तिआए सत्तारयत्तिआए
 सम्माणयत्तिआए पोत्तिआभवत्तिआए निम्यसग्गव-
 त्तिआए सट्ठाए मेहाए पिटेए पारणाए अणुप्पेहाए
 पट्टमार्णाए टामि वाउरसग्गं ॥ १ ॥

अत्तन्ध उत्तमिण्णं नीसमिण्णं खासिण्णं स्त्रीएण
 अंभाइण्णं उट्टुएणं पायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-
 प्पाए सुट्टुमेहिं अंगसंघालेहिं, सुट्टुमेहिं ऐजसंघालेहिं,
 सुट्टुमेहिं दिट्ठिसंघालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गे
 अपिरादिओ उट्टु मे वाउरसग्गे । जाय अरिहंताए

पउण्हे निग्गयाययाणी पारमणिद्दस्स मावगयम्मम्म उं
पेहिणं जं यिगहिणं तम्म मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

उक्त पाठ को शेष का “ पारमणुदिनेनित्तं कोमि जाउ
स्सगं ” कहें इसके पीछे “यम्म उ०/१” बोलना चाहिये—

तम्म उन्नगिकरणेणं पापनिच्छत्तकरणेणं विमोरी-
करणेणं विमट्ठाकरणेणं पापाणं कम्माणं निग्गयायगट्ठा-
ठामि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे “ अन्नत्थ ” बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊमसिण्णं नामसिण्णं त्थामिण्णं ह्योणं
जंभाङ्गणं उद्धुण्णं वायनिसग्गेणं भमन्दिणं पित्तमु-
च्छाणं । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि खलसंन-
लेहि सुहमेहि दिट्ठिसंचालेहि । एवमाङ्गहि आगारेहि
अभग्गो अचिरादिओ हृज्ज मे काउस्सगो । जाव अ-
रिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे दो “ लोगम्म ” का अर्थ आठ नवरत्न
का काउस्सग करना चाहिये । इस के पीछे दर्शनशुद्धि के निमित्त
प्रकटरीति में “ लोगम्म ” बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरि-
हंते कित्तइस्से, पउवासेपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिमे
अ वंदे, संभवमभिणंदणं अ सुमइं अ । पउमण्हं सु-

પાસે, જિગં ચ વેદામિતં વેદે ॥ ૬ ॥ સુવિદિં ચ પુષ્કરંતં,
 મોહ્યતઃ મિત્રેભ્ય પાતુપુષ્પં ચ । વિમલમગંતં ચ જિગં,
 વમ્મં સેવિં ચ વેદામિ ॥ ૭ ॥ કુંથું અરં ચ મદિદ્, વેદે
 મુળિતુલ્યયં નમિજિગં ચ । વેદામિ રિદ્ધનેમિ, પાસં તદ્
 યદ્દમાર્ગં ચ ॥ ૮ ॥ એવં મળ અભિધુઆ, વિદ્યપરમલા
 પદ્મિણ-જર-મરણા । ચતુર્થાસંપિ જિગ્મયરા, તિલ્થયરા મે
 વસોયંતુ ॥ ૯ ॥ કિલ્પિયંદિયમદિપા, જે એ લોગસ્ત
 ઉત્તમા મિદ્ધા । આરુગ્યવોદિલાભં, મમાદિયરમુત્તમં
 દિતુ ॥ ૧૦ ॥ વેદેસુ નિમ્મલયરા, આદ્યેસુ અદિયં વ્યા-
 મયરા । સાગરવસંભોગા, મિદ્ધા મિદ્ધિ મમ દિસંતુ
 ॥ ૭ ॥

સવ્યલોએ અરિહંસચેદધ્યાનં કરેમિ કાઝસ્સગં ॥ ૧ ॥

વેદગ્યવલ્લિધ્યાએ પૂજગ્યવલ્લિઆએ સન્મારયલ્લિધ્યાએ
 સન્માગ્યવલ્લિઆએ વોદિલાભવલ્લિઆએ નિચ્યમગ્યવ-
 લ્લિધ્યાએ મદ્ધાએ મેદ્ધાએ ધિર્દેએ ધારણાએ અણુપ્પેદ્ધાએ
 ધટ્ટમાર્ગાએ ટામિ કાઝસ્સગં ॥ ૧ ॥

અસન્ધ ડમ્મસિણં નીમસિણં સ્વાસિણં દ્વીણં
 જંભાદણં ઉટ્ટદુણં વાયનિસંગેણં ભમલિએ પિત્તમુ-
 વ્વદ્ધાએ સુદ્ધમેદિં અંગસંચાલેદિં, સુદ્ધમેદિં રોજસંચાલેદિં,
 સુદ્ધમેદિં દિદ્ધિસંચાલેદિં, ગયમાદ્ધાદિં આગારેદિં અભગ્ગો
 અવિરાદિધ્ધો દુજ્જ મે કાઝસ્સગો । જાવ અરિહંતાય

इम के पीछे " अमम " बोधना चाहिये—

अमम उमसिणं नीसमिणं एवसिणं धीणं
 अममिणं उडुणं पापनिसग्गोणं भममिणं विसमुच्च-
 णं सुहमेहिं अममंपालेहिं सुहमेहिं सेलसंपालेहिं,
 सुहमेहिं दिट्ठिमंपालेहिं, एवमममिणं आगारंहिं अममगो
 अविराहिओ ह्वं मे काउम्मगो । जाव अरिहंताणं
 भगवताणं नमुकारेणं न पारेमि ताव कापं ठायोणं मोणेणं
 भाणेणं अप्पाणं सोसिरामि ॥ १ ॥

इम के पीछे एक " सोगम्म " का अर्थ चार नवकार का
 काउम्मग करना चाहिये । काउम्मग पाठके "सिदायं बुदायं"
 को बोधना चाहिये—

मिद्धाणं बुद्धाणं, पारमपाणं परंपरमपाणं । लोम-
 न्गमुंयगपाणं, नमो सप्पा मज्जमिद्धाणं ॥१॥ जे देवा-
 न्नि देवो, जं देवा पंजत्ती नमंस्संति । तं देवदेवमहिं
 मिरमा वंदे महारथारं ॥ २ ॥ इत्थोपि नमुकारो, जिणवर-
 पमहम्म वट्ठमाणस्स, संसारसागराप्पो, तारेइ नरं थ
 नारिं या ॥ ३ ॥ उच्चिन-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणे नि-
 र्महिआ जरम । तं घम्मण्णवहिं, अरिट्ठनेमि नमंस्सामि
 ॥ ४ ॥ अत्तारि अट्ठ दस दां, य वंदिया जिणवरा अउ-
 प्पीछं । परमहनिट्ठिअट्ठा, सिट्ठा सिद्धिं मम दिस्सु ॥५॥

सुयदेवयाए करेमि काउस्सगां ।

अन्नत्थ ऊससिण्णां नीससिण्णां खासिण्णं द्वीएणे
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु
च्छाए सुहुमेहि ॥ १ ॥
सुहुमेहि दिट्ठिसं

अविराहिणो हज्ज मं काउस्सगा । जाव आरहणाय
भगवन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं
क्कायेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नयकार का काउस्सग करना चाहिये,
यदि गुरुजी न हों तो एक श्रावक यहा काउस्सग को पार कर “न-
मोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुम्य” इस वाक्य को कह कर
नीचे लिखी हुई स्तुति को बोले—

सुवर्णशालिनी देवात्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा ।
श्रुतदेवीं सदा मद्य-मशोपश्रुतसम्पदम् ॥१॥

इस स्तुति को मुनने के बाद सब लोग काउस्सग पारें, इस
के पीछे “सुयदेवयाए करेमि काउस्सगां” इस वाक्य को बोल
कर पूर्व लिखे हुए “अन्नत्थ” को बोलना चाहिये, तदनन्तर
पूर्व के समान एक नयकार का काउस्सग पार कर नीचे लिखी हुई
स्तुति को बोलना चाहिये—

पामां क्षेयगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।

जिनाशां साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो गह कर एक नवकार को पहना चाहिये , तथा संडासा का प्रमाणन करते हुए बैठ कर उन्हें भावस्थ की मुद्रा की पड़िलेदन करना चाहिये , मुद्रा की खोल्क भगाड़ी रख कर दो बार बारना नीचे प्रणामे देना चाहिये—

इच्छामि स्वमासमणो! यदिंउ जायणिज्जादं निसी-
हिआणं अणुजाणहं मे मिउगाहं। निर्माहि। अहोकार्यं
कायसंकासं स्वमणिज्जां मे किलामो अप्पविल्लमाणं
पट्टसुभेण भे, दिवसो वट्ठत्तां, जत्ता भे जयणिज्जं न भे,
सामेमि स्वमासमणो देवमियं वट्ठत्तं आयसिसुयाणं
पट्टिप्पत्तामि स्वमासमणाणं देवसिआणं आमायणाणं नि-
सीसत्तपराणं जं किंचि मिच्छाणं मणदुक्कहाणं वणदुक्कहाणं
कायदुक्कहाणं कोहाणं माणाणं मायाणं सोभाणं सुव्व-
कालिणाणं, मव्वमिच्छोवपाराणं मव्वधम्माइकमणाणं
आमायणाणं जो मे अइआरो कप्पो मस्स स्वमासमणो!
पट्टिप्पत्तामि निंदामि गिरिहामि अणाणे वामिरामि ॥ १ ॥

(यदि वरगण गच्छे न किये हो तो वा। पर उसे ले
लेना चाहिये) इस के पश्चात् “ इच्छामो चरुमहि ” इस को
बोल्न कर नीचे बैठ बना चाहिये वा। पर यदि गुरुजी विद्वान
हों तो नीचे लिखी हुई “ गमोऽनु वर्तमानाव ” की एक गाथा को
बोले— नहीं हो तो शायद नीचे प्रणामे बोले—

नमोऽर्हसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।

तज्जयावासमोक्षाय, परोक्षाय कुनीधिनाम् ॥ १ ॥

येषां चिकित्साविन्दराज्या ज्यायःक्रमकमलावर्ति
दधत्या । सदृशैरति सङ्गतं प्रशस्यं, कथिनं सन्तु शि
ष्याय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापादितजन्तुनिर्मुक्ति
करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भव
ष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥

तथा श्राविकाओं को “ संसारदावा ” की तीन पाया में
बोलना चाहिये—

संसारदावानलदाहनीरं, सम्मोहबूलीहरणे समी
रम् । मायारसादारणसारसोरं, नमामि वीरं गिरिमा
रपीरम् ॥ १ ॥ आयाचनामसुरदानवमानवेन, घूलाविलो
लकमलायलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमीदि
तानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ कं
धागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिसावि
रमलहरीसद्गमागाहदेहम् । धूलावेलं गुरुगममगीमं
कुण्डं दूरपारं, मारं धीरागमजलनिधिं सादरं साधु सं
॥ ३ ॥

इस के पीछे “ नमोऽस्तुभ्यं ” बोलना चाहिये एक इन्द्र
जीने सिधे इन्द्र को बोले—

नमोत्पुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आङ्गराणं
 तित्थपराणं सपंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
 सीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
 ओगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं,
 ओगपओअगराणं ॥ ४ ॥ अमयदयाणं, चकखुदयाणं,
 मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
 धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरया-
 षरंतचवत्थदीणं ॥ ६ ॥ अप्पट्ठिहपवरनाणंदसणपरा-
 णं विपट्ठउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जाघपाणं निघाणं
 तारपाणं बुद्धाणं पोहपाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
 सच्चदूणं सच्चदरिसीणं सिवमपलमरुअमणेतमशखप-
 मव्यापाहमपुणरायित्ति सिद्धिगइनामपेयं ठाणं संप-
 ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइ-
 पा सिद्धा, जे अ भयस्सेतिउणागए काले। संपट्ठ अ पट-
 माणा , मज्जे तिबिहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छावारेण संदिमह भगवन् ! बृद्ध एवम-
 भवन् ॥

इस के पीछे आसन पर बैठ कर ' नमोऽरिहंताणाभ्योप-
 षट्पदमर्पणाभ्यः ' इस की बोध कर कमसे कम ११ गायत्राले
 स्तवन की कहना चाहिये किन्तु यदि ग्यारह गायत्रा बोलें स्तवन से

छिन्न को कलम लेता चले तो उस स्थान हो के-ले के ही
 " वदन्त " बोलना चाहिये —

ॐ परब्रह्मगर्भादिदम् परमात्मनो मन्त्रिं विना
 मोक्षं । सत्तमि मये जितानी, सदायामगुह्यं वदे मा
 ॥ २ ॥

यस स्थान जिताने का है सो वदना चाहिये—

श्री चिन्तामणिपार्श्वजिनमन्त्रनम् ।

भविष्य श्रीजिन विंश गुहाओं, आत्ममग्न आतां
 रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सागरी जागी, न
 करो शंका कोई । आगमयागां ने अनुमारे, रागां
 मोक्षि सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविषय स्वरूप
 न जाने, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञाने
 भरिया, नहिं निहां तत्त्व विद्वाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥
 अम्बइ आवक श्रेणिक राजा, रायण समुख अनेक ।
 विविध परें जिन भगनि करंता, दाम्या धर्म विवेक रे
 ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा यह भगनें जोतां, होय
 निश्चय उपगार । परमास्थ गुण प्रकटे पूरण, जो जो
 आर्द्रकुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा आकार
 जलघर, छे यह जलधि मज्झार । ते देखी बहुला न
 स्पादिक, पाय्या विरति प्रकार रे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ पाँचमे

अंगे जिनप्रतिमा नो, प्रकट पणे अधिकार । सरपाभ-
सुरे जिनवर पूज्या, रायपसेणी मज्झार रे ॥ भ० ॥ श्री०
॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन-
राज । एहवा आगम अरथ मरोही, करिये केम अ-
काज रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ समकित धारी सती द्रौपदी,
जिन पूजा मन रंगे । जो जो एहना अरथ विचारो,
उठे ज्ञाता अंगे रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरें जिन
जिनवर पूज्या, कीधी निज धिर राखी । द्रव्य भाव
विहूँ भेदें कीनी, जीवाभिगम हे साखी रे ॥ भ० श्री०
॥ ९ ॥ इत्यादिक एहु आगम साथें, कोई जड्ढा मन कर
जो । जिनप्रतिमा देखी निज नयनों, प्रेम घणां निज
धरजो रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ चिन्तामणि प्रभु पास पमा-
ये; सरपा ही जो सवाई । श्री जिनलाभ सुगुरु उप-
देशो, श्री जिनचन्द्र सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पीछे एक एक रामसुन्दर से आचार्य उपाध्याय और
सर्व साधुओं को वन्दन कर फिर चौथा स्वामिमण दकर नीचे लि-
खे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । देवसिपपायवृष्टि-
सिमुदिनिमित्तं काउत्सगं करूं । इच्छं, देवसिपपा-
वृष्टिस्तद्विमुदिनिमित्तं करेमि काउत्सगं ॥ १ ॥

उत्तम कोई अज्ञान वेत्ता जेने ओ नल अज्ञान को देखे दे दे
 " वनानन्द " वंशना गदिदे—

ॐ धरकलापमंगनिरुप सागगातममहिरे विना
 मोदे । मलरि मरी जिगाती, मन्थामगुडभे की मल
 ॥ १ ॥

अप अज्ञान विना जगा दे दिने देखना गदिदे—

श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनमन्यनम् ।

भयिकु श्रीजिन पिय जुहागे, आत्ममय्य आभा
 रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सागरी जागी,
 करो शंका काई । आगमयागों ने अनुमारे, मल
 प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविषय हक
 न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञा
 भरिया, नहिं तिहां मत्त्व पिद्धाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥
 अम्पह आवक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक
 विविध परे जिन भगनि करंता, पाग्या धर्म विवेक
 ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा यहु भगने जोनां, ह
 निधय उपगार । परमारथ गुण प्रकटे पूरण, जो
 आर्द्रकुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा आव
 जलधर, छे यहु जलधि मज्जार । ते देखी यहुटा
 स्थादिक, पाग्या विरति प्रकारे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ पां

अंगे जिन प्रतिमा नो, प्रकट पणे अधिकार । सरपाम-
 सुरे जिनवर पूज्या, रायपसेणी मज्झार रे ॥ भ० ॥ श्री०
 ॥ ६ ॥ दशमै अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन-
 राज । एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये केम अ-
 काज रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ समकित धारी सनी द्रौपदी,
 जिन पूजा मन रंगे । जो जो एहनो अरथ विचारो,
 छटे ज्ञाना अंगे रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरें जिम
 जिनवर पूज्या, कीधी चित्त धिर राखी । द्रव्य भाव
 यिहूँ भेदें कीर्ना, जीवाभिगम छे माम्बी रे ॥ भ० श्री०
 ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोई शङ्का मन कर
 जो । जिन प्रतिमा देखी निन नबलो, प्रेम घणो चित्त
 धरजो रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ चिन्तामणि प्रभु पास पस्ता-
 पे; सरथा हो जो सवाई । श्री जिनलाभ सुगुरु उप-
 देसो, श्री जिनचन्द्र सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पाछे एक एक समासमग से आचार्य उपाध्याय और
 सर्व साधुओं को वन्दन कर फिर चौथा स्वामिमग देवर नीचे लि-
 खि हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिपपायच्छि-
 त्वित्सुद्धिनिमित्तं काउस्सगं वरुं ? इच्छे, देवसिपपा-
 यच्छित्त विसुद्धिनिमित्तं करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

ए के पीछे " अद्रव्य " चेतना चाहिये—

अद्रव्य ऊर्ममिणं नीममिणं त्वामिणं पी-
णं जंभाङ्गणं उङ्गुणं वायुनिमग्गेणं भ्रमलिए नि-
त्तमुत्ताणं । सुहमेहि अंगमं नालेहि सुहमेहि सेवसे-
पालेहि सुहमेहि दिट्ठिमं नालेहि । एवमाङ्गहि मागा-
रेहि अभग्गो अविगट्ठिआं ह्य मे काउस्सग्गो । जार-
अरिहंताणं भगवन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं माणेणं अप्पाणं वोमिरामि ॥१॥

इस के पीछे चा " लोगस्स " का या मोलह नक्कार का
काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार कके प्रगट लोगस्स
बोलना चाहिये—

लोगस्स उच्चोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहं-
ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केयली ॥ १ ॥ उस्सभमजिअं
च वंदे, संभयमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं,
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुण्फदंतं,
मीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं,
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंधुं अरं च महिं, वं-
मुणिसुच्चयं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तर-
बद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुआ, विहपरयमल-
पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणयरा, तित्थयरा मे

पर्याप्तं ॥ ५ ॥ कित्तिपबंदिय महिया, जे ए लोगसस
उत्तमा सिद्धा । आम्हगयोहिलाभं, समाहियासुत्तमं
दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आहयेसु अहियं पपा-
मपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिममदिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छाकारंग मंदिमह भगयन् ! खुहोयहय उडा-
वगन्थ करेमि काउस्मगं ॥ १ ॥

इम के पीछे " भगयन् " बोलना चाहिये -

असन्ध ऊसमिण्णं नाममिण्णं खासिण्णं ह्याण्णं
जंमाइण्णं उड्डुण्णं वायनिसगोण्णं भमलित्ठं पित्तमु-
च्छाण्णं । सुहृमेहि अंगसंचालेहि सुहृमेहि खेलसंचा-
लेहि सुहृमेहि दिट्ठिसंचालेहि । पञ्चमाइण्णि आगारेहि
अभगो अविराट्ठिओ हज्ज मे काउस्मगो । जाव अ-
रिहंताणं भगयंताणं नमुक्कारेणं न पारमि, माथ कापं
टाण्णेणं मोण्णेणं हाण्णेणं अप्पागं थोमिरामि ॥ १ ॥

इम के पीछे पाठ " लोगस्म " का अथवा मोलह नये-
का का काउस्मग काना चाहिये । इम के बाद लोगस्म थोमनां
होना चाहिये -

लोगस्स उज्जाअगरे, धम्मनित्थपरं जिणे । अरि-
हंते वित्तहस्से, चउदीसंवि वेयली ॥ १ ॥ उमभमज्जिअं
च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउमण्हं सु-
पासं, जिणं च वंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,

सीधल सिद्धंस यासुपुत्रं च । विमलमर्गतं च नि
 घर्मं संनि च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंतुं अरं च महि
 मुणिसुख्यं नमिजिणं च । वंदामि रिद्वनेमि, पासे
 वेद्वमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुमा, विद्वपर
 पदीण-जर-मरणा । नउवांसपि जिणयरा, तित्य
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिपयंदियमहिपा, जे ए लं
 उत्तमा सिद्धा । आरुगणोहितभं, समाहिवा
 दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइचेसु जहियं
 सपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम
 ॥ ७ ॥

इस के पीछे एक समासमय की दे कर बोलना चाहि

इच्छाकारण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन

श्री थंभणापार्श्वनाथजी का चैत्यवन्दन

श्रीसेवातटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ,
 श्रीरूपाभयदेवसुरिविवुधाधीशः समारोपितः ।
 संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिष्यफलैः स्फूर्जत्कणापह
 पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनो वाञ्छित
 आधिष्ठाधिहरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः ।
 पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥

इस के पश्चात् पूर्व लिखे हुए “नमोत्तयुग्मं” इत्यादि ।

लना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए “ जायंति चेद्भयं ”
 यदि पाठ को बोलना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए “ जा-
 केवि साहू ” इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तत्पश्चात् “ न-
 ईरिसिजावापौवाध्यायसर्वेस्तधुम्य ” इस वाक्यको बोल कर पीछे
 लिखे हुए “ उन्सर्गहरस्तदन ” को बोलना चाहिये, इस के पीछे
 लिखे हुए “ जय बीरराय ” इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये,
 के पश्चात् समाप्तमय को देकर तथा मस्तक को नम्रा कर नीचे
 लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

सिरिधंभण्यष्टिपपाससामिणो सेसतित्यसामीणं ।
 न्यसमुद्रह कारणं, सुरासुराणं च सव्येसि ॥ १ ॥
 स अहं सरणन्धं काउस्तगं करेमि सत्तोए ।
 लीए गुणसुष्टिपस संघसस समुद्रह निमित्तं ॥ २ ॥
 श्रीधंभणापार्श्वनाथजी आराधया निमित्तं करेमि
 उस्तगं ॥ १ ॥

बंदणवत्तिष्माणं पूजणवत्तिणं सकारवत्तिष्माणं
 म्माणवत्तिष्माणं पोहिलाभवत्तिष्माणं निग्यसग्गव-
 णाणं मद्दाणं मेद्दाणं धिईणं धारणाणं अणुप्पेद्दाणं
 द्दुमाणीणं ठामि काउस्तगं ॥ १ ॥

असत्थं जससिणं नीससिणं यासिणं छीएणं
 भाइएणं उहूहूएणं वापनिमग्गेणं भमलिणं पित्तमु-
 द्दाणं सुहमेहि पंगमंचालेहि, सुहमेहि खेलसंचालेहि,

सुदुमेहिंदिद्विसंचालेहिं, एवमाहं हि आगारेहिं अभमं
अधिराहिंओ हृज्ज मे काउस्सगो । जाय अरिहंता
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोपे
क्कायेणं अप्पाणं धोसिरामि ॥ १ ॥

इम के पीछे चार " लोमम्म " का या मोलन नदर
काउस्सग करना चाहिये, काउस्सग पार करके प्रगट होकर
मोलना चाहिये --

लोमस्स उज्जोअगरे, धम्मतिन्धारे जिणे । जति
ते कित्तइस्सं, चउयोमं पि केवला ॥ १ ॥ उसभमंजि
य धंदे, संभवमभिणंदणं च सुमडं च । पउमप्पहं सुण
जिणं च चंदप्पहं धंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुण्णं
सीअलमिच्चंम यासुपुच्चं च । विमलमणंनं च जि
धम्मं मेत्ति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंयुं अरं च महिं
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पामं
वट्ठमाणं च ॥ ४ ॥ एवमए अमिधुआ, बिहपरए
पहीणंजरंमरणा । चउयोमं पि जिणायरा, तित्थया
वसायंतु ॥ ५ ॥ कित्तिगंधदियमहिवा, जे ए लो
उत्तमा मिट्ठा । आरगयोहिलाभं, ममाहिंयरसु
दिंतु ॥ ६ ॥ धंदेसु निम्मलगरा, आइंघेसु अहिंयं
सया । मागएगंभागा, मिट्ठा मिट्ठि मम दि
॥ ७ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

श्रीचोरासीगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भेदा-
रक दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी चारिप्रचूडामणि जी
आराधवानिमित्तं करेमि काउस्मगं ॥ १ ॥

इस के पीछे “अन्नत्थ” बोलना चाहिये

अन्नत्थ उमस्सिणं नीसस्सिणं चामिणं छं-
णं जंभाइणं उड्डुणं वायनिमग्गेणं भमलिणं पि-
नमुच्छाणं । सुहुमेहि अंगमंचालेहिं सुहुमेहि गेलसं-
चालेहिं सुहुमेहि दिट्ठिमंचालेहिं । पथमाइणहिं आगा-
रेहिं अभग्गे अविगहिंओ हज्ज मे काउस्मग्गे । जाय
अरिहेत्ताणं भगवन्ताणं नमुक्काणं न पावेमि, ताव कायं
आणेणं मोत्तेणं भाणेणं अप्पासं धाम्मिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक “लोगम्म” का अथवा चार नवकार का
काउस्मग करना चाहिये । काउस्मग पाठान्ते पीछे एक
“लोगम्म” को बोलना चाहिये -

लोगम्म उल्लोअगरे, भम्मनिन्धगरे जिणे । अरि-
हेत्ते किनहरसे, चउर्यामं पि वेवली ॥१॥ उमभमजिअं
च वेदे, संभवमभिणंदगां च सुमहं च । पउमप्पहं सुपामं,
जिणं च चंदप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंसं,
माअलमिअंसं वासुपुअं च । विमलमणंसं च जिणं,
भम्मं मेहिं च वेदामि ॥ ३ ॥ कुंठु अरं च महिं, वेदे

मुणिसुख्यं नमिजिणं च । वंदामि रिद्वनेमि, पामं नद
 वद्वमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुआ, विद्वयरयमला
 पहीणजरमरणा । चउदीसं पि जिगावरा, निन्धयरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिय महिया, जे ए लोगस्स
 उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोद्धिदाभं, समाद्वियरमुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आचेसु अद्वियं पया-
 सयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा मिद्वि मम दिमंतु
 ॥ ७ ॥

श्रीचौरासांगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भद्र-
 रक्तदादाजी श्रीजिनकूगलमूरिजा चारित्रचूडामणिजी
 आराधना निमित्तं करेमि काउस्मगं ॥ १ ॥

इस का काउस्मग की विधि उक्त मुजब जाननी ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! चैत्यवन्दन कस्सी ?

चउक्कसायपडिमहुल्लूरणु, इज्जयमयणयागामुसुम-
 रणु । मरमरियंगुवहुं गयगामिउ, जयउ पास भुवण-
 त्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तरुंकंतिकडप्पसिणिद्वउ
 सोहह फणमणिकिरणालिद्वउ । नं नवजलहर तडि-

उ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च मिद्विस्थिताः ।

जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।

श्रीसिद्धान्तसुपाटका मुनिवरा रत्नप्रचाराधकाः,

पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्यन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥

इस के पीछे पूर्व लिखे हुए “नमोस्तुभ्यं” इत्यादि पाठ से
से कर “जय वीपराज” इत्यादि पाठ तक समस्त पाठ बोलना चा-
हिये । इस के पीछे यदि दीपक का अथवा बिजली का प्रकाश
पड़ा हो तो “ इरिषावहिषा ” करना चाहिये—

इरिषावहिषं का पाठ, तस्स उत्तरी का पाठ, अन्नत्थ का पाठ बोल
कर एक “ सौमस्व ” का अथवा चार नवकार का काउत्सग्य
करना चाहिये, काउत्सग्य पार कर के “सौमस्व” प्रकट रीति से
बोलना चाहिये, फिर सामायिक को पारना चाहिये, वह प्रकट में
सामायिक पारने की विधि प्रदाये पार सेना चाहिये । तथा दाशबी
का नीचे लिखा हुआ स्तवन को बोलना चाहिये—

॥ श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज का स्तवन ॥

दर्शन पाया पाया दर्शन पाया रे, कुशलसूरीश्वर
राय तुम्हारे ॥ ६० ॥ टेक ॥

मन्त्री जिह्मागर पिना तुम्हारे जेतमिरी है माना
रे । सहुरु राया गोत्र में ह्यापा ह्याजेइ जाया रे ॥ ६०
॥ १ ॥ ज्ञान दास्तादि गुण मे अलंकरण और्य सुवंश
दिपाया रे । अनेक उषारे मुझ को उषारो गोत्रीय
आया रे ॥ ६० ॥ २ ॥ स्थान स्थान में परया तुम्हारा
सहृ मन भाया रे । निरलि निरर्षी गुरु चरय तुम्हारे

हृदय न माया रे ॥ ८० ॥ ३ ॥ अग्नि आग्नि गुरुगज तु-
 म्हाते भविजन को सुख दाया रे । तेमे अग्नि में जीम
 नमा के आनन्द पाया रे ॥ ८० ॥ ४ ॥ अग्नि की मेरा
 कर्म खपेया गुरुवर दयाया रे । स्थायी रु संगत गाथो वा-
 ओ वांछित माया रे ॥ ८० ॥ ५ ॥ कर जोड़ी ने अन्न
 में करता मनु सकल सुख दाया रे । जिन आत्मन उ-
 जवालो म्यामी जय जयहार बर्ताया रे ॥ ८० ॥ ६ ॥
 साक्षिण्यकारी चित्रनिवारी पूर्ण गुरु को पाया रे । सुख
 सागर ने झील झील के क्षेमार्णव गुण गाया रे ॥ ८० ॥ अ
 ॥ इति देवभिर्यदिक्रमलपिथि संपूर्ण ॥

दशवीं पाठ ।

पञ्चस्वाण-वर्णन ।

दिन के प्रत्याख्यान ।

जो अनुव्य चौदह नियमों को सम्मिलित हो उसे नीचे लिखे
 अनुसार प्रत्याख्यानों को करना चाहिए, तथा यदि वह पौरोषी आदि
 का प्रत्याख्यान करना चाह तो उसे "नवकारसहिषं" के स्थान में
 "पौरोषी" आदि शब्दों को बोलना चाहिये ।

नवकारसी का पञ्चस्वाण ।

उत्तम मरे नमुकारसहिषं मुद्रिसहिषं पञ्चस्वाण ।

- ११ - आहारं-असणं पाणं स्वाहमे साहमे अपशत्पणं

सहस्रागारेणं पञ्चषण्णकालेणं दिसामोद्रेणं साहु-
 येणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं विगह्मो पयसस्य
 अन्नत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं लेखालेयेणं गिहत्थ-
 सिद्धेणं उक्खित्तवियेगेणं पट्टचमत्तिपणं, महत्तराग-
 रेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वोत्तिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साठ पोंगरी के द्रव्यान्त्याज को जानना चाहिये ।

पुरिमड्ड अवड्ड का पञ्चक्खाण ।

सुरे उग्गए पुरिमड्डं अवड्डं वा पचक्खाइ चउच्चि-
 हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणा-
 भोगेणं सहस्रागारेणं पञ्चदन्नकालेणं दिसामोद्रेणं साहु-
 वयणेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वि-
 गह्मो पचक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं लेखा-
 लेयेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उक्खित्तवियेगेणं पट्टचमत्ति-
 पणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वोत्तिरामि
 ॥ ३ ॥

एकासण त्रिआसणा का पञ्चक्खाण ।

पोरिसिं साठपोरिसिं वा पचक्खाइ उग्गए सुं
 चउच्चिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण-
 त्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं पञ्चदन्नकालेणं दिसामो-
 द्रेणं साहुवयणेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं एकास-

विश्वासं वा पचस्वाह द्रुविहं निविहं पि आहारं असणं
 साहमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागा-
 रिआगारेणं आउट्ठणपसारेणं गुरुअन्मुट्ठाणेणं पारि-
 ठायणियागारेणं महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिपागा-
 रेणं विगईओ पचस्वाह अण्णत्थणाभोगेणं सहसागा-
 रेणं लेकालेदेणं गिहत्थमंसिद्वेणं उक्खित्तवियेगेणं पटु-
 पमक्खिण्णं, महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं
 बोसरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पचस्वाण ।

पोरिसि साट्ठोरिमि वा पचस्वाह उग्गए सूरु
 पडव्यिहं पि आहारं असणं पाणं स्वाहमं साहमं
 अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं
 दिसामोहेणं माटुपण्णेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं
 एकसणं एगट्ठाणं पचस्वाह द्रुविहं निविहं पडव्यिहं पि
 आहारं असणं स्वाहमं साहमं अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअन्मुट्ठाणेणं पारिठाय-
 णियागारेणं महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं
 विगईओ पचस्वाह अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं ले-
 कालेदेणं गिहत्थमंसिद्वेणं उक्खित्तवियेगेणं पटुपमक्खि-
 ण्णं, महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं बोसरामि
 ॥ ५ ॥

आंवल का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि सादपोरसि वा पञ्चस्वाड उगण सुरे व
 चउच्चिहंपि आहारं असणं पाणं स्वाडमं साडमं अण
 त्थणाभोगेणं सहसागारेणं पछण्णकालेणं दिममोहेणं
 साहुययणेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं आयंदिणं प
 कखाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं मि
 त्थसंसिद्धेणं उच्चित्तयियेणं पारिट्ठावणियागारेणं
 महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं प
 कखाइ तिचिहंपि आहारं असणं स्वाडमं साडमं अण
 त्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्ठण
 सारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्त
 रागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरड ॥६॥

नीवी का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि सादपोरसि वा पञ्चस्वाइ उगण सुरे व
 च्चिहंपि आहारं असणं पाणं स्वाडमं साडमं अण
 णाभोगेणं सहसागारेणं पछण्णकालेणं दिसामोहेणं
 हुययणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं निच्चिगइये
 कखामि अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
 हत्थसंसिद्धेणं

पञ्चकखाइ तिविहंपि आहारं-असणं खाइमं
साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगा-
रेणं आउट्ठणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पच्छसकालेणं म-
हत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वोत्तिरामि ।

चउट्ठिहाहार उपवास का पचक्खाण ।

सुरे उग्गण अम्भत्तट्ठं पचक्खामि चउट्ठिहंपि आ-
हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं
सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं
वोत्तिरामि ॥ ८ ॥

तिविहाहार उपवास का पचक्खाण ।

सुरे उग्गण अम्भत्तट्ठं पचक्खामि तिविहंपि आहारं
असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसा-
गारेणं पाणद्वारपोरिसिं सादपोरिसिं पुरिमट्ठं अयट्ठं
या पचक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
पच्छसकालेणं दिसामोहेणं साहुयण्णेणं सव्यसमाहि-
वत्तिपागारेणं वोत्तिरामि ॥ ९ ॥

दत्ति पचक्खाण

पोरिसिं सादपोरिसिं पुरिमट्ठं अयट्ठं या पचक्खामि
उग्गण सुरे चउट्ठिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छसकालेणं

दिसामोहेणं साहुचयणेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं
 एगासणं एगट्ठाणं दत्तिधं पच्चक्खामि तिविहं चउच्चि-
 हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थ-
 णाभोगेणं सहसागारेणं सामारिआगारेणं गुरुअञ्जु-
 णेणं महत्तरागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-
 भोगेणं सहसागारेणं लेवालेत्वेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उ-
 क्खित्तविद्धेणं पट्टमक्खिएणं महत्तरागारेणं सञ्च-
 समाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥२०॥

रात्री के पच्चक्खाण ।

चउच्चिहाहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउच्चिहंपि आहारं असणं
 पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
 महत्तरागारेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ।१।

दुविहाहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि दुविहंपि आहारं असणं
 खाइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं
 सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥ २ ॥

पाणहार का पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगे

र्णं सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमादिवत्तिपागा-
रेण बोसरामि ॥ ३ ॥

॥ ग्यारहवाँ पाठ ॥

। स्तवनसंग्रहः ।

। अथ श्री सहस्रगुणाष्टक ।

भजामि पूज्यं च नमामि नित्यं,

वक्ष्यामि भक्त्या प्रणतान्तरात्मा ।

पथाभिधानं किल सहस्रणीयं,

तस्य स्वरूपं शुभभायभाष्यम् ॥ १ ॥

पिता कुलीनश्च मनःसुखालयः,

सुशीलधर्मा जननी हि जेती ।

आद्वीदप्यंशः सुखलालसञ्जो,

ग्रामः प्रसिद्धः सरसेति नाम्ना ॥ २ ॥

प्राब्रह्मचारी जिनधर्मरागी,

सम्पत्त्वधारी चिरतिप्रभायी ।

संयज्य संसारमसारमृद्धी,

रक्षाकराख्यस्य गुरोश्च पार्श्वात् ॥ ३ ॥

चारित्र्यमादाय सदा विहारी,

विनाऽतिथारं पतिधर्मधारी ।

भीमान् जिताक्षो गुणभूमपोतं,

संसारपाराय परं दधार ॥ ४ ॥

सुबुद्धिसङ्गी कुमतिप्रणाशी,
 खलप्रबोधी शुभमार्गदर्शी ।
 सार्थानि सूत्राणि पपाठ धीरः,
 गजेन्द्रतुल्यो वचनेषु वीरः ॥ ५ ॥
 रराज नित्यं करुणैकपात्रं,
 जीवोपकारी सुखसागराख्यः ।
 सत्पार्थिवस्तु सुजनाभिनन्द्यः,
 साधुप्रभावोजिह्वतमोहमायः ॥ ६ ॥
 भ्रन्तारिपून् पाद्यपरिग्रहादीन्,
 त्यागी निरागी भविशर्मकारी ।
 जगत्प्रसिद्धो बहुमानधाम,
 एभिर्गुणैः सन्त्यमाजगाम ॥ ७ ॥
 ध्यानाङ्गपमिन्धो हरिमासुपेत,
 आनन्ददार्थी शुभमायमसिम् ।
 कुर्यन्ति लोका नयनच्यमिद्धि,
 ते बह्वर्भा ये द्रुतमासुवन्ति ॥ ८ ॥

गिरिनिर्गमस्तम्—

मुहूर्त्तां वक्ष्यामि मतिशुभगुणाचारमरणि,
 गगाभीश ! स्थामिन् ! युगपद्वयदधे भवन्ति
 कथं मोहास्या मे तव शुभगुणा महलकराः,

गुरोः पूर्णान्वेषे चरणयुगले क्षेमनमनम् ॥६॥

श्री कुशलसूर्यष्टकम् ।

शेखरिणी—सुखं सर्वां सम्पद्वसति पदयोरेष्य वदने,

विनिद्रा घागीशो हृदयकमले संविदधिक् ।

विरागः सर्वद्वेष्यपि च भगवद्भक्तिरनिशं,

समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥

निशि स्वापाधीनं हानुदिनमधीनौ समयिनं,

परं घाणीलक्ष्म्यो-र्निलयमपि तद्दाननिपुणौ ।

सदा यौ वर्तन्ते जयत इव पाथोजयुगलं,

समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥२॥

क्षिपन्तौ तौ प्रेक्षां सरसिग्रह्योर्धौ मृदुलयोः,

जपापुष्पाभासौ किसलयजिताशेषमहसौ ।

लसल्लेखालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीसदनयोः,

समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥३॥

सुरेभ्यः स्वःस्थेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमयो,

कदाचिदस्ते द्राक् श्रियमपि दरिद्राय परमाम् ।

सुरष्टुं त्यक्त्वा यौ बुधजनसुतेष्वौ सुविगती,

समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४॥

सुररीत्यागन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,

१ “ परकमजयोः क्षेमशरत्नम् ” इति पाठान्तरम् ।

सदा कामं पीतामृतसरांशोरपि गिरः ।
 श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिराणि
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥२॥
 तिथी सर्वश्रीणामनधिकरणी सर्वविदां,
 मृदुस्निग्धो शाणाद्युपचिन्तनखी गूढबुद्धिः ।
 समानी मोक्षद्वन्द्वपदशाखाविलसितो,
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥३॥
 ययोरर्चो हने घनसुखधरा धामरमणी,
 शरीरारोगत्वं विनयनयविद्यानिपुणताम् ।
 गुणानां दार्पादानपि तनयलक्ष्म्यौ तनुभृतां,
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४॥
 भयंकारागारामयसमरपारिन्ध्रफणभृन्-
 महापाराचारद्विरदवनदैश्वानरभवम् ।
 न ढाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं घत्स्मरणतः,
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥५॥
 । शार्दूलविक्रीडितम् ।

इत्थं श्रीजिनपद्मसुरिरचितं दिव्याष्टकं सङ्गृह्यते
 पुण्यं मन्त्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंस-
 भक्त्या यः पठति प्रभानसमये सर्वत्र तस्य
 वरपा भूपतयो भवन्ति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी

धीगौतमदेवस्तवनम् ।

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोप्र-
 भम् । स्तुवन्ति देवाः सुरमानवेन्द्राः, स गौतमो यच्छ-
 वाञ्छितं मे ॥ १ ॥ श्रीशर्द्धमानात् त्रिपदीमयाप्य,
 हर्तमात्रेण कृतानि येन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्द-
 शानि, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ २ ॥ श्रीवीर-
 षायेन पुरा प्रगीतं, मष्टं महाऽऽनन्दसुखाय यस्य । ध्या-
 न्त्यमी सुरिधराः समग्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं
 मे ॥ ३ ॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रम-
 यस्य काले । मिष्टाक्षपानाम्परपूर्णकामाः, स गौतमो य-
 च्छतु वाञ्छितं मे ॥ ४ ॥ अष्टापदार्द्रा गगने स्वशक्त्या,
 त्र्यो जिनानां पदबन्धनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरे-
 ष्यः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ५ ॥ त्रिपञ्चसे-
 द्वाशततापसानां, तपःशृशानामपुनर्भवाय । अक्षी-
 णालब्ध्या परमाह्वदाता, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे
 ॥ ६ ॥ रुदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधमिकं सहस्रप-
 र्ययेति । कैवल्यवर्त्रं प्रददी मुनीनां, स गौतमो यच्छतु
 वाञ्छितं मे ॥ ७ ॥ शिर्षगते भर्त्सरि वीरनाथे, पुण्य-
 धानत्वमिदं मत्वा । पद्मभिषेको विदधे सुरेन्द्रैः, स
 गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ८ ॥ यत्सोपमपीजं शुभञ्जा-

नपीजं, परमात्मपीजं परमेष्ठिपीजम्। यन्नाममन्त्रं विदो
सुरेन्द्रेः, स गीतमो गच्छन्तु वाञ्छितं मे ॥९॥ श्रीगो-
तमस्वाष्टकमादरेण, प्रयोधकादे मुनिपुङ्गव ये। पठन्ति
ते हरिपदं मदैयाऽऽनन्दं लभन्ते सुवरां कमेय ॥१०॥

श्रीगुरुगुणस्तवन ।

श्रीजिनदत्त के चरणों में आया चरणों में आया गुरु श्री-
स नमाम्य ॥६॥ बाढग मंत्री पिता कहाया बाहूँ देवी
उपरै जाया ॥ श्री ॥१॥ हृष्यइ पंश में आप सुहाया स-
कल जीव हरपाया ॥ श्री० ॥२॥ गच्छ चौगसी में शृ-
ङ्गार हारां युगप्रधान पद छाया ॥ श्री० ॥३॥ देश देश
में परचा पाया सकल संघ सुखदाया ॥ श्री० ॥४॥ चरण
चरणों ग्रही आज उमाया तारो मुझ को अनेक तराय
॥ श्री० ॥५॥ हर्ष घरी दिल काय मुक्ताया नमि नमि
अर्ज मैं लाया ॥ श्री० ॥६॥ ध्यावो ध्यावो संघ दि-
हर्षाया पावो वाञ्छित माया ॥ श्री० ॥७॥ उद्रामसर
दर्शन पाया आनन्द हर्ष पधाया ॥ श्री० ॥८॥ वीरचौ
बीसे वर्ष पायाला चैत्र चौथ सुदि आया ॥ श्री० ॥९॥
कृपाभिलाषी सहगुण दाया सुखसागर मन भाया ॥
श्री० ॥१०॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया क्षेमसागर गुण
गाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

१ जन्म महोत्सवस्तवनम् ।

आनन्द लाया अङ्ग न माया हर्ष वधाया रे (देक) ।
प्रभु का जन्म हुआ जब इन्द्र से आदेश पाया रे ।
रेणुगमेयी देव ने जाकर धननन घंटा पजाया रे
आ० ॥ १ ॥ सच देवों ने जान लिया सही मेरु शि-
र पर आया रे । पञ्च रूप धरि वीर प्रभु को इन्द्र
नय से लाया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जन से आपूरित
लश को देखे सन्देह दिल में आया रे । नीर प्रवाह
जावेंगे लघु है इन का काया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अ-
धेज्ञान से जान लिया प्रभु अनन्त बली महा राया
चामाहुठे मेह दयाया धर हर कर कंपाया रे ॥ आ०
॥ ४ ॥ अवधि लगा कर देख लिया बल प्रभुजी को नह-
या रे । अपराध क्षमावे काय भुक्तावे नमि नमि लागे
या रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ गाया गाया मङ्गल गाया प्रभु
रखी हरपाया रे । विधिवं भक्ति कर के इन्द्र जननी
से लाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ दैलोक्यनाथ हरि सुख-
री पूरण प्रेम बढ़ाया रे । सकल संघ मिलि जय जय
लो क्षेमानन्द को पाया रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

१ श्री पार्श्वप्रभुस्तवन ।

श्रीद्वयवासु प्यारो है छेनन मारा निरखत हर्ष

अंगार है लौद्रव० (देक) नीराम अतिगम जोभना है
 प्रभु चे० पार्ष्णीय पार्ष्णी गुणगान है ॥ लौद्रव० ॥ १ ॥
 पार्ष्णीय पार्ष्णी अमलधेरी है प्रभु चे० लौद्रवगार मज्जा
 है ॥ लौद्रव० ॥ २ ॥ देवविमान जिमों पन्नों है प्रभु चे०
 मन्दिर अति सुगन्धार है ॥ लौद्रव० ॥ ३ ॥ अमल
 गुणे करी दीनता है प्रभु चे० मदम कला श्रीगाम है
 ॥ लौद्रव० ॥ ४ ॥ महिमा मुनि के आविषों है प्रभु चे०
 संघ सकल पदु ठाठ है ॥ लौद्रव० ॥ ५ ॥ भय नाटक
 करता पका है प्रभु चे० आगों श्रीदरवार है ॥ लौद्रव०
 ॥ ६ ॥ दीन की यिननी धारमों है प्रभु चे० भयमागर
 धी तार है ॥ लौद्रव० ॥ ७ ॥ संघ में मंगल कीजिये है
 प्रभु चे० विधि यन्दन करे नाथ है ॥ लौद्रव० ॥ ८ ॥
 धीर पार्ष्णीय पार्ष्णीय माय है प्रभु चे० मार्गदार सुदि
 सुधार है ॥ लौद्रव० ॥ ९ ॥ पशुमोदिषमे भेंटिया हो है
 प्रभु चे० आनन्द अंगन माया है ॥ लौद्रव० ॥ १० ॥
 क्षेमसागर प्रभु प्रेमसुं है प्रभु चे० मांगे अविचलराज
 है ॥ लौद्रव० ॥ ११ ॥

श्री नेमिनाथस्वामि-स्तवन ।

नेमी जिणेंद स्वामिन् चरणों में अथ तो लेलो ॥ देक ॥
 कृपानिधे कर भेलो अर्जों दया कर लेलो ।

संसार पार मेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १ ॥

राता बही बना दो सुखी सदा बना दो ।

आपो विरुद्ध सुन लो चरणों में अथ तो लेलो ॥ २ ॥

गिरनार तीर्थ आया मन है सदा सुहाया ।

आनन्द हर्ष भरेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ३ ॥

मुख चन्द्र को मैं देखा निर्मल शान्त पेरया ।

नासाध ध्यान तिथेला चरणों में अथ तो लेलो ॥ ४ ॥

ऐसी हृदय में रेखा कमौ की होगी रेखा ।

भव पार होगा बेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ५ ॥

मुक्ति से कर के मेलो राजकुल को मेली पैला ।

पशु पर दया करेला चरणों में अथ तो लेलो ॥ ६ ॥

अथ तो मुझे भी तारो घेबल के अंश दारो ।

कुछ ध्यान इधर भी देलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ७ ॥

अन्तः सन्ध सुधारो यह विनयी स्वीकारो ।

दुःखी सदा बनेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ८ ॥

अन्तिम प्रार्थना करता आशानना से उरता ।

दयालु दीन बनेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ९ ॥

संयत् दृष्टीमें बीतर भाष सुबला है सुखोत्तर ।

एकम को आया बेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १० ॥

गुरुवर्ष पूर्णमासर तच्छिद्य हेमसागर ।

धारणी शरण में लेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ११ ॥

श्रीअजितजिन-स्तवन ।

(आघा आम पधारो पूज्य ए देशी)

अजित जिनेश्वर चरण नी सेवा एया एहूँ हलियो
रे, कहिये अणनाख्या रस अनुभवरस नो टाणो मि-
लियो॥ प्रभुजी मेर करी महाराज काज अमारा सारो,
अहो म्हारा प्रभुजी अहो म्हारा जिन जी, गिरबा द्यो
गरीम नियाज भवजल पार उतारो ॥१॥

मुकायो पण हँ नवि मूकूँ चूकूँ ए नवि टाणो रे । भक्ति
भाव उछो जे अन्तर ते केम रहै सरमणो ॥ प्र० ॥२॥
लोचन शान्त सुधारस सुभगां मुख मटकाहूँ प्रसन्न
रे । योगमुद्रा नो लटको चटको अतिशय नो अतिषड
॥ प्र० ॥३॥ घालकालिमा धार अनन्ती सामन्ती नवि
जाग्यो रे । यौवन काले ने रस चाखण तूँ सामरथ
प्रभु मांग्यो ॥ प्र० ॥४॥ पिण्ड पदस्थ रूप सब लीनो
चरण कमल तुझ ग्रहीयो रे । भमर परे रसस्वाद क-
खानो घरसो काँ करो महियो ॥ प्र० ॥५॥ तूँ अनुभव
रस देया समरथ हँ पण अर्धी तेनो रे । चित्त बित्त
ने पात्र सम्पन्धे अजर रह्यो हवे कहनो ॥ प्र० ॥६॥
प्रभुजी ने मेहर ते रस चाख्यो अन्तरंग मुख पाम्यो रे ।
मानविजयवाचक शमि जंघे हुयो मुझ मन काम्यो ॥ प्र० ॥७॥

श्रीपार्श्वजिन स्तवन ।

शिषपुर घासी परमविलासी तारो पारसनाथ, अब
मोहे तारो (देख)

सर्व नागणी जलते प्रभु दिया नयकार सुनाय ।
परिणन्द पडमावई बनाए ऐसे श्रीजिनराय ॥ १ ॥
हो शिष० ॥ नीलवर्ण तनु शोभतो रे परमानन्द प्रका-
श । चोतराग विकाशी ऐसे नहीं देखा प्रभु पास ॥ २ ॥
हो शिष० ॥ भव नाटक मैं पहुला करतो आपो प्रभु-
दरपार । परमकृपा के सागर निरखे सुखकर श्रीहि-
कार ॥ ३ ॥ हो शिष० ॥ भवसागर में भमर धर्म से
हृष रही मेरी जाज । दीन दयालु दया करी तारो तारक
तुम जिनराज ॥ ४ ॥ हो शिष० ॥ कमौ ने मुझे ऐसा
कैसाया धर्म कर्म दिया रोक । श्रीदरपार में आन खड़ा
हूँ दूर करो सप ही शोक ॥ ५ ॥ हो शिष० ॥ संवत् गु-
रीसे त्रयोत्तर गृष्ण फाल्गुन दशमी सार । फलोदी
नगर में दर्शन पाया किम्व है अति मनोहार ॥ ६ ॥ हो
शिष० ॥ पारसनाथ सुपारस तुम ही लोहा है यह
क्षेम । चरण शरण मही आज उमापो पूर्णानन्द सु-
धेम ॥ ७ ॥ हो शिष० ॥

अथ सप्तशान्तिस्तवः ।

शान्ति शान्तिनिशान्ति, शान्ति शान्तिनिशान्ति ।

स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥
 ध्योमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।
 शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनान् ॥ २ ॥
 सकलातिशेषकमहासंपत्तिसमन्विताय शस्याय ।
 त्रिलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥
 सर्वांमरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिनाय । सुव
 नजनपालनोद्यत-तमाय सननं नमस्तरमै ॥ ४ ॥
 सर्वदुरितीघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय । द्रष्ट
 ग्रहभूतपिशाचशक्तिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति
 नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कु
 जनहितमिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भव
 नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते । जप
 जिते जगत्यां, जयनीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्व
 स्थापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे । साधून्
 च सदाशिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यनि
 कृतसिद्धे, निर्घृतिनिर्वाणजननि ! सत्यानाम् । अभ
 प्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्त
 नां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुच्यते देवि ! । सम्यग्
 ष्ठीनां धृति-रतिमनिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशास्
 ननिरतानां, शांतिननानां च जगति जननानाम् । श्र
 संपत्कीर्तिपशा-वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥

सलिलानलविषदिपथर- इष्टमहाराजरोगरक्षभयतः ।
 लक्षसरिपुगणमारी , श्रीरनिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥
 अपरक्षरक्षसुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदे-
 ति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु स्व-
 म् ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशान्ति-तुष्टिपुष्टि-
 स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो
 हौं ह्रीं हूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्याद्वा ॥ १४ ॥ एवं
 यन्मामाक्षरपुरस्तरं संस्तुता जया देवी । कुम्भे शान्तिं
 नमनां नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वसुरि-
 दर्शित-मंत्रपदविदर्भिनः स्तवः शान्तेः । सलिलादिभ-
 यविनाशी, शान्तिपादिकरश्च भक्तिमत्ताम् ॥ १६ ॥ यद्य-
 नं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् । स
 दि शान्तिपदं यायात् , सुरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
 उपसर्गाः क्षयं यान्ति क्षिप्रं विघ्नयद्दयः । मनः प्रस-
 र्जनामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमां-
 गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रदानं सर्वदमाणां , जैनं
 जयति शासनम् ॥ १९ ॥

॥ अथ श्रीगौडीपाद्वर्जिन गृहस्तवन लि० ॥

॥ दोहा ॥

पाणी प्राच्यादिनी, जागे लगविद्यात ।

पासतणा गुण गायतां, गुण गुण परगुणं घात ॥ १ ॥

नारंगो अहगिजपुरे, अहिमदायादे पास ।

गौडीनो भणी जागनो, महुरी पूरे आस ॥२॥

सुम बेला सुभदिन घडा, महुरम एक मंडाग ।

प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

गुणहि विशाला मंगलक माला, यामानो तु
साचोजी । घण कण कंचण मणि माणक दे, गौडी
घणी जाचोजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ अणदिलपुर पाटण मां
प्रतिमा, तुरक तणे घर हुंनोजी । अश्वनी भूमि अ
नी पीडा, अश्वनी वालि बिगूनी जी ॥ गु० ॥ ५ ॥ जा
तो जद जेहनै कहिये, सुदणो तुरकनै आपैजी । पा
जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापै जी ॥ गु० ॥ ६ ॥
महज्जोने परगट करजे, मेया गोडीने देजे जी । अहि
म लेजे ओछो म लेजे । टक्का पांचस लेजे जी ॥ गु०
॥ ७ ॥ नहीं आपिस तो मारीस मुरडोस, मोर्य
बंधास्पाजी । पुत्र कलत्र धन ह्य हाथी तुम्ह, ला
घणी घर जास्पैजी ॥ गु० ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुम
मिलस्ये, साद्वचाह जे गोठीजी । निलवट टीलो चोर
चोट्या, वस्तु वही तसु पोटी जी ॥ गु० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनसुं पीहनो तुरकडो, मांनै वचन प्रमाण ।

दीर्घने सुहणा तणो, संभलावै सहि नाण ॥१०॥

पीपी मोले तुरबने, यदा देव है कोय ।

अप सनाय परगटकरो, नहीतर मारै सोय ॥११॥

पाउली रात परोहीगै, पहली पंघे राज ।

सुहणा माहें सेठने, संभलावै जदराज ॥१२॥

॥ दाल ॥

एम कहो जक्ष आयो राते, सारथचाहुने सुहणें
जी । पास तणी प्रतिमा तुंलेजे, लेतो मिरमत नूणे जी
॥ एम० ॥ १३ ॥ पांचसै टक्का संहने आपे, अधिको म
आपिस बास्जी । जतन यरी पहुंचाडे धानिक, प्रतिमा
पुण संभारैजी ॥ एम० ॥ १४ ॥ सुझने होसी पहु कल-
दापक, भाई गोठीने सुणजे जी । पूजोस मगमाश तेह-
नापाया, महुडतीने पुणजे जी ॥ एम० ॥ १५ ॥ सुहणो
देईने सुरचाल्यो, अपने धानक पहुनोजी । पाटण माहिं
मारथचाहु, हीडे तुरबने जोनोजी ॥ एम० ॥ १६ ॥ तुरक
जार्ना दीठो मोठी, पोण्या तिलक दिलाट जी । संकेत
पहुनो माणो जाणि, पोलावै पहुलाट जी ॥ एम० ॥ १७ ॥
मुक्त घरि प्रतिमा तुझनें आगुं, पास जियेसर केरीजी ।
पांचसै टक्का जो मुक्त आपै, मोल न मागुं केरीजी ॥
एम० ॥ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा देई, धानक पहुनो
रंगैजी । केतरचंदन गुगमद पोली, बिपरुं पूजा रंगैजी

॥ એમ૦ ॥ ૧૯ ॥ ગાદો રુઠી રુની કીળી, તે માંદિ
પ્રતિમા રાલૈ જી । અનુક્રમ આગ્યા પરિકર માંદે, ઓસં
ઘને સુરસાલૈ જી ॥ એમ૦ ॥ ૨૦ ॥ ઝોચ્ચ દિન દિન
અધિકા થાયે, સત્તર ભેદ સનાયો જી । ટામરના દા-
સણ કરવા, આવૈ લોક પ્રમાનો જી ॥ એમ૦ ॥ ૨૧ ॥

॥ દોહા ॥

ઇકદિન દેલૈ અવધિસું, પરિકરપુરનો ભદ્ર ।
જતન કરું પ્રતિમા તળો, તીરથ અઢે અભંગ ॥૨૨॥
સુહણો આપૈ સેઠને, થલ અટવી ઉજ્જાડ ।
મહિમા થાસૈ અતિ ઘણી, પ્રતિમા તિહાં પુહચાડી ॥૨૩॥
કુશલ સેમ તિહાં અઢે, તુમ્કને મુક્તને જાણિ ।
સંકા છોડી કામ કરિ, કરતો મકરિ સંકાણિ ॥૨૪॥

॥ દાહ ॥

પાસ મનોરથ પૂરા કરૈ, ઘાહણ એક દુષ્પ્રભ જોનૈ
। પરિકરથી પરિયાણોં કરૈ, એક થલ ચઢિ યોજો
ઉતરૈ ॥ ૨૫ ॥ ચારૈ કોસ આગ્યા જેતલૈ, પ્રતિમા નવિ
ચાલૈ તેતલૈ । ગોઠી મનહ વિમાસણ થઈ, પાસ મુક્ત
મંદારું સહી ॥ ૨૬ ॥ આ આટવી કિમ કરું પ્રયાણ,
કુદરો કોઈ નદીસે પાદાણ । દેવલ પાસ જિનેસર તળો,
મંદારું કિમ ધરથે વિણો ॥૨૭॥ જલ વિન ઓસંગ
રહસૈ કિહાં, સિલાયડો કિમ આવૈ દહાં । ચિંતાનુર

पयो निद्रा लहे , पक्षराज धावीने फहे ॥२८॥ गंगली
 ऊपर नांणो जिहां , गरथ घणो जाणि जे तिहां । स्व-
 त्तिक सोपरी सहीनांण , पाहाण मणी उहट्टरये खाण
 ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ , अमृत जल
 नीसरसी कृओ । खाराकूवा मलो इह सही-
 नांण , भूमि पट्टो द्वे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सि-
 लाबटो सीरोदि वसै , कोद पराभवियो किस
 मेसै । तहां थकी तूं इहां घाय जे , सत्पयपन मा-
 हो मानजे ॥ ३१ ॥ गोडीनो मन धिर थापियो ।
 सिलाबटने सुदणो दिपो । रोग ममाउने पूरं घास । पास
 णो मंडे आवास ॥३२॥ सुपन मांदे मान्यो तं वैण,
 मवरण देखाट्यो नैण । गोडी मनह मनारप हुआ ,
 सिलाबटने गपा तेदया ॥ ३३ ॥ सिलाबटो आवै
 इरमो , जामे खोरसांडघूत घुरमो । घटें घाट करै
 मोरणी , लगन भलै पापा रोपणी ॥ ३४ ॥ भेम २
 जिथी पूनयो , नाटक कीतुक करनी रली । गंग मणह-
 । रलियामगो रसै , जोसां मानवनो मन वसै ॥३५॥
 गोपायो पूरं प्रासाद , स्वर्गसमो मंडे आवास । दिवस
 पणाली ईण्टो घट्यो , ममसिग्न देवट ऊपर बड्यो ॥३६॥
 तुम लगन शुभ विला वास , पट्यासन पैठा धीपास ।
 रहिमा मोटी मेर ममान , गकलमिल वगडे रहै थान

॥ ३७ ॥ घात पुराणी में सांभली , तबन मांदि मुँ
सांकली । गोठी तणा गोतरीया अछै , यात्रा करीने सँ
पछै ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघनबिडारण यक्ष जगि , तेहनो अकल सरूप ।
मीन करै श्री संघने , देखाडै निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गौडी पास जिन , आपै अरथमंडार ।
सानिध करै श्रीसंघने , आसा पूरणहार ॥४०॥
नील पलाणै नील हृय , नीलो धड़ असवार ।
मार्ग चूका मानवी , पाट दिखावणहार ॥४१॥

॥ ढाल ॥

घरण अद्वार तणो लहै भोग , विघन निबोर दै
रोग । पवित्र धई समैर जे जाप , टालै सगला पा
संताप ॥४२॥ निरघनने घरि घननो सूत , आपै अ
पुत्रीयाने पुत्र । कायरने सुरापण धरै , पार उतारै
छडी धरै ॥ ४३ ॥ दोभागोने दै सोभाग , पग बिहण
आपै पग । ठाम नहीं तेहने दै ठाम , मन बंछित पूरै अमि
राम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दै आधार , भवसापर उ
पार । आरतीयानि आरत भंग । धरै ध्यान ते ल
सुरंग ॥४५॥ समरथा सहाय दीये यक्ष राज ,
अछै दिवाज । बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश ,

धन विलास ॥ ४६ ॥ दुखिपाने सुखनो दातार, भय
जग रंजण अवतार । धन तूटै बेडी तणा, श्री
ध्वनाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपै, विश्वानर विकराल ।
दुखिपूथ दूरे टलै, दुर्द्वैर सिंह सिवाल ॥ ४८ ॥
धर तणा भय चरुवै, विष अमृत उडकार ।
विष भरनो विष ऊनरै, संग्रामे जयजयकार ॥ ४९ ॥
रोग सोग दालिद्र दुख, दोहण दूर पुलाय ।
परमेश्वर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ टाल ॥ (कहखानी चाल)

उंजिनु २ उंज उपसम घाँ, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व
अक्षर जपेनै । भूतने घेन भोटिंग धर्मरसुरा, उषस-
धार इक्ष्वांस गुणतै ॥ ५० ॥ ५१ ॥ दुर्द्वैररोग सोगा जरा
तने, साथ ऐकांगरा दुत्तपेनै । गर्भधन मणं सर्प
वेच्छू विपं, पालिका पालमेया कसंतै ॥ ५० ॥ ५२ ॥
साहगी झाड़णी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष
तै । दाद उंदर तणी कोल नोला तणी, स्याम सीपाल वि-
कराल दंतै ॥ ५० ॥ ५३ ॥ धरणेंद्र पद्मायनी समरशोभा-
यनी, पाट आघाट अटवी अटनै । लखभी लीला मिलै
तुजस चेलाउठै, सफल आसा फल मन हसंतै ॥ ५०

॥५४॥ अष्ट महाभय हरे कानपीटा टलै, ऊनै
 सोसंग भणतै । घदतुं घर मीतसुं प्रीति विमल प्र
 पास जिण नाम अभिराम मनै ॥ उजिनु ॥
 इति श्रीगोडी पार्यनाथजी वृद्ध स्तवन सम स

गौतमस्वामी का छंद ।

घर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम ज
 शदिस । जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर
 नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिघर चंद
 वाञ्छित लीला संपर्ज । गौतम नामे नावे रोग,
 नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जै घेरी बिरुआ बकड
 नामे नावे टुकड़ा । भूत-प्रेत नवी मंडे प्राण, ते
 ना कहूँ बखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे नीरमल
 गौतम नामे बाधे आय । गौतम जिन शासन श
 गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल
 घृत गोल, मन वाञ्छित का पड़त योल । घरधे
 निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
 उदयो अविषल भाण, गौतम नाम अपो जग
 मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सकल
 ॥ ६ ॥ घर मंगल घोड़ानी जोड़, थारु बिलहे ।
 कोड़ । महिपल माने मोटा राय, जो तुठे ।

॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरे कानगोरा टल, उतोर
 सीमग भगनै । यदत्त वर प्रीतार्तु प्रीति विमल प्रभु,
 पाम जिण नाम अभिगम मनै ॥ उज्जिनु ॥ ५५ ॥
 इति श्रीगोर्धा पाठ्यनाथजी गृद्ध स्मरण मम स्तु ।

गोतमस्वामी का छंद ।

धीर जिनेश्वर केमं जिष्य, गोतम नाम जयो मि
 शदिस । जां कीजे गोतम नां ध्यान, नां घर चित्त
 नवे निधान ॥ १ ॥ गोतम नामे गिरिधर चंदे, म
 वाञ्छित लीला मंजरे । गोतम नामे नावे रोग, गोत
 नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे धरी चिरुआ बंकडा, त
 नामे नावे दृकडा । भूत-धैरु नवी मंदे प्राण, ते गोत
 ना कहं बह्वाण ॥ ३ ॥ गोतम नामे नीरमल क
 गोतम नामे बाधे ध्याय । गोतम जिन शासन शणगा
 गोतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुर
 घृत गोल, मन वाञ्छित का पडन थोल । घरमं घर
 निरमल चित्त, गोतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गोत
 उदपो अबिचल भाण, गोतम नाम जपो जग जाण
 मोटा मंदिर मेरु समान, गोतम नामे सफल विहा
 ॥ ६ ॥ घर मंगल घोड़ानी जोड़, बारु बिलहे वाञ्छि
 कोड़ । सहियल माने मोटा राघ, जो तुठे गोतम

प ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिका दले, उत्तमै नरेनी
 तन मीले । गौतम नामे नीरमल ज्ञान, गौतम नामे
 ये धान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अवधारो सहु, गुरु गोतमना
 म छे सहु । कहें छावण्य समय कर जोड़, गौतम तुठे
 रति कोड़ ॥ ९ ॥ इति ॥

देसावगासी का पद्यस्वाण ।

धारक के तीन सामयिक मेरी हो तो तथा जिन्नी जवदा
 पषडनी हो तो उस की विधि—

उपामें में जा कर तथा घर के एकान्त स्थान में काम हो
 गो धन काजा निहान कर कटामण एक बानू मय कर कनास-
 मय देवे—

इच्छामि स्वमासमणो धेदिउं जावणिज्जाण निमी-
 हिष्माण मरपण यन्दामि ।

कह कर इतिगविष्ठा कां—

इच्छाकारेण संदिसह भगयन् । इरियावहियं प-
 टिकमामि ? इच्छं । इच्छामि पदिगमिउं, इरियावहि-
 पाण विराहणाण गमणागमणे पाणकषणे बीयडमणे
 हरिपक्रमणे ओमा लसिग पणगदग महीमऊला रंगा-
 ना संक्रमणे, ले मे जीवा विराहिया, एगिदिया, नेई-
 दिया, नेईदिया, पडरिदिया, वंदिदिया, एरिहिया,

वनिया, लेमिया, मंचाड्या, मंचाड्या, परिगकि
किलामिया, उड्याग, डागाओ डागं मंचामिया, ड
वियाओ यवगेविया तम मिर्यामि दृष्टं ।

तम उत्तमकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विमोहं
करणेणं विमोहकरणेणं, पायाणं कम्मणं निग्याय
हाण ठामि काउम्ममं ।

अन्नन्ध जममियां नीममियां ग्यासियां उ
णं जंभाडणं उड्डणं वायनिमग्गेणं ममलिणं
नमुच्छाण । मुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि से
चालेहि मुहमेहि दिट्ठिमंचालेहि । एवमाडणहि आ
मेहि अभागो अविगहिओ हुज्जं मे काउम्मगो । ज
अरिहंताणं भगवताणं नमुक्काणं न पारेमि, ताव क
ठाणेणं मोणेणं भूताणेणं अप्पाणं धोमिरामि ॥१॥

वा० न०का० १॥ एक लोगम्म का काउम्मग करे, काउ
मा पा० का० प्र० " लोगम्म " कहना चाहिये—

लोगम्म उज्जाअगरे, धम्मनिन्धये जिणे । अ
हंते किलहम्मं, चउर्यामं पि केवली ॥१॥ उत्तममज्जि
च वेदे, संभवमभिगंदणं च सुमहं च । पउमप्यहं सुपा
जिणे च चंदप्यहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुण्हं
सोअलमिअंम वासुपुज्जं च । विमलमंगंतं च जि
धम्मं संति च वेदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं

मुणिसुव्ययं नमिजिणं च । वंदामि रिद्वेनेमि, पासतह
 वदुमार्गं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुष्मा, विहपरयमला
 पहीणजरमरणा । चउदीसं पि जिणवरा, तित्थवरा मे
 पसोयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिय महिया, जे ए लोगस्स
 उत्तमा सिद्धा । आत्तगमोदित्ताभं, ममादिवरमुत्तमं
 दितु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलवरा, आइयेसु अहियं पया-
 मवरा । मागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

कि एह स्वाममण देव-इच्छाकोरेय सदिमह भगवन् देसा-
 पगामिद भेश मुँसपती पडिलेई , मुँसपती पडिलेवे . कि स्वाम
 ममण देव-देसापगामी गदिमई , दूसरा स्वाममण देव
 देसापगामी छई , तीन नवका गुणे , गुणव- इच्छाकोरेय
 मंदेमह भगवन् ! देसापगामी उचवगवो जी. उत का पाठ नीचे
 प्रमाणे—

अह जं भंते ! मुग्धाणं समीचे देसापगामिणं पच-
 फरामि दण्यणं लिखणं कालणं भावणं, दण्यणं
 जं देसापगामिणं, लिखणं यं उथया अणथया, काल-
 णं मुहसंधारणा प्रमाणे जाय निघमं पचफरामि ,
 भावणं जाय गट्टेण न गट्टिआमि , उल्लेणं न उल्लि-
 रमामि अण्णं वेत्तामि रायवेगवा, एमो परिग्गामो
 न पटिवमहसा अभिमाह अप्रत्यणाभागेण सहराणा-

लोगरसें उज्जायगरं, धम्मतित्थपरे जिणे । अरि-
 हंते कित्तइस्सं , चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उत्तमम-
 जिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउम-
 प्पहं सुपासं , जिणं च वंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
 पुप्फदंतं , सीअल मिअंस वासुपुअं च । विमलमणंतं
 च जिणं , धम्मं संनि च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंतु अरं च
 महि, वंदे मुणिसुअ्यपं नमिजिणे च । वंदामि विट्ठनेमि
 पासं तह चट्ठमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मग अमिघुआ ,
 विट्ठयपमला पहीणजरमरणा । चउअवीसं पि जिणवरा,
 नित्थपरामे पसांयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिप महिणा,
 जेण लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरगगयोहिताभं, समा-
 हिपरमुत्तमंदितु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलपरा, आइयेसु
 अहिपं पयासपरा । सागरधरमंभीरा, मिट्ठा सिद्धि मम
 दिसंतु ॥ ७ ॥

सिंह जयउ म मी यः पाठ बोलना

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह मेजुंजि
 उअंति एहु नेमिजिण जयउ पोर मणउरि-मंडण ॥ १ ॥
 भमअअण्य मुणिसुअ्यप, मुहरिपास दुह दुरिप-गं-
 हण । अयरविदेहिं जे निअपरा, विट्ठंदित्ति विदित्ति
 जे केवि । तीपाअणायप-संगइ य वंदूं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

संज्ञ नरकाय गुण के पापों कोने । एकामर्शो श्रीपामर्शो वा-
 शिव नी । एकलदातो पूरा भिरिगा नरकागमी पेंसमी माद
 रेंसमी शिवो पूरा चोबिहार कागिरे गाथा ऊपर प्रमाणे ।

॥ श्री वासक्षेप पूजा ॥

नमोऽर्हति सद्वाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

मार्गपनि परित नमं, भर्मभुरंभर भीरोर्जा ॥ देजना
 भमृनवरसना, निज घोरज यह धीरोर्जा ॥ उल्लासो ॥ वा
 भमृन निर्मल ज्ञान वासन, सर्वभाव प्रकाशना । निज
 गुट श्रद्धा आत्मभावं, परण भिरमा वासना ॥ निज
 नाम धर्म प्रभाव अनिजय, प्रानिहारज जांभना ॥ जग
 जेतु कलगावंत भगवंत, भविक जनने जोंभना ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं वासाम्भनेऽनन्तानन्तज्ञानावस्थायां जन्त
 जगामृन्मुनिवारणाय श्रीमच्चिनेन्द्राय अतिहंसपद् वास-
 नोरे यजामहे स्यात् ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ सकल करम सब क्षमकी, परण
 गुट स्वर्गोर्जा ॥ अद्यावाध प्रभुता मरी, भात्म
 रेंपनि भूयोर्जा ॥ १ ॥ (उल्लासो) जेह भूव भात्म
 महज संवति, जति, ह्यति, पणे की । स्वद्वय क्षेत्र
 मयकालभावे, गुण अमन्ता आदी । सुखभाव गुण
 पर्याय परिणति, सिद्ध साधन परभणी । मुनिगज

जलामृशुनिवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय चारित्र्यपदं वास-
शेनं यजामहे स्वाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेर्जा ॥
आत्म मत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे र्जा ॥ १ ॥
(उल्लास) उच्छेदे कर्म अनादि मंनति, जेह सिद्धपणु
ये । योग मंगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ।
अंतर मुहुरत तन्व माधे, सर्व संवरना करी । निज
आत्म मत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमान्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृशुनिवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय नमःपदं वास-
शेनं यजामहे स्वाहा ॥८॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन
नथा नव थुड ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय २ श्री अरिहंत भानु, भविकमल विकार्या ॥
लोकालोक अरुवि रुवि, राम दातु प्रकाश्या ॥१॥ न-
मुदूपात शुभ नैषर्दे, जगज्जल मलरार्या, शुक्र च-
रम शुनि पादसे, भगो घर अविनार्या ॥ २ ॥ अंतरंग
रिपुगण हर्षीण, हृद्य अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद वे
कजमे रमन, हारपास निज मंग ॥३॥ इति ॥ 'अकि-
णि नामनिर्भे'ने नमोऽर्जुन तव ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमच्चिनेन्द्राय ज्ञानपदं वामने
पञ्चामहे स्वाहा ॥३॥

नमोऽर्हत् ॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाश
भावेर्जा । पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावेर्जा
॥ १ ॥ (उल्लासो) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञान
बोधक भाव विलक्षण । स्यादाद-संगीनत्व रंगी
प्रथम भेदा भेदता । मविकल्पने अविकल्पयस्तु, सख
संगण भेदता ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमच्चिनेन्द्राय ज्ञानपदं वामने
पञ्चामहे स्वाहा ॥३॥

नमोऽर्हत् ॥ चारित्र गुण बन्दी बली नमो, तत्त्व
रमण जसु मूलोर्जा ॥ पर रमणीय पणुं टले, मन्त्र
सिद्ध अनुकूलोर्जा ॥१॥ (उल्लासो) प्रतिकूल आश्रय
भ्याग संजम, तत्त्व धिरता व्रम मयी ॥ शुनि पाम
ल्वनि मुनि दश पद, पंच संवर उपचर्या ॥ सामागिता
दिक भेद धर्म, गथाग्याने पूर्णता ॥ अकराय अ
नूप जमल उचल, काम कटमल वर्णता ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म

जसामृषुनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र्यपदं वाम-
क्षेत्रं पञ्चामोहं स्वाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, पाप अभ्यन्तर भेदेर्जा ॥
आत्म सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(उल्लासो) उच्छेदे कर्म अनादि मंतति, जेह सिद्धपणु
करे । पाप संगे आहार डाली, भाव अक्रियता करे ।
अंतर सुहरत तत्व भावे, सर्व संवरना करी । निज
आत्म सत्ता प्रगट भावे, करो नप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानम्यस्याय जस-
मृषुनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय नवपदं वामक्षेत्रं
पञ्चामोहं स्वाहा ॥९॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन
तथा नव थुड ॥

॥ अथ अग्रिमपद विन्यवंदन ॥

जग २ श्री अरिहंत भालु, भविरामन विकारमी ॥
लोकलोक अरुपि रूपि, सम वस्तु प्रकाशमी ॥१॥ स-
मुद्रागत शुभ पेशन, क्षणकाल मलरामी, शुद्ध स-
रस शुनि पादसं, भाषा वर अविनामी ॥ २ ॥ अंतरंग
रिपुगण दर्शण, हृद्य अल्पा अरिहंत ॥ तसु पद वं-
कजमें रमन, हीरघरम निज मंग ॥३॥ इति ॥ 'जकि-
नि नामनिष्ठे'ने नमोऽर्जत तक ॥

मृम्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र्यपदं वाम-
पञ्चामोऽस्याह ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, पात्र अभ्यंतर भेदेर्जा ॥
तप मना एवता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(लालो) उच्छेदे कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणु
रे । योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ।
अंतर मुहुरत तन्य भावे, सर्व संवरता करी । निज
आत्म मत्ता प्रगट भावे, करो नव गुण आदरी ॥
ॐ ह्रीं श्री परमान्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृम्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय नवपदं वामभोगं
पञ्चामोऽस्याह ॥९॥ इति
अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन. नव स्तवन
तथा नव थुड ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जग २ श्री अरिहंत भानु, भविकमल विकारसी ।
लोकांतोक्त अरुणि रुनि, सम पातु प्रकासी ॥१॥
मुदुषान शुभ वेचन, दापयूत मलरामी. शुक्र
रम शुनि पादेंसे, भगो पर अविनासी ॥ २ ॥ अम
रिपुगण हणीए, हृय अल्पा अरिहंत ॥ तसु पद
कजमें रमन, हारषाम नित संग ॥३॥ इति ॥ ३ ॥
नि नामनिर्णये नमोऽर्जित तप ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय नमः
जगत्सुनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय दुर्जनपदंशमर्श
नजामहे स्वाहा ॥३॥

नमोऽर्चन० ॥ मुख्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रसार
भावेर्ज्ञा । पर जग धर्म अनन्ता, भेदभेद स्वभावे
॥ १ ॥ (उल्लासो) जे मुख्य परिणति सरल ज्ञान
बोधक भाव विलक्षण । आद्याद-मोर्गीनम्य ह्रीं
प्रथम भेदा भेदना । अविच्छिन्नने अविच्छिन्नयामु, सा
मोजव भेदना ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय नमः
जगत्सुनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय ज्ञानपदंशमर्श
नजामहे स्वाहा ॥ ३॥

नमोऽर्चन० ॥ आदित्र गुण वर्त्ता मर्त्ता नमो, त
स्वरूप जगु मर्त्ताता ॥ पर स्वर्गाय वर्त्तु दृष्टे, सा
मिद अन्तर्ज्ञाता ॥ १ ॥ (उल्लासो) अविच्छिन्न अवि
च्छिन्न अविच्छिन्न, अविच्छिन्न अविच्छिन्न अविच्छिन्न ॥ अविच्छिन्न
अविच्छिन्न अविच्छिन्न अविच्छिन्न अविच्छिन्न ॥ अविच्छिन्न
अविच्छिन्न अविच्छिन्न अविच्छिन्न अविच्छिन्न ॥ अविच्छिन्न
अविच्छिन्न अविच्छिन्न अविच्छिन्न अविच्छिन्न ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय नमः

हे ॥ इति अस्मिन् पद स्तुति ॥

॥ अथ निद्वपद धैर्यचंद्रन ॥

धीनैवेदी पूर्व धान, तनुदिनन भागी ॥ पुण्य प-
द्वयसंग में, उत्तर गन सागी ॥ १ ॥ सम्य एक में
गोपनां, गणो निगुण निरागी ॥ चेतनभूवे आत्मरूप,
हुँदिना सही सागी ॥ २ ॥ वेपल दंडाग्रनाणधी ए ,
स्थानीय स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि
गुण भाव ॥ ३ ॥ इति निद्वपद धैर्यचंद्रन ॥

॥ निद्वपद स्तवन ॥

धरि महिला ऊपर मेह भरोरते पीजली, ए बाल)
अष्ट धरम नग मास हीना कोड़ी पूर्वमें ॥ महा-
तालाल ही० ॥ उत्कृष्टो कर धाम मयोगी धाममें ॥
महा० म० ॥ अज्ञोपी के अंत तजे भविष्यता ॥
महा० त० ॥ शैलेसी सही धर्म दस गुण श्रेणिता ॥
महा० द० ॥ १ ॥ हस्याक्षर वंश काल रहे ते योगमें ॥
महा० र० ॥ तेरम प्रहृतिनो अन्त करीने अन्नमें ॥ महा-
क० ॥ गमन करे नगरधामें अविष होयनें ॥ महा०
अ० ॥ पुण्यपयोग असंग स्वभाव अर्पधन ॥ महा०
स्व० ॥ २ ॥ इपुगुण नय परमाण योजन लक्षे कही ॥
महा० यो० ॥ धनुष विजदा भास निराण्डवन सही ॥
महा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनागुति अन्तमें ॥

भारी जीयक, आचारिजपद सार । निन कुं पंदे हीर
भर्म, अहोवर मौ धार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद च-
स्त्यवेदन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवन ॥

(नषादल्य र्वांदली गो, ग चाल)

सर्वनी लखगर्भा जेणे, हृण्यो शोध सुभट सम देणे
हो, गणपति गुण पेल्या ॥ देर ॥ मान महागिरि वयरें,
अतिशोभन महव वयरें हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दंभरूप विस-
वेली, घर अजस्य कीर्ति टेली हो ॥ ग० ॥ सुच्छा वेलभा
भरियो, लोह सागर मुलें तगियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
नाग मद होनी, जिण दम शम जंयें कीनी हो ॥ ग० ॥
मोह महामह्य नाहयो, पुण पराग मुगरें पाह्यो हो ॥
ग० ॥ ३ ॥ दोस गणेंद पम कीनी, भरि उपशम अंकुम
लीनी हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु भेसा, सुरवर विण जिण
निपेसा हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रम कृति गुणभी लीनी, मृष्ट
जरये आगम पीनी हो ॥ ग० ॥ आचारजपद पद-
यो, भारी जीव कुजलता मेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति
आचार्यपद स्तवन ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पंचाचारकुं पालि उजवाले दोष रहित गुणभारी
जी । गुण धर्मीसे आगमभारी । दादण येन विचारी

म्हा० य० ॥ मक्षी पक्ष थी हीन भर्णा सिद्धान्तमें ।
 म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपञ्चभारा नाम शिलासं जोषें ।
 म्हा० शि० ॥ युग लोचन में भाग अलोक कुं रसं ।
 ॥ म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल यत्तीस प्रमाणऽवगाह ।
 ॥ म्हा० प्र० ॥ घृद्धि धनुशतपंच गुणामै हीनता ॥ म्हा०
 ॥ गु० ४ ॥ मिलिया एकमें अनंत आयाधा ना लही ॥ म्हा०
 अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरीही जो सही ॥ म्हा०
 मि० ॥ पीजो पद श्री सिद्ध धरो मनगेह में ॥ म्हा०
 परो० ॥ कुशल भये जग जीय मिश्रोगा तेहमें ॥ म्हा०
 मि० ॥ ५ ॥ इति मिद्धपद स्तुति ॥

॥ मिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं भजन करीनें गमन किगो शिष्यार्थ
 जी । अद्यायाने सादियनादि चिदानंद सिद्धरामजी
 परमात्म पद परण विलासी अथ मन दाग विना
 जी । अनंत अनुष्टुप गीयपद प्यायो केवलज्ञ
 'भारमार्जी ॥ १ ॥ इति मिद्धापद स्तुति ॥

॥ तृतीय आचार्य पद वैष्णवद्वय ॥

जिन पद कुल सुपरम अनिल । मिश्रण सु
 भारी । प्रथम मयल मन मोहर्क । जिनमें समुहारी
 ॥ १ ॥ उपादिक जिनगत गीत । नवतन किमार्गी
 भव कुर्वे नारी परत । जगजन निमारी ॥ २ ॥ पंच

शरीर जीवक, आचारिजपद मार । तिन कुं घरे ही
धर्म, अहोतर सो बार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद स्तव
स्तवन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवन ॥

(नणदल घोंदली गो, ग बाल)

सुनी खडगरी जेणे, हण्यो मोध सुभद सम नेणे
हो, गणवनि गुण पेयी ॥ देर ॥ मान महागिरि वयरे
अतिगोभन मद्य वयरे हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दंभरूप विम
येली, घर अडस्य कीट टेली हो ॥ ग० ॥ मुच्छी घेलध
भरियो, लोह सागर मुत्तें तगियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
बाग मद हीनो, जिण दम जाम जंघे कीनो हो ॥ ग० ॥
मोह महामह नाहयो, पुण पराग सुगरें पाह्यो हो ॥
ग० ॥ ३ ॥ दोस मयंद यस कीनो, धरि उदजाम अंकुस
लानो हो ॥ ग० ॥ अंवरंग रिपु भेया, सुरवर विण जिण
नियेया हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस मृति गुणरी लानो, मृद
अरय आगम वानो हो ॥ ग० ॥ आचार्यजपद एह
सो, परी जीव कुशलता येयो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति
आचार्यपद स्तवन ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

वैशाखारकुं पाले उजवाले दांघ रलित गुणधारी
जी । गुण दुर्लभारे आगमधारी । दाखण धंग विचारि

जी । प्रबल सबल घन मोह हरणकृं अनिल समो गुण
वाणी जी । क्षमा सहित जे भंजम् पालै आचारज गुण
ध्यानी जी ॥ इति आचार्यपद स्तुति ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

धन धन श्री उवज्झाय राघ, शठता घन भंजन ।
जिनवर दिमत दृवाल मंग, कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥
गुणघण भंजन मण गवंद, सुय शृणि कियगंजन ।
कुणालंघ लोय लोयणें, जत्थय सुयमंजन ॥ २ ॥ मण
प्राणमें जिन लखो ए , आगममें पद तुर्य । तिनमें
अहनिश हारभर्म वंदे पाठक वर्ग ॥ ३ ॥ इति उपा-
ध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

(मांघलिया अलग रहोनें, ए चाल)

हृयने ३ दृगं हृयने, चेतन भाषै सठने ॥ १ ॥
हृयने ॥ तूं मुमा पाम कयूं आवै ॥ २ ॥ तुमने कुण य
लावै, ॥ ३ ॥ आंकणी ॥ तो संगे निज वंछेटीनो, रखन
जरम भुलागो । नाणावरणो खप उपशमसे, भावै
मंछागो ॥ ४ ॥ १ ॥ इत्ये ते परजातें कीना, जानि
नाम द्यपदेश । एवंगो गो तुम गजादिक, किण व
उपदेश ॥ ५ ॥ २ ॥ इत्यादिक वह मुझकूं शंका, ते
संगे लागो । नालयणको ममता मेमा, में भयो तो

रागी ॥६०॥३॥ उप कहिये हगिषो भविषानो, अधि-
यां लाभन आय । आधीनां मन पीड़ानामें , मायो-
येनविलाय ॥६०॥४॥ आधिनये ममरीये घर आगम,
मृत्रमेंते डयज्जाय । तत् सेवातें हजि शठताकुं, चेसन
कुशलना पाय ॥ ६० ॥५॥ इति उपाध्याय स्तवन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तुति ॥

अंग इन्पौर चउदै पूरय गुण पनधीमना धारीजी,
मृत्र अरधर पाठक कहिये जोग ममाधि विचारीजी ।
तरगुण सुरा आगम पुग जग निक्षेपे नारी जो, मुनि-
गुण धारी सुध चिन्तारी पाठक पुजो अधिवारी जी ॥
१ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥

॥ अथ पंचम साधुपद नैम्यबंधन ॥

हंसख नाण चरित करी, घर शिवरद नामो, धर्म
शुद्ध शुचि चरमें, आदिम ग्रथ कामी ॥ १ ॥ गुणप-
मत अधमत्तनै, भये अंतरजामी । मानस इंदिय दम-
नभूत, ममदम अभिरामी ॥ २ ॥ पारति घन गुणगणा
भरयो ए, पंचम पद मुनिराज । मन्वद्वैकाज नमन दे,
होरधर्म के काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद नैम्यबंधन ॥ ५ ॥

॥ साधुपद स्तवन ॥

(मालन मालन मनि कते , गुणाल)

निकाराया लगजन कहै, धरि चउगनि बरन रे

रोसहो ॥ मुनींदजी ॥ राग हीन भय तुं कर ॥ सावित्री ॥
 जिघ्र रमणी में हेत हो ॥ मुनींदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद
 मजी रहे ॥ सा० ॥ छटे पृथ्व कोइहो ॥ मु० ॥ शन
 सोगम आगम कर ॥ सा० ॥ लघु काले गुण आदि
 हो ॥ मु० ॥ २ ॥ मगानद्वि निद्रा उदै ॥ सा० ॥ पामें कर्म
 निकंद हो ॥ मु० ॥ प्रचला निद्रा में रही ॥ सा० ॥
 पारम गुणना याम हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रम घात
 प्रमुख पर ॥ सा० ॥ जो गुण संख्यानीत हो ॥ मु० ॥
 नां विग निग जगमें लही ॥ सा० ॥ त्रिकचन गुणना
 मगान हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ रमण अथ में जिघ्र फये ॥ सा० ॥
 साधन पर पर जायहो ॥ मु० ॥ साधु हुयड महु पर
 में ॥ सा० ॥ कुशल भवतु जगनीयहो ॥ मु० ॥ ५ ॥ नि
 वैचम साधुपद मयन ॥

। अथ साधुपद मनुनि ॥

मुमनि गुणनि कर संज्ञम पाले संय वपारीत
 शाने जी, परकाया मांकुल मगपार्ल नयविध प्रत्यय
 गार्लेजी । वैच मगधन गृभा पार्ल धर्म गुरु उत
 कांटेजी । मगध अगि कर कर्म मगध दम पर गुण
 उपजावे जी ॥ इति साधुपद मनुनि ॥

॥ छटे दर्शनपद मगधपद ॥

हुय प्रगल्भ गमिपद . अह नमिपि संसार ॥

जी । प्रवाराग्याने सम तुल्य भाख्यो गणधर अति
मुरा जी, ए दर्शनपद निम निम वेदो भवसागर को
सीरा जी ॥ १ ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवेदन ॥

क्षिप्रादिक रस राम पहि, मित आश्रम नाग ।
भाय मित्यापमं जिन जनिम, सुय धीस प्रमाण ॥१॥
मय गुण पमणि अंति दंग, मण लोनन नाग । लोच
लोक स्वरूप जाण, इक केवल भांग ॥२॥ माणावारी
नागधा ए, जेवन नाग प्रकाश । समस पदमे हीरक
निम आश्रम अथकाश ॥३॥ इति ज्ञानपद चैत्यवेदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

(ग्यारे जनि उद्धारंगे, ए चाल)

जिनया आदिन आगम भगिना, नय ग्याहित
गमिया जी ॥ ग्यारे जगजन नाग ॥ मे उत्तम या ना
कहाणि, भविजन अहनिज आदि जी ॥ ग्या ॥ १ ॥
अभासक कुरव गुरुभा, वेणावेन अमंभा जी ॥ ग्या ॥
वेव कुरेव अहिन दिनवारी, जागं जेग विचारी जी ।
ग्या ॥ २ ॥ भुनि मनि दंग दि ईडी नाग, मेण को
विचार जी ॥ ग्या ॥ ३ ॥ आरी मण वेवल हे वार, जीव
ग्या ॥ ४ ॥ ग्या ॥ ५ ॥ अथ विताम गये ज
जाने, नागादिक अनुमाने जी ॥ ग्या ॥ ६ ॥ त्रिमुदर ॥

कृत्वा जोग सुधा मना , लब्धा मंथ स्वभाव (सु०)
 ॥ २॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धिलब्ध जगमान (सु०)
 मध्ये वसु समये लहे , अंते द्योते जाण (सु०) ॥३॥
 सद्कारी मानसमुग्या , कारण रम्य यत्नेन (सु०) ॥४॥
 घम प्रकारना , सप्त प्रभूत का तेन (सु०) ॥४॥ त्र्यं
 धन रूपी भलो, चेतन संयम धाम (सु०) कर धन मित
 पद धर्म में , कुशल भवतु अभिगम (सु०) ॥५॥
 ॥ इति चारित्र्य पद स्तवन ॥

अथ चारित्र्यपद स्तुति ॥

करम अपचय दूर त्र्यपात्र आत्म ध्यान लगावैजी,
 पारे भावना सुधा भावै सागर पार उतारै जी । पटंग
 राज कुं दूर तजी ने चक्री संयम धारैजी । एहो
 चारित्र्य पद नित बन्दो आनम गुण हितकारै जी ।
 इति चारित्र्य पद स्तुति ॥

नवमो तपपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशिवभादिकर्तार्थनाथ, तद्भव शिव जाण । विवि
 अंतरपि बाह्य, मध्य द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु का
 मित आमां सही , आदिक लब्धि निदान । भेदे समान
 युत गिणे, दग्धन कर्म विमान । २॥ नवमो श्री तपा
 भलो , इच्छा रोध मरूप । वन्दन मे नित हीरक
 दूर. भवतु भवशूष ॥ ३॥ इति तप चैत्यवन्दन ॥

अथ तपपद स्तवन ॥

पारम भेद भण्णा जिनराजै, पाण्य तणा जग[का]जै
 (जिष पदोत्राणि)। तिण भव मिद्धि नणा घर जाता ।
 जेनवर पिण तपना कर्मा रे ॥१॥ (शि०) समना सहिते
 जेनते भारी, भली कर्मचम् पिणहारीरे (शि०) जीष
 निकः सें कर्म कचोरा । दहे मय पाषक का जोरा रे
 (शि०) ॥२॥ तप तम्या ना कुमम है फट्टि, देय नर
 । फलते मिद्धि रे (शि०) पाप सकल है ममनी राशी,
 । पमान से जाय नार्जा रे (शि०) ॥३॥ जम्स पसाये
 दहिये घास । मर्या सगरी जग हिस काम रे (शि०)
 यनि दुषर पुण मायना हीना, काम माने घास कि-
 । रे (शि०) ॥४॥ इच्छा रोधन रूपी कहिये, तपपद ही
 मन यहिये रे (शि०) पाठक हीरधर्म कृपा से । नव
 । कुशला कुं भाने रे ॥ शि० ॥ इति तपपदस्तवन ॥

अथ तपपद स्तुति ॥

इच्छागोभन तप से भाग्यो आगम नेहनी गार्वी
 जी, उच्य भावने द्वाटन दार्वी जोग समार्वी गार्वी
 जी । चेतन निजगुण परिणत नेर्वा मेरीज तपगुण
 दार्वी जी, मयपि सकलनो कारण देवी ईश्वर से मुख
 भारी जी ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमा, नवपद अभिरामी

लोप ॥ अहो नव० ॥ कम्पणासागर गुणनिधि, ज

अंतरजामी रे लोप ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनज

पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोप ॥ अहो

लो० ॥ एवञ्चा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे

लोप ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी

धया सिद्ध सारूपी रे लोप ॥ अहो ध० ॥ सिद्ध नमो

भवि भावार्थ, जे आगम अरूपी रे लोप ॥ अहो जे०

॥ ३ ॥ गुण छर्त्तासे सोभना, सुंदर सुखकारी रे लोप

॥ अहो सु० ॥ आचारज नीज पदै, बंदू अविकारी

लोप ॥ अहो व० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशामी, त

दूषिध आधारि रे लोप ॥ अहो न० ॥ चौथे पद प

टक नमो, संयोग समार्थ रे लोप ॥ अहो सं० ॥ ५

पंचाचार पालन परा, पंचाश्रय श्यामी रे लोप ॥ अहो

व० ॥ गुणगामी मुनि पांचमं, प्रणमुं बह्मगामी रे लोप

॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनं ओललै, शुभ अद

अवि रे लोप ॥ अ० अ० ॥ छठे गुण दरमगा नमो, आन

शुभ भावे रे लोप ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण

मानमें, जे पंच प्रकाश रे लोप ॥ अ० जे० ॥ स्व

प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निशारे रे लोप ॥ अ० अ०

॥ ८ ॥ छाटमें चारित्र्यपद नमो, परभव निवारी रे
 लोच ॥ अ० प० ॥ खांछादिक दम धर्मनो, जेह ते अ-
 धिकाती रे लोच ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नवमे बलि तप-
 पद नमो, पाप्माभोगर भेदे रे लोच ॥ अ० पा० ॥ पांछा
 काल अनंतना, जे कर्म डच्छेदे रे लोच ॥ अ० जे०
 ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानभी, छावे शुभ भावे रे
 लोच ॥ अ० छा० ॥ नृप श्रीपालनगी परै, मन वंछित
 पार्थ रे लोच ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आम् नैष्टुक मासमां,
 नव आंघिल करिये रे लोच ॥ अ० न० ॥ नव आंली
 विधि युन करी, शिवकमला घरिये रे लोच ॥ अ० शि०
 ॥ १२ ॥ मिद्वयकनी यहु परै, वर सज्जिमा कीजे रे लोच
 ॥ अ० व० ॥ श्रीजिनलाभ कहे सदा, अनुपम जम
 लोज रे लोच ॥ अ० अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवन ॥

अथ नवपद स्तवन ० जुं ॥ राग मारु ॥

नीरधनायक जिनवरु जी, अनिमय जाम अनप ।
 मिद्व अनंत महागुणी जी, परमानंद मरुप । भविक
 मन धारज्यो रे । धारज्यो नवपद स्थान ॥ अ० ॥ १ ॥
 ॥ ए टेर ॥ श्री आगारज गणधर रे, गुण छत्तीस
 निषाम । पाठक पदधर मुनिवरु जी, धुन दापक सु-
 विद्याम ॥ अ० ॥ २ ॥ सुमति गुपति पर गोभनाजी,
 साधु समनार्थन । सम्यगुदर्शन सुंदरु जी, ज्ञान प्रकाश

अनेन ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छे रे, त
 वताम विधि होय । ए नयपदना ध्यानधो रे, निरुपाधि
 सुख होय ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनपर्मनो रे
 मूल ए नयपद जाण । अविचल अनुभव कारणे जो
 नितप्रति नमन कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ रागप्रभानि ॥ नयपद ध्यान धरोरे ॥ भविष्य नभ
 मन धवन काया कर एकांते, विकथा दूर हरोरे ॥ भ०
 न० ॥ १ ॥ मंत्र जड़ी अरु मंत्र घने रा । इन मंत्र
 विमो रे । अरिहन्नादिक नयपद जपने, पुण्य भेदा
 धरोरे ॥ भ० ॥ २ ॥ शब्द सिद्ध नय निष मंगल माया
 मंगलि महज धरोरे । ध्यायनन्द गाथो पल्लिहारी, शिष्य
 नर बीज स्वरोरे ॥ भ० ॥ न० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥ जीया नमुर सुजाण, नयपद के गुण गाणो
 ॥ जी० ॥ नयपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पाद
 शय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ कर्म निपायिन दूर कष्ट कों,
 सुन्दर सुद उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट प्र
 कथन कालां, अज्ञात सुख पावरे ॥ जी० ॥ ३ ॥
 जिन नय आगारा होयते, नयपद मंगल मायरे ॥ जी०
 ॥ ४ ॥ परम दामा शिष्य स्वगोपाय के, समस्त समस्त दुः
 लायरे ॥ जी० ॥ ५ ॥ निह ॥

॥ श्रीनवपदस्तुति ॥

सम वेदमहो विद्वत्पदपदम् .
 सम वासिष्ठ दे जिषराजपदम् ।
 मह धेनुम मे वर धेनुपदम् .
 नृधन्याय ममे नृभक्षेणपदम् ॥ १ ॥
 अरिं नारदं नृप विद्वत्पदम् .
 त्रिप त्रिपदे नृक. उतागपदम् ।
 मह ग्राह दातानजाननपदम् .
 नवधर्म दत्ते भृगु होय अयम् ॥ २ ॥
 यज्ञो भग्नजनों नव आनवर्गो .
 तनुगोप यो बहे ग्राह्य यो ।
 गुप्त स्थान यो पदमान यो .
 भयवार यो जिषराज यो ॥ ३ ॥
 गच्छ त्वत्तमं सुखं गुणो लियो .
 विमलेश्वर मन्त्रं ग्राह्य दियो ।
 जय हो जय हो मुझ प्राण प्रियो .
 बहै क्षेमसागर आगम लियो ॥ ४ ॥
 ॥ श्री नवपदस्तुतिः ॥

सिद्धं यज्ञं ग्राहं वन्दे ॥ १ ॥
 श्रीप्रणवेनं पादं नमि ॥ २ ॥

जाम्बे पोक्तं कर्तुं भज्याः ॥ ३ ॥

सानिधं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नववद् नैव्यवन्दनानि ॥ .

उत्पन्नमन्त्राणां महोमपाणं , सप्तशिष्टेगम
संठिपाणं । सदेमपाणं दिगमउक्तपाणं, नमो नमो हो
मपा जिपाणं ॥ १ ॥ मिद्धागमार्गं सुरमालपाणं
नमो नमोऽंगनमउक्तपाणं । मुरीगा दूरीकगकुमापाणं
नमो नमो मुरममपाणं ॥ २ ॥ सुनम्यविम्वारणन
पाणं , नमो नमो वायगकुंजरपाणं । साहण संमादि
संज्ञपाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥ ३ ॥ जिपुम
कः लक्षणगम, नमो नमो निम्मलदंसगम । अत्र
संमांनमोऽहम, नमो नमो मागदियागम ॥ ४ ॥
आमदिम्वदीय मकिगम, नमो नमो संज्ञम
गम । कम्मदमोम्भजगकुंजरम, नमो नमो नि
मवांमम ॥ ५ ॥ इह नववदमिद्धं लद्धिविवागमि
वददपागुमपाणं हो निरेहामपाणं । दिगपा सु
मां , मोगिरेहामपाणं । विजय विजय नमो , मि
द्वनमं नमामि ॥ ६ ॥ इति प्रथमम् ॥

॥ पुनः द्वितीयवारम्भ ॥

श्रीअदिम्व उदा नानि , अमि मुग्धा म
सेधं मिद्ध अवन जाम्ब , आमपागुग म ॥ १

आचारज उषाभाष माधु , समता रस धाम । जिन
 भाषिनि सिद्धान्त छुट , अनुभव अभिगम ॥ २ ॥
 सोच दीज गुण संवदाण , नाण चरणा नच छुट । भ्यायो
 परमानन्दपद , ए नच एव अविच्छुट ॥ ३ ॥ इह पर-
 भव आनन्दवन्द , जग माहि प्रसिद्धी । विनामणि
 मय जाम जोग , बहु पुराणि लद्धी ॥ ४ ॥ निहृडाण
 मार अपार गह मदिमा मनभारां, परिहर पर जंजाल-
 जाल निम गह संभारां ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पद संपत्तां ,
 महजानन्द स्वल्प । अमृतमय कल्याणनिधि , प्रगटे
 योगन भूष ॥ ६ ॥ निर्माणे संपूर्णम ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति॥

निरूपम सुगुणायक, जगनायक, लायक जिषगणि
 गार्भा जी । कल्याणामागर निजगुण आगर , शुभ स-
 मता रसधार्मा जी । श्रीसिद्धचक्र जिरोंमणि जिनवर,
 आये जे मन रंगेंजा । ते मानव श्रीपाद लजीपरं, पामे
 सुख सुरसंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पा-
 टेक , सावु महागुणवंतजी । दरिहरण नाण चरणा
 नच उल्लस, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान भ-
 रतां लहिंये, अविचल पद अधिनार्जीजी । ते सचला
 जिननायक नमियें , जिण न नीमि प्रकाशीजी ॥ २ ॥
 आगु साममनोहार निम बलि, भयकपास जगीशे जी ।

उजवाली सातमयी करियें, नव अंगिल नव दिवसें जी ।
 तेर सहस्र बलि गुणीयें गुणगुं, नवपद करो सारो जी ।
 इण्णरी निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारों जी ।
 ॥३॥ विमल कमल दल लोयण सुन्दर , श्रीचक्रेश्वरि-
 देवी जी । नवपद मेघग भविजन केरां, बिघन हरो सुरसे-
 वी जी । श्रीखरनरगच्छ नायक सद् गुरु, श्रीजिन भक्ति
 मुणीदाजी । तासु पसायें इन पर पभणो, श्रीजिनलाम
 मुरीदाजी ॥ ४ ॥ इति संपूर्णम् ॥

अथ द्वादश आर्हत गुणाः ॥

- १ अशोकशृङ्गानिहार्यसंयुताय श्री अर्हते नमः ॥
- २ पुष्पवृष्टिपानिहार्यसंयुताय श्री अ० ॥
- ३ दिव्यव्यनिदानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ४ सामरयुगानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ५ बुद्धिनिदानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ६ उग्रप्रयानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ७ सुवर्गमिद्रासनानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ८ आर्षरत्नानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ९ ज्ञानानिशयसंयुताय श्री अ०
- १० वृत्तानिशयसंयुताय श्री अ०
- ११ दयानानिशयसंयुताय श्री अ०

१२ आपायापगमानिशपसंयुताय श्री अ०

॥ इमि द्वादश आर्द्रत गुणाः ॥

इत्यादि नमस्कार करके अन्तर्ध उस्सगिरमं कहके १२ लोग-
निका काउस्मगा को, काउस्मगा पार कर एक लोगस्स प्रगट कहे,
सी स्वम्भानक जा करके वैन्वयंदन को, पयस्वाण पार के शामिल
ही पहले बसत जल पीवे तब वैन्वयंदन कर के पीवे, पीवै मध्याह्न
निय पांच शकम्भसे देव बादे । देव बादमें की विधि पागे लिखी है
हो देव सेवा । गुणना नवे पदाक्ष दो हजार २००० करणा—

१ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, २ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं,
३ ॐ ह्रीं नमो आयरिणाणं, ४ ॐ ह्रीं नमो उषज्जापाणं
५ ॐ ह्रीं नमो लोण सव्यसाहणं ६ ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स
७ ॐ ह्रीं नमो नाणास्स ८ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स
९ ॐ ह्रीं नमो तयस्स

इम प्रमाणे गुणना को ।

अथ सिद्धअष्टगुणाः ॥

१ अनंतज्ञानसंयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
२ अनंतदर्शनसंयुताय श्री सि०
३ अणापापगुणसंयुताय श्री सि०
४ अनंतसम्पत्त्यचारिअगुणसंयुताय श्री सि०
५ अक्षयविपतिगुणसंयुताय श्री सि०
६ अरुविनिर्जनगुणसंयुताय श्री सि०

७ अगुह्यलघुगुणसंयुताय श्रीः सि०

८ अनन्तर्यगुणसंयुताय श्रीः सि०

॥ इति सिद्ध अष्टगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्त्य उस्मि० करके आठ लोग्ग
का काउस्मग करे एक लोग्गम प्रगट कहे, की प्रोक्त कहे
को ॥ जितना खमानमया जिम पदमें है उतना लोग्गस का क
स्मग को, प्रगट लोग्गस कहिके उपर परमागे गुणना लिख
सो को—

अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥

२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्री आ० ॥

३ युगप्रधानागमसंयुताय श्री आ०

४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥

५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥

६ धैर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥

७ उपदेशगुणसंयुताय श्री आ० ॥

८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्री आ० ॥

९ साम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्री आ० ॥

१० शीलगुणसंयुताय श्री आ० ॥

११ अविप्रदगुणसंयुताय श्री आ० ॥

१२ अविक्लवगुणसंयुताय श्री आ० ॥

- ११ अक्षयलक्षणसंयुताय श्री आ० ॥
 १४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १५ क्षमागुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १६ मृदुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १७ सर्वसंगसुखिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १८ बाहुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १९ द्वादशविधनरगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २० सादशविधसंगसगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २२ गौरीगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २३ अक्षिपनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २४ ब्रह्मवर्णगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २५ अनित्यभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 २६ अक्षरणभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 २७ संसारस्वरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 २८ एकस्थित्यरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 २९ अगम्यभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३० अशुचिभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३१ आश्रयभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३२ संशयभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३३ निर्जराभावनाभावकाय श्री आ० ॥

- ११ वनमग्निरागश्रुताय श्री मा०
 - १२ प्रमत्तागश्रुताय श्री मा०
 - १३ एकेन्द्रिगर्जायश्रुताय श्री मा०
 - १४ वेदंन्द्रिगर्जायश्रुताय श्री मा०
 - १५ त्रैदंन्द्रिगर्जायश्रुताय श्री मा०
 - १६ चतुदंन्द्रिगर्जायश्रुताय श्री मा०
 - १७ पंचेन्द्रिगर्जायश्रुताय श्री मा०
 - १८ संधानिस्रुताय श्री मा०
 - १९ श्रमागुणगुक्ताय श्री मा०
 - २० शुभभायनाभायकाय श्री मा०
 - २१ प्रनिलेखनादिक्रियागुद्वकाय श्री मा०
 - २२ संजमगोत्रगुक्ताय श्री मा०
 - २३ मनोगुणगुक्ताय श्री मा०
 - २४ वचनगुणगुक्ताय श्री मा०
 - २५ कायगुणगुक्ताय श्री मा०
 - २६ शान्तादिद्वाविंशतिपरीसहस्रहननन्तराय श्री मा०
 - २७ मरणांतउपसर्गसहस्रहननन्तराय श्री मा०
- ॥ अथ सप्त्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥
- १ परमार्थसंनवनारूपश्रीसहस्रनाय नमः ॥
 - २ परमार्थजनृसेवनारूप सह० ॥
 - ३ उगापन्नदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
- ६ धर्मागारूप सह० ॥
- ७ वैशाख्यरूप सह० ॥
- ८ अर्हद्विनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
- १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति विनयनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमतमारमिति विनयनरूप सह० ॥
- २० संसारे जिनमतस्थितमाध्यादिमारमिति वि० ॥
- २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
- २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
- २३ विनिवृत्तिमात्रदूषणरहिताय सह० ॥
- २४ बुद्धिप्रज्ञासात्त्वदूषणरहिताय सह० ॥

२० तन्मणिगदपगदित्वाय स० ॥

२१ प्रपन्नप्रभावकस्य स० ॥

२२ धर्मकप्रभावकस्य स० ॥

२३ आदिप्रभावकस्य स० ॥

२४ नैमित्तिकप्रभावकस्य स० ॥

३० तद्विप्रभावकस्य स० ॥

३१ प्रज्ञादिप्रविशामुद्रप्रभावक स० ॥

३२ शृङ्गाञ्जनादिमिद्रप्रभावक स० ॥

३३ कविप्रभावकस्य स० ॥

३४ जिनशामने काञ्चलना भूषण स० ॥

३५ प्रभावनाभूषणस्य स० ॥

३६ तीर्थसेवाभूषणस्य स० ॥

३७ सूर्यनाभूषणस्य स० ॥

३८ जिनशामने भक्तिभूषणस्य स० ॥

३९ उपशमगुणस्य स० ॥

४० सेवेगुणस्य स० ॥

४१ निवेदगुणस्य स० ॥

४२ अनुकंपागुणस्य स० ॥

४३ आत्मिकगुणस्य स० ॥

४४ परतीर्थकादिर्वदनवर्जनस्य स० ॥

४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनस्य स० ॥

- ४६ परमार्थिकादिआलापवर्जनरूप स० ॥
 ४७ परमार्थिकादिमंलापवर्जन रूप श्रीस० ॥
 ४८ परमार्थिकादि अशनादिदानवर्जन श्रीम० ॥
 ४९ परमार्थिकादि मंथपुष्पादिप्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
 ५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसह० ॥
 ५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीस० ॥
 ५२ बालभियोगाकारयुक्त श्री सह० ॥
 ५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५४ कामारवृत्त्याकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५५ गुम्फनिग्रहकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५६ सप्ततयचारित्र्यधर्मस्य मूलमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ५७ चारित्र्यधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिन्तन श्री सह० ॥
 ५८ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिकानमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ५९ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ६० चारित्र्यधर्मस्य धारकमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ६१ चारित्र्यधर्मस्य भाजनमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६२ चारित्र्यधर्मस्य सन्निभमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६३ अग्निर्जाय इति अद्वानस्थानयुक्त श्री सह० ॥
 ६४ स च जायः निष्पद्यति अद्वानस्थानयुक्त सह० ॥
 ६५ स च जायः कर्माणि कर्तोर्मानि अद्वानस्थानयुक्त स०
 ६६ स च जायः कृतकर्मोऽपि वेदपर्मानि अद्वानस्थानयुक्त स०

६७ जायस्यान्ति निर्व्यागमिति श्रद्धानिश्चानयुक्तश्रीमः

६८ अस्मि पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानिश्चानयुक्तश्रीमः

इति नारद संहिता समाप्तम्

अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यञ्जनायग्रहमनिजानाग नमः ॥

२ रसनेन्द्रियव्यञ्जनायग्रहमनिजानाग नमः ॥

३ घ्राणेन्द्रियव्यञ्जनायग्रह मनि० ॥

४ श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनायग्रह मनि० ॥

५ स्पर्शनेन्द्रियअर्थायग्रह मनि० ॥

६ रसनेन्द्रियअर्थायग्रह मनि० ॥

७ घ्राणेन्द्रियअर्थायग्रह मनि० ॥

८ चक्षुरिन्द्रियअर्थायग्रह मनि० ॥

९ श्रोत्रेन्द्रियअर्थायग्रह मनि० ॥

१० मन इन्द्रिय अर्थायग्रह मनि० ॥

११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१२ रसनेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१६ मन इन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय मति०

१८ रसनेन्द्रिय अपाय मति० ॥

४० अगमिकश्रुत० ॥

४१ अंगविष्टश्रुत० ॥

४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥

४३ अतुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥

४४ अननुगामि अवधि० ॥

४५ वर्द्धमान अवधि० ॥

४६ क्षीयमान अवधि० ॥

४७ प्रनिपाति अवधि०

४८ अप्रनिपाति अवधि० ॥

४९ साक्षुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥

५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकान्ताकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय

॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेदः

इति साह इकावन ५१ नमस्कार को ।

अथ चारित्रपदके ७० भेदः

१ पाणनिगमविरमणरूपचारित्र्याय

२ मृगयादविरमणरूपचारि० ॥

३ अदस्तादानविरमणरूपचारि० ॥

४ मैयुनविरमणरूपचारि० ॥

५ वरिग्रहविरमणरूपचारि० ॥

६ क्षमायमरूपचारि० ॥

- ४० अगमिकथुन० ॥
 ४१ अंगविष्टथुन० ॥
 ४२ अनंगप्रविष्टथुन० ॥
 ४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
 ४४ अननुगामि अवधि० ॥
 ४५ घट्टमान अवधि० ॥
 ४६ क्षीयमान अवधि० ॥
 ४७ प्रनिपानि अवधि०
 ४८ अप्रनिपानि अवधि० ॥
 ४९ काजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
 ५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥
 ५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥
 ॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद ॥

इस तरह इकावन ५१ नमस्कार करें ।

अथ चारित्र्यपदके ७० भेद लिख्यते ॥

- १ प्राणातिपानविरमणरूपचारित्र्याय नमः ॥
 २ मृषायादविरमणरूपचारि० ॥
 ३ अदत्तादानविरमणरूपचारि० ॥
 ४ मैथुनविरमणरूपचारि० ॥
 ५ परिग्रहविरमणरूपचारि० ॥
 ६ क्षमाधर्मरूपचारि० ॥

- २८ अतिरिक्तश्च मन्त्रादिपञ्चमयागरूपसंगमना० ॥
 २९ प्रमार्जनरूपसंगमचारि० ॥
 ३० मनःसंगमचारि० ॥
 ३१ वाक्संगमचारि० ॥
 ३२ कायासंगमचारि० ॥
 ३३ आचार्यवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३४ उपाध्यायवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३५ तपस्विवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३६ लघुशिष्यादिवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३७ ग्लानसाधुवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३८ साधुवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ३९ समणोपासकवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ४० संघवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ४१ कुलवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ४२ गणवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ४३ पशुपंडगादिरहिनवसतिवसनव्रतगुप्तिचारि० ॥
 ४४ स्नानाद्यादिविक्रयावर्जनव्रतगुप्तिचारि० ॥
 ४५ स्त्रीजासनवर्जनव्रतगुप्तिचारि० ॥
 ४६ स्त्रीअंगोपांगनिराक्षणवर्जनचारि० ॥
 ४७ कुड्यनरसहितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनचारि० ॥
 ४८ पूर्व्यस्त्रीभोगचिन्नवर्जनव्रतगुप्तिचारि० ॥

- ४६ जनिमरसआहारवर्जनद्रव्यगुप्तिचारि० ॥
 ४७ अग्निष्वाहारकरणावर्जनद्रव्यगुप्तिचारि० ॥
 ४८ अंगविभूषावर्जनद्रव्यगुप्तिचारि० ॥
 ४९ अक्षस्पर्शगणपोरूपचारि० ॥
 ५० उग्रादरीमपोरूपचारि० ॥
 ५१ वृत्तिमंक्षेपरूपचारि० ॥
 ५२ रसव्यागमपोरूपचारि० ॥
 ५३ कायक्लेजनपोरूपचारि० ॥
 ५४ मंक्षेखणामपोरूपचारि० ॥
 ५५ प्रायच्छित्तमपोरूपचारि० ॥
 ५६ विनयनपोरूपचारि० ॥
 ५७ वैषाष्टन्यनपोरूपचारि० ॥
 ५८ मज्झांपनपोरूपचारि० ॥
 ५९ क्षान्तनपोरूपचारि० ॥
 ६० उपमर्गनपोरूपचारि० ॥
 ६१ अनेमज्ञानमंयुक्तचारि० ॥
 ६२ अनेमद्विजनमंयुक्तचारि० ॥
 ६३ अनेमचान्निग्रमंयुक्तचारि० ॥
 ६४ मोक्षनिग्रहकरणचारि० ॥
 ६५ माननिग्रहकरणचारि० ॥
 ६६ मायानिग्रहकरणचारि० ॥

७० लोभनिग्रहकरणचारि० ॥

अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

- १ पावत्कथिनतपसे नमः ॥
- २ इत्थग्नतपोभेदतपसे नमः ॥
- ३ धातुऊगोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
- ४ अभ्यन्तरऊगोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
- ५ द्रव्यनपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
- ६ क्षेधनपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
- ७ कालनपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
- ८ भावनपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
- ९ क्रायक्लेशनपभेद त० ॥
- १० रसस्वाग्नपभेद त० ॥
- ११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः
- १२ श्रापगुर्पणकादिबर्जितस्थानप्रयस्थितसंलीनता त
- १३ आलोयनप्रायच्छित्त तप०
- १४ प्रतिक्रमनप्रायच्छित्त तप०
- १५ मिश्रप्रायच्छित्त तप०
- १६ विवेकप्रायच्छित्त तप०
- १७ उपमर्गप्रायच्छित्त तप०
- १८ तपप्रायच्छित्त त०
- १९ भेदप्रायच्छित्त त०

- २० मूलप्रायश्चित्तस्त ०
 २१ अणवस्थितप्रायश्चित्तस्त ०
 २२ पारंशियप्रायश्चित्तस्त ०
 २३ ज्ञानविनयरूपस्त ०
 २४ दर्शनविनयरूपस्त ०
 २५ चारित्र्यविनयरूपस्त ०
 २६ गुर्वादिकमनविनयरूपस्त ० ॥
 २७ वसनविनयरूपस्त ०
 २८ कायविनयरूपस्त ० ॥
 २९ उपचारकविनयरूपस्त ० ॥
 ३० आचार्यवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३१ उपाध्यायवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३२ साधुवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३३ तपस्विवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३४ ऋषिजिह्वादिवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३५ ग्लानसाधुवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३६ भ्रमणोपासकवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३७ संघवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३८ कुलवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ३९ गणवेद्यावद्यस्त ० ॥
 ४० वायणातपसे नमः ॥

४१ पृच्छनातपसे नमः ॥

४२ परावर्तनातपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षानपसे नमः ॥

४४ धर्मकथातपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त त० ॥

४६ राट्रध्याननिवृत्त त० ॥

४७ धर्मध्यानचिन्तन त० ॥

४८ शुक्लध्यानचिन्तन त० ॥

४९ पाद्यउपसर्गतपसे नमः ॥

५० अभ्यन्तरउपसर्गतपसे नमः ॥ इति पञ्चाशत्तपसे

इमं तद्ग ४० नमस्कारं कर्तुं

अथ पञ्च कल्याणकी टीप

॥ कार्तिक-कृष्णपक्ष-कार्तिक वदी ॥

१ शम्भवनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

२ अरिष्टनेमिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

३ पद्मप्रभजिनाय जातजन्मने नमः

४ पद्मप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

५ महावीरजिनाय मोक्षगताय नमः

कार्तिक-शुक्लपक्ष-कार्तिक सुदी ॥

६ सुविधिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

७ अरनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

मार्गशीर्ष-कृष्ण-पक्ष-मिगसर वदी ।

१० सुविधिनाथजिनाय जातजन्मने नमः ।

११ सुविधिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ।

१२ महावीरजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ।

१३ अक्षयभजिनाय मोक्षगन्थाय नमः ।

॥ मार्गशीर्ष-शुक्लपक्ष-मिगसर सुदी ॥

१० अरनाथजिनाय जातजन्मने नमः ।

११ अरनाथजिनाय मोक्षगन्थाय नमः ।

१२ अरनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ।

१३ मद्दिनाथजिनाय जातजन्मने नमः ।

१४ मन्दिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ।

१५ मद्दिनाथजिनाय उत्पलकेवलज्ञानाय नमः ।

१६ अरिष्टनेमिजिनाय उत्पलकेवलज्ञानाय नमः ।

१७ जम्भयनाथजिनाय जातजन्मने नमः ।

१८ जम्भयनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ।

॥ पौष-कृष्णपक्ष-पौष वदी ॥

१० पार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः ।

११ पार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ।

१२ अक्षयभजिनाय जातजन्मने नमः ।

१३ अक्षयभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ।

१४ शीतलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः.

॥ पौष-शुक्लपक्ष-पौष सुदी ॥

१ विमलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

२ शान्तिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

३ अजितनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

४ अभिनन्दनजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

५ धर्मनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-कृष्णपक्ष-माघ वदी ॥

१ पद्मप्रभजिनाय क्यवनप्राप्त्याय नमः

२ शीतलनाथजिनाय जातजन्मने नमः

३ शीतलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

४ भयभदेवजिनाय मोक्षगताय नमः

५ श्रेयांसनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-शुक्लपक्ष-माघ सुदी ॥

१ अभिनन्दनजिनाय जातजन्मने नमः

२ वासुपुत्रजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

३ विमलनाथजिनाय जातजन्मने नमः

४ धर्मनाथजिनाय जातजन्मने नमः

५ विमलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

६ अजितनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१. मज्जिमाजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 २. अभिनन्दनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 ३. धर्मानाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण वदि ॥

४. सुपार्श्वनाथजिनाय उत्पलकेवलजानाय नमः
 ५. सुपार्श्वनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः
 ६. चन्द्रमभजिनाय उत्पलकेवलजानाय नमः
 ७. सुविधिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 ८. कपभदेयजिनाय उत्पलकेवलजानाय नमः
 ९. श्रेयांसनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 १०. मुनिसुधमजिनाय उत्पलकेवलजानाय नमः
 ११. श्रेयांसनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 १२. वासुपूज्यजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 १३. वासुपूज्यजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण सुदी ॥

१४. अरनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 १५. महिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 १६. शम्भुनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 १७. महिनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः
 १८. मुनिसुधमजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-कृष्णपक्ष-चैत्र वदी ॥

- ४ पार्श्वनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
- ५ पार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
- ६ पद्मप्रभजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
- ७ मायभेदेवजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
- ८ मायभस्मामिजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः

॥ चैत्र-शुक्लपक्ष-चैत्र सुदी ॥

- ३ कुण्डुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
- ४ अजिमनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ शंभवनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ६ अनन्तनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ७ सुमतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ८ सुमतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
- ९ महार्थारजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
- १० पद्मप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ वैशाख-कृष्णपक्ष-वैशाख त्रिदि ॥

- १ कुण्डुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- २ शीतलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ३ कुण्डुनाथजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः
- ४ शीतलनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः

॥ ज्येष्ठ-शुक्लपक्ष-जेठ वदि ॥

- ५ धर्मनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
 ६ वासुपुज्यजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 १५ सुपार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः
 १३ सुपार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आपाढ़-शुक्लपक्ष-आषाढ़ वदी ॥

- ४ ऋषभदेवजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 ७ विमलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
 ९ नमिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आपाढ़-शुक्लपक्ष-आषाढ़ सुदि ॥

- १ महार्थरजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 ८ अग्निष्टनेमिजिनाय मोक्षगताय नमः
 १४ वासुपुज्यजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ श्रावण-शुक्लपक्ष-श्रावण वदि ॥

- ४ श्रेयसिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
 ७ अन्ननाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 ८ नमिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
 ९ कृन्तुनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

॥ श्रावण-शुक्लपक्ष-श्रावण सुदी ॥

- ५ सुमतिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

अथ दीपमालाको गुणनो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनाथाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसर्वज्ञाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिपारंगताय नमः

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकेवलज्ञानाय नमः

॥ इति दीपमालाको गुणनो ॥

॥ अथ २० विहरमानों के नाम ॥

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| १ श्री सीमंघर स्वामी | २ श्री युगमंघर स्वामी |
| ३ श्री बाहुस्वामी | ४ श्री सुबाहु स्वामी |
| ५ श्री सुजात स्वामी | ६ श्री स्वयंप्रभ स्वामी |
| ७ श्री कपभानन स्वामी | ८ श्री अनंतवीर स्वामी |
| ९ श्री सुरप्रभव स्वामी | १० श्री विशालधर स्वामी |
| ११ श्री वज्रधर स्वामी | १२ श्री चंद्रानन स्वामी |
| १३ श्री चंद्रबाहु स्वामी | १४ श्री भुजंग स्वामी |
| १५ श्री ईश्वर स्वामी | १६ श्री नेमप्रभ स्वामी |
| १७ श्री वीरमेन स्वामी | १८ श्री महाभद्र स्वामी |
| १९ श्री देवपति स्वामी | २० श्री अजितवीर स्वामी |

चार साश्चते जिनवर के नाम ।

- | | |
|------------------------|------------------------|
| १ श्री कपभानन स्वामी | २ श्री चंद्रानन स्वामी |
| ३ श्री वाग्विंश स्वामी | ४ श्री पट्टमान स्वामी |

साम्यभाव रखूँ मैं उनपर, ऐसी परिणति हो जावे ॥२॥
 गुणीजनोंको देख हृदयमें, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
 यने जहाँतक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
 होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
 गुण-ग्रहणका भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥३॥
 कोई घुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
 लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आजावे ॥
 अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आने ।
 मो भी न्यायमार्गसे मेरा, कर्मा न पद डिगने पावे ॥४॥
 होकर सुख में मग्न न कूले, दुरामें कर्मा न चर्रावे ।
 गर्म-नदी-स्पृशान-भयानक, अटवीसे नहीं भय लावे ॥
 रहे अडोळ-अकंप निरन्तर, यह मन हृत्तर गन जावे ।
 दृष्टियोग-अनिष्टयोग में, सहनशीलता दिखलावे ॥५॥
 सुखी रहें सब जीव जगनके, कोई कभी न घयरावे ।
 वैर-पाप-अभिमान छोड़ जग, निम्न नये मंगल मार्ग ॥
 घरघर चर्चा रहे धर्मकी, दृष्टकर दृष्टकर हो जाने ।
 ज्ञान-चरित उल्लस कर अपना, मनुज-जन्मकल सप पावे ॥
 ईति-ध्यान व्यापे नहीं जगमें, सृष्टि समय पर हुआ करे ।
 पर्यनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजाका किया करे ॥
 गंगा सरा-दुमिंश न फैले, प्रजा शांति से जिया करे ।
 दरघ अहिंसा-धर्म जगनमें, फैल सर्वदिग किया करे ॥१०॥

छट्टी अशुचि भावना;—

दिपै चाम चादर मर्ही, हाड पीजरा देह ।
भीतर या सम जगनमें, और नर्ही यिन गेह ॥३॥

॥ मारडा ॥

सातमी आश्रव भावना;—

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा ।
कर्म चोर पहुँ और, सरवस लूटे सुधि नर्ही ॥४॥

आठमी संवर भावना;—

सन गुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमे ।
तय कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवन रुके ॥५॥

॥ दोहा ॥

नवमी निर्जरा भावना;—

ज्ञान दोष तय तेल भर, घर शोधे अम छोर ।
या विधि यिन निकसे नर्ही, पैठे पूरव चोर ॥
पंच महावन संचरण, समिति पंच प्रकार ।
प्रयल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥६॥

दशमी लोक संठाण भावना;—

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान ।
तारें जाय अनादिनै, भरमन है यिन ज्ञान ॥१०॥

इग्यारमी धोधिधीज-भावना;—

धन तन कंचन राजसुख, सपहिं सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसारमें, एक पधारथ ज्ञान ॥११॥

॥ बारमी धर्म भावना ॥

जाचे सुगतरु देण सुख, चिंतत चिन्ता रैन ।
बिन जाचे बिन चिंतवे, धर्म सकल सुख देन ॥१२॥

अथ आठ-थुई से देववांदने की विधि ॥

एना मनामस्य देका चैत्यनदन करना ।

सकलकुशलवह्नी-पुष्कराचर्त्तमेधो,
इरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।

भवजलनिधिपोतः सर्वसम्पत्तिहेतुः,

स भवतु मननं यः श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥१॥

नमोऽस्तुते अरिहंताणे भगवन्ताणे आह्वराणे नि-
श्चराणे सगंसेवुद्धाणे पुरिसुत्तमाणे पुरिससीताणे
पुरिसवरर्षुहरिष्माणे पुरिसवरगंधहर्षाणे लोगुत्तमाणे
लोगनादाणे लोगहिष्माणे लोगवईवाणे लोगपञ्चोअम-
राणे अमषदपाणे वरसुदपाणे मगादपाणे सरसदपा-
णे बोहिदपाणे धम्मदपाणे धम्मदेसिपाणे धम्मनायकाणे
धम्मसारहीणे धम्मवरपाडांनचवयहीणे अप्पटिप-

निज्ञाणं नारयाणं बुद्धाणं धोह्याणं मुत्ताणं मोक्षणं
 मञ्जवन्तं मञ्जद्वरिणीं मिषमयलमरुद्धमणं
 फलप-मन्वायाह-मपुणरातित्ति सिद्धिगः नामधेये
 मन्वाताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ प्पड
 मिट्ठा जे प्प भविस्संति गागाणं काले मन्वज्ज वदमा
 मन्वे निविहेण वेदामि ॥१॥

इच्छाकारेण संदिमह् भगवन् इरियावहिणं
 रिक्कमामि, इच्छं । इच्छामि वडिक्कमिउं इरियावहिणं
 विराहणाणं गमणागमणे पाणक्कमणे पायक्कमणे इरि
 क्कमणे आमा उत्तिग पणमद्ग मट्टमक्कहमन्वाणा मन्वा
 णे जे मे जीवा विराहिया पणिदिवा वेइदिवा मेइदि
 यउरिदिवा पणिदिवा अमिहिया वत्तिगा लेमिया
 पाइया मन्वहिवा परिवविवा किल्लामिया उइविया
 नाभोटाणं मन्वामिया जीवियाजं ययगेविया म
 मिच्छामि दूक्कं ।

मम उल्लाकरणेण पापच्छिन्नकरणेण विमो
 करणेण विमर्शकरणेण पापार्थं कर्माणं निष्ठापणद्व
 यामि वाउत्तमं ।

अथ कम्मणिणं नाममिण्णे यामिण्णे लीण
 जेमाहणं उइहणं पापनिमयेणं भवन्ति निम
 रुद्धाणं मुहमेहि अंगमेवादिहि मुहमेहि मन्वमेहि

जय जय नाभि नरिंद नंद सिद्धाचल मंडण ।
 जय जय प्रथम जिणंद चन्द भव दुःख विहङ्गण ॥
 जय जय साधु सुरिंद बिंद बंदिय परमेसर ।
 जय जय जयदानंद कंद श्रीरिषभ जिणेसर ॥
 अमृत सम जिनधर्मनो ए दायक जग मे जाण ।
 तुम पद पंकज प्रीति घर निशि दिन नमत कल्याण ॥

नमोत्तुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
 तित्थपराणं सपंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
 पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोमुत्तमाणं
 लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअग-
 राणं अमपदयाणं चक्रवुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-
 णं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनाप-
 गाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्खवटीणं अत्थ-
 ष्हियवरनाणदंसणधराणं विअट्ठउमाणं जिणाणं
 जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं
 मोअगाणं सब्बन्नूणं सब्बदरिसीणं सियमयलमरु-
 मणंतमक्खपमब्बापाहमपुणराविसि सिद्धिगइ ना-
 मपेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिघभयाणं जे अ-
 अईया सिद्धा जे अ भविस्संति यागए काले संपइ अ-
 बहमाणा सव्वे तियिहेण धंदामि ॥

नमिजिणं च । वंदामि रिद्वनेमि, पासं तह वद्धमाणं ॥४॥ एवं मए अभियुआ, विद्धयरयमला पहीण जर्म
रणा । घउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिथ-वंदिय-महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग पोहिलाभं, समाहियर मुत्तमं दितु ॥६॥ चरे
निम्मलयर, आइचेसु अहियं पयासयर । सागरेवरं
भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सन्धलोए अरिहंन चेइआणं करेमि काउस्सगं
वदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सकारवत्ति
आए सम्माणवत्तिआए पोहिलाभवत्तिआए निरुवस
गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुए
हाए बहुमाणोए ठामि काउस्सगं ॥८॥

अधत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
भाइएणं उइइएणं वायनिसगोणं भमलिए पित्तमुच्छा
सुहमेहि अंगसंचालेहि सुहमेहि खेलसंचालेहि सुहमे
हि दिट्ठिसंचालेहि एयमाइएहि आगारेहि अमग
अयिराहिआं हुअ मे काउस्सगो जाव अरिहंता
भगवन्माणं नमुकारेणं न पारेमि सायकायं ठाणेणं मो
णेणं भाणेणं अप्पाणं वोसरामि ॥

एक नवकाय का काउस्सग को पीछे पाए के एक आइए
दूसरी मूनि को बोले

माणं नमुकारेणं न पारेमि नाय कार्य ठाणेणं मोणेणं
भाणेणं अण्णाणं धोमिरामि

एक नरकाय वा काउस्सगो न पार के एक भावनी तीर्थ
स्तुति पदे—

जैन धार्यं भूयाद् भूयै ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारमयाणं परंपरमयाणं ।

लोअग्गमुयगयाणं नमो सया सव्वमिद्धाणं ॥१॥

जो देवाण विदेवो, जं देवा पंजला नमंमंति । तं देव दे-
व महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इकोवि नमुकारो
जिणवर वसहस वद्धमाणस्स । संसारसागराओ,
सारेइ नरं व नारिया ॥३॥ उअंतसेलमिहरे, दिक्खा
नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्खविहि, अरिहंतेमि
नमंतामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दोयवंदिया जिणवरा
वउच्चोसं । परमट्ठ निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥

अन्नन्ध ऊससिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं द्दीण्णं
जंभाट्ठण्णं उड्डुण्णं वापनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-
च्छाप सुहुमेहि अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेलसंचा-
लेहि सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि एवमाइएहि आगारेहि
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
अरिहंताणं भगवंताणं नमुकारेणं न पारेमिताव कार्यं
ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अण्णाणं धोसिरामि ॥ १ ॥

ब्रह्म कहे । पीछे चार स्तुति कमवाय पूरी हो जावे पीछे नमोस्तुतुणं का पाठ पूरा कहे ।

नमोस्तुतुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं ति-
 त्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
 पुरिसवरपुंडरियाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं
 लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअग-
 राणं अभयदयाणं चक्रखुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-
 णं योहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं
 धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्रवहीणं अप्पडिहय-
 वरणाणंदसणधराणं विअट्ठउत्तमाणं जिणाणं जावयाणं
 तिआणं तारयाणं बुद्धाणं योइयाणं सुत्ताणं मोअगाणं
 सव्वन्तूणं सव्वदरिसीणं सियमयलमरुअमणंतम-
 वल्लय-मन्नापाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं
 संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ
 सिद्धा जे अ भविस्संति शागए काले संपड अ वट्टमाणा
 सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

जावंति चेइआइ उट्ठेअ अहेअति रिपलोए अ ।
 सव्वाइ ताइ धंदे इअ संतो तत्थ रंनाइ ॥१॥ -

जावंत केवि साह्म भरहेरवय महाविदेहे अ ।
 सव्वेसि तेसि पणआो तिविहेण तिदंढ यिरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

को अवश्य त्याग करना चाहिये और शेष (५) घी, तेल, दूध, दही, गुड़, खांड़ अथवा मोठा पक्वान ।

४ 'उपानह'—जूता, चूट, सिलीपर, मांजा आदि जो पांवमें पहना जाय ।

५ 'तंबोल'—पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि ।

६ 'वस्त्र'—वस्त्र (आभूषण 'जेवर' की संख्या भी इसी नियममें धार लेनी चाहिये) पगड़ी, टोपी साफा, अंगरखा, चोगा, कुड़ता, धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, अंगोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपड़ा जो ओढ़ने पहनेने में आवे ।

७ 'कुसुमेष्टु'—फूल, फूलकी चीजें जैसे—शय्या, पंखा, सेहरा, तुरा, हार, गजरा, अत्तर जो चीजें संघनेमें आवे ।

८ 'वाहन'—सवारी-गाड़ी, फिट्टीन, सिगराम, हाथी, घोड़ा, रथ, पालखी, डोली, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, स्टीमर आदि याने 'तरता-फिरता, चरता, और उड़ता' ।

९ 'शयन'—कुरसी, टेबल, पट्टा, पलंग, गद्दी, तकिया पिट्टीना, तख्त, मेज, सुखासन, आदि सोने वा बैठने की चीजें ।

३ काय.

१ पृथ्वीकाय-मिट्टी निमक आदि (ग्यानेमें वा उपभोगमें आवे) उसका वर्जन ।

२ अप्काय - जो पानी पीनेमें या दूसरे उपयोगमें आवे उसका वर्जन. पानीकी जान कूबा, पावटी, तलाब, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोईभी काममें लाना तथा जीवानीका पल करना अत्यावश्यक है ।

३ तेजकाय-चून्हा, अंगीठा, भट्टी, चिराक आदि का प्रमाण ।

४ वायुकाय-हिंडोले पंखे [अपने हाथसे वा हुकमसे] जिनसे चलते होंगे उनकी संख्याका प्रमाण. 'कुमालसे या कागजसे हवा लेनी यह भी पंखेमें गिनी जानी है उसकी जयणा' ।

५ धनस्पतिकाय-- हराशाक तथा फलादि इतनी जानके ग्याने घर संबंधी मंगाने जिसकी गिनती तथा बलन ।

६ धसकाय-- धसर्जाय अपरार्धा, विनापरार्धाका विचार करना । यह ६ कायका परिमाण कर लेना ।

६ कर्म.

१ अर्मा (शस्त्र और औजार) ललवार, पंदक,

६ काय.

१ पृथ्वीकाय-मिट्टी निमक आदि (खानेमें वा उपभोगमें आये) उसका वर्जन ।

२ अप्काय-- जो पानी पीनेमें वा दूसरे उपयोगमें आये उसका वर्जन. पानीकी जान कूबा, पावडी, तलाब, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोई भी काममें लाना तथा जीवार्थका पद करना अत्यावश्यक है ।

३ तेजकाय- बृन्दा, अंगीठा, भट्ठा, निराक आदि का प्रमाण ।

४ वायुकाय-हिंडोले पंगे [अपने हाथसे वा हुक-मारे] जितने चलने होंगे उनकी संख्याका प्रमाण. '४-मालाये वा कागजमे दया लेनी गद भी पीनेमें गिरा जाती है उसकी जपना' ।

५ वनस्पतिकाय-- दरागाक तथा कल्लादि इनकी जानके गाने पर संबंधी संगाने जिसकी गिनती तथा बतन ।

६ श्रमकाय-- श्रमजीन आदिकी, विनाशकारी विनाश करना । गद ६ कायका परिमाण बत लेना ।

७ कर्म.

१ श्रम (शम्र और शीतार) श्रमका, ६६६.

१ बंदमूल १५, समन्वयकाय, यह अथर्वे उपादे
 रोगों को रोगों के विनाशक, उपादे लायक है ।

२ राजदत्त का अर्थों को २४ ग्रह गृहकार्य में
 करना चाहिये ।

३ विवाह, शादी में घंटिया, आभूषण आदि
 कुर्याद्वारा न्याय करना चाहिये ।

४ एकाग्र भावियों को मानने का विधान ही लोगों में
 एकाग्र प्रचार है इसका भी न्याय करना चाहिये ।

५ बाल लक्ष्मी और वृद्ध विवाह या बन्धुविवाह
 आदि कुर्याद्वारा मिटा देना चाहिये वाने इपरीषा
 प्रसिद्धि बहुत हानि होनी है ।

६ अथर्वे अथर्व और बन्धुओं को नीति और धर्म-
 नाशकों निश्चय के लिये पाठशाला आदिकार्य प्रवर्ण क-
 रना चाहिये ।

प्यारे जैनी भाइयों इस लक्ष्मी विनाश द्वारा निरम
 देवगुरु बंदन या १४ नियम निवारक अवश्य लाभ
 लेना चाहिये । इति दाम् ।

अथ भावकों के प्रत्याख्यान के ४६ भागा ।
 (भांक नंबर ६)

भांक एक ११, का, एक करण और एक अंग से
 कठ नव ।

- १ करं नहीं मनसे
- २ करं नहीं वचनसे
- ३ करं नहीं कायासे
- ४ कराउं नहीं मनसे
- ५ कराउं नहीं वचनसे
- ६ कराउं नहीं कायासे
- ७ अनुमोदुं नहीं मनसे
- ८ अनुमोदुं नहीं वचनसे
- ९ अनुमोदुं नहीं कायासे

अंक एक १० का, एक कारण और दोष जोग से भांगा ऊटे नय ।

- १ करं नहीं मनसे वचनसे
- २ करं नहीं मनसे कायासे
- ३ करं नहीं वचनसे कायासे
- ४ कराउं नहीं मनसे वचनसे
- ५ कराउं नहीं मनसे कायासे
- ६ कराउं नहीं वचनसे कायासे
- ७ अनुमोदुं नहीं मनसे वचनसे
- ८ अनुमोदुं नहीं मनसे कायासे
- ९ अनुमोदुं नहीं वचनसे कायासे

अंक एक १३ का, एक कारण और तीन जोग से

भांगा ऊँडा एक ।

१ कम नहों कराउ नहीं अनुमोदुं नहीं मनसैं धुनैसे
कायासे ॥ १॥

जूमले ४९ आंगणपचास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तेवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, श्रीवांशे जिनराय ।

सद्गुरु मामिनि सरस्वति, प्रेमे प्रणमूं वाप ॥१॥

त्रिभुवनः त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ।

नासन नायक जग जयो, वर्द्धमान बह वीर ॥२॥

इक दिन वीर जिगंदने, चरणे करि परगाम ।

भयिक जोषन दिन भयो, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥

मुक्तिगार्ग आगविये, कहाँ किण परे अरिहंम ।

सुंषा सरस तब वषन रम, भांते श्रीभगवंत ॥४॥

अतिवार आनोदये, मन धरिये गुरु माख ।

जीव गमंवां सदा जे पोनि पोरानी हार ॥५॥

विधिहुं धनी घांसिरादिये, वापग्यान अहार ।

चार शरण निरख अनुमरो, निंदो दुरित आधार ॥६॥

शुभकरणी अनुमोदिये, भाष भलो मन धार ।

अणमण अवसर आदरी, नयन जयो सु—

५ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
 ६ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
 ७ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
 ८ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
 ९ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
 अंक एक २३ का, दो करण और तीन जोग से
 भांगा उठे तीन ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं मन से वचन से काया से
 २ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से
 ३ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से
 अंक एक ३१ का, तीन करण और एक जोग से
 भांगा उठे तीन ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से
 २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से
 ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं काया से
 अंक एक ३२ का, तीन करण दो जोग से
 भांगा उठे तीन ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
 २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
 ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
 अंक एक ३३ का, तीन करण और तीन जोग से

भांगां ऊठा एक ।

१ कर्त नहीं कराई नहीं अनुमोदु नहीं मनसैं धूमनेसे
कापासे ॥ १॥

जूमले ४२ ओगणपचास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक मद्रा, खोबाशे जिनराय ।
महगुरु मामिनि सरस्यति, प्रेमे प्रणमूं पाप ॥१॥
प्रियुधन ति प्रिशला मणो, मंदन गुण गंभीर ।
रामन नायक जग जयो, धर्तमान यह धीर ॥२॥
इक दिन धीर जिगंदने, चरणे करि परणाम ।
भविक जीवनहि न भणो, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥
मुक्तिपार्थ आगविये, कहा किण परे अरिहंत ।
सुंघा सरस मय वचन रस, भांते श्रीभगवंत ॥४॥
अनिवार आलोइये, प्रत धरिये गुरु माख ।
जोव समोयां मदन जे, सोनि चोरानी लाख ॥५॥
विधिनु धनी वामिरादिये, पापस्थान अहार ।
चार शरण निरप अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥६॥
शुभकर्णो अनुमोदिये, भाध अलो मन आज ।
अणमण अवसर आदरी, मयपद जयो सुजाण ॥७॥

शुभगति आराधन तणा, ए छे वृक्ष अधिकार ।
चित्त आशीने आदरो, जिन पामो भववार ॥८॥

॥ बाल पहेली ॥

...

॥ ए छिट्टि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसण चारिअ तप वीरज, ए पांचे आ
वार । एह तणा इह भव परभवना, आलाइये अनि
वार रे ॥ १ ॥ प्राणी, ज्ञान भणो गुणखाणी । वीर वं
म प्राणी रे ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु ओ
लवीये नहीं गुरु बिनये, काले धरी बहुमान । मृ
अर्थ तंदुभय करी मूर्धा, भणिये वही उपवान रे ॥२॥
प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पांटी पोथी, ठवणी नोक
रवाली, तेह तणी कीर्धी आगानना, ज्ञान भक्ति न सं
भाली रे ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीत
प्राणी, ज्ञान विराध्युं जेह । आ भव परभव बलिप
मवोभव, मिच्छादुष्ट तेह रे ॥४॥ प्राणी, समकित
ग्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचने शंका नवि
तीजे, नवि परमत अभिलाख । साधु तणी निंदा परि
रजो फलसंदेह म राख रे ॥५॥ प्राणी ॥ स० ॥ मू
पणुं छंडो परशंसा, गुणवंतने आदरिये । साहामीने
म करी धिरता, भक्ति प्रभावना करीये रे ॥६॥ प्राणी
स० ॥ संवचैप प्रसाद तणो जे, अवरणीयाद मन

દેવો । દ્રવ્ય દેવો જે વિગતો, વિગતો, વિગતો
 ॥ ૭ ॥ પ્રાણી ॥ ૭૦ ॥ દ્રવ્યોદિક વિગતો પળાઈ.
 સમક્ષિત રહેતું હેતુ । આ ભવ ॥ મિત્તા ॥ ૮ ॥
 પ્રાણી, ચારિત્ર્ય તો પિત્ત આગી ॥ ૭ આંકળી ॥ પાંચ
 સમિતિ પ્રગ શુભિ વિરાધિ, આંકે પ્રવચનમાય । આધુ-
 મને થઈ પડ્યો, અનુદ્યુત વચન મન વાગ્યું ॥ ૯ ॥ પ્રાણી
 ॥ ૧૦ ॥ આશ્ચર્યને થઈ સામાયિક, પાંચમાં મન વાળી ।
 જે સવળાપદક જે આંકે, પ્રવચનમાય ન પાલી ॥ ૧૦ ॥
 પ્રાણી ॥ ૧૦ ॥ દ્રવ્યોદિક વિગતો પળાઈ, ચારિત્ર્ય
 રોમ્બું હેતુ ॥ આ ભવ ॥ મિત્તા ॥ ૧૧ ॥ પ્રાણી
 ૧૦ ॥ વારે એકે નવ નવિ પીંડુ, હ્રદયે પાંચે નિજ શક્તે ।
 થઈ મન વન વાગ્યા ધારજ, નવિ કોરવિત્ત ભગતે ॥
 ॥ ૧૨ ॥ પ્રાણી ॥ ૧૦ ॥ તપશ્ચરજ આચારે ત્વજિ પર,
 વિવિધ વિરાધ્યા જેતુ ॥ આ ભવ ॥ મિત્તા ॥ ૧૩ ॥
 ॥ પ્રાણી ॥ ૧૦ ॥ ચત્તોય વિદ્યોયે ચારિત્ર્ય વેરા, અતિ-
 ચાર આલોચ્યે । ધાર જિનેમર વચન સુજાને, વાપ
 મળતુ સુધિ ધોઈયે ॥ ૧૪ ॥ પ્રાણી ॥ ૧૦ ॥
 ॥ દાલ ધારી ॥ પામી સુગુરુ પસાય ॥ પદેશી ॥

પૃથિવી પાણી તેડ, વાડ વનસવતિ ॥ ૫ પાંચે
 ધાવર વાળાં ૫ । વરિ કરમણ આરંભ, તેષ્ટ જે રોહિણી
 વૃથા તત્ત્વાય ચળાવીયાં ૫ ॥ ૧ ॥ વર આરંભ અનેક

कां भोयरां । मैडी माल चणावीयां ए । लीपण धुपण
 काज, इणी परे परपरे । पृथिवी काय विराधिया ए ॥ २ ॥
 गोधण नायण पाणी, झीलण अपकाय । छोनी धोनी
 करी वृहव्या ए । भाठीगर कुंभार, लोह सोवन गरा ।
 माडभुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काज,
 निखारण । रंगण रांधण रसवनी ए । इणी परे
 कर्मादान, परे परे केवली । तेउ वाउ विराधिया ए
 ॥ ४ ॥ घाडी वन आराम बावि वनस्पति । पान फल
 चंदीयां ए । पोहोक पापडी शाक, शेक्यां सुक-
 ष्यां । छुंयां छेयां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड,
 पाणी घालीने । घणा निलादिक पीलीया ए । घाली
 मोनु मांदि, पीली शेलडी । कंद मूल फलवेधीयां ए ॥
 ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्पा हणावीया । हणतां जे
 अनुमोदोया ए ॥ आभव परभव जेह, बलिय भवोभवे
 ते मुझ मिच्छामि दुक्कडेण ॥ ७ ॥ कृमी सरमीयां
 कीटा, गाडर गंडोला । इपल पूरा अलसीयां ए ।
 याना जलो चडेल, विचलिन रसनणा ॥ यली अथा-
 नां प्रमुग्वनां ए ॥ ८ ॥ एम वेइन्द्रिय जीव, जे मे दृष्ट-
 व्या ॥ ते मुझ ० ॥ उदेही जूलाय, मांकड मंकाडा ॥
 यांचड कीटा कुंथुआ ए ॥ ९ ॥ गहरीयां घीमेळ, कान
 वजरहा । गांगोहा धनेडियां ए । एम तेइन्द्रिय जीव,

जे में दृहण्या । मे मुक्ता ॥ १० ॥ मार्गी मग्गर रांग,
 मसा पनेगिया । बंसाही बोगियाबहा ए । दिनुण
 हिट नीर, भमरा भमरिया । कोमा दग गरहमोकरही
 ए ॥ ११ ॥ एम नीरिद्रिय जीव, जे में दृहण्या ॥ ते
 मुस ॥ जलमां मार्गी जाल, जलगर दृहण्या । वनमां
 दग सेनापिया ए ॥ १२ ॥ दीह्या देली जीव, पारी
 पागमां । पोपट पान्या पांजरे ए । एम पेनेद्रिय जीव,
 जे में दृहण्या ॥ ते मुस ॥ १३ ॥

॥ दाल श्रीजी ॥

॥ प्रथम गोबाला लणे भये जी ॥ ए देशी ॥

गोप लोभ भय हास्यपी जी, कोल्पां यवन अस-
 र ॥ कूट करी घन पारकां जी, लीपां जेह अदल
 रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिरछामि दृकटं आज ॥ तुम
 माखे महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देह सारुं काज रे ॥
 जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यचनां
 जी, मैथुन सेवपां जेह । विषवारस संपटपणे जी, घणुं
 पिटेव्यां देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी मयना
 करी जी, भव भय सेली आथ । जे जिहानी ते तिहां
 रहा जी, कोह न आये माथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥
 रपणी भोजन जे करी जी, कीपां भक्ष्य अभक्ष्य ।
 रसना रसनी लालचे जी, पाए करी प्रत्यक्ष रे ॥

सा० । ए धाजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषा-
 बाद हिंसा बोरो, सा० । धन मुर्छा मेहुस तो ।
 कोष मान माया तृष्णा, सा० । प्रेम डेव वैद्युन्य
 तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीये, सा० । कूडा
 न दीजे जाल तो । रति घरति मिथ्या सजो,
 सा० । माया मोस जेजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-
 विध त्रिविध बोसिराविये , सा० । पापस्थान
 प्रसार तो ॥ शिवगति आराधन तणो , सा० ।
 ए घोषो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ दाल पांचमी ॥

॥ ह्ये निःसुणी इहां आवीषाए ॥ ए देशी ॥

जनम जरा मरणे करी ए , ए संसार असार
 तो । करवां कर्म सङ्ग घनुभवे ए , कोई न राखण
 हार तो ॥ १ ॥ कारण एक अरिहंतनुं ए, कारण
 सिद्ध भगवंत तो । शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु
 शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अथर मोह सवि परिहरी ए,
 चार जरण गित्त धार तो । शिवगति आराधन तणो
 ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव
 जे करवां ए, पाप कर्म वेडू लाख तो । आत्मसाखे ते
 निंदीये ए, परिक्लमिये गुरु मारत तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति
 बर्तावियो ए, जे भांखीं बरहस तो । कुमति बडा-

ले यदो ए, बडी भागां उम्मुत्र सो ॥ ५ ॥ बडां
 दान्यां जे घणां ए, बंटी हल हरीवार सो । अथ भव
 टी मुक्तिग ए, करना जीव मंहार सो ॥ ६ ॥ पार
 ने पोषिया ए, जनम जनम परिहार सो । जनमां
 पोहोना पडी ए, कोइ न कीर्था मार सो ॥ ७ ॥ आ
 य परभव जे करवां ए, इम अधिकरण अनेक सो ।
 विषयोमरायोये ए, आणी हृदय विवेक सो ॥ ८ ॥
 कृतं निंदा एम करी ए, पाप करवां परिहार सो ।
 अगनि आराधन तगो ए, ए छठो अधिकार सो ॥ ९ ॥
 ॥ दान छठो ॥

॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ १० देगी ॥
 धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीयो धर्म । दान
 पेल तप आदरी, टाल्यां दृढकर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शैष्ठ्य
 दिक तीर्थनी, जे कीर्था यात्र । युगते जिनवर पूजीया,
 ली पोरवां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुष्पक ज्ञान लखा
 पां, जिणहर जिणचैव्य । संघ चतुर्विध साचव्या,
 साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिकमणां सुपरं करवां,
 नुकंषा दान । साधु मरि उवच्छाधने, दीधां बहुमान
 ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदीये, इम वारोबार ।
 अगति आराधन तगो, ए सातमो अधिकार ॥ ध०
 ॥ ५ ॥ भाव भलो मन आणीये, चित्त आणी ठाम ।

समता भाये भावीये, ए आनमराम ॥ ५० ॥ ६ ॥
 सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अघर न होय । कर्म
 भाय जो आचर्यां, भोगविये सोय ॥ ५० ॥ ७ ॥ समता
 विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम । छार उपर ते
 दीपतुं, छांखर चित्राम ॥ ५० ॥ ८ ॥ भाव भली परे
 भावीये, ए धर्मनां मार ॥ शिवगति आराधन मणो,
 ए आठमो अधिकार ॥ ५० ॥ ९ ॥

॥ दान्द सातमी ॥ रेवतगिरि उपरे ॥ ७ देशी ॥

ह्ये अघसर जाणा, करिये संलेखण मार ॥ अण
 मण आदरीये, पंचवर्षा चार आहार ॥ लल्लुमा सवि
 मृकी, छांही समता अंग । ७ आनम गेरे, समता जान
 मरंग ॥ १ ॥ गति चारे कौंधा, आहार अनंत निःशंक ।
 पण मृति न पाव्यो, जीव लालची आं रक । दुल्लो ७
 घली घली, अणमणनां परिणाम । गर्भ पावो जे, शिव
 पद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ भद्र धनो जालि भद्र, स्वधो मेघ-
 कुमार । अणमण आरार्थी, पाव्या भवनां पार ॥
 शिवमंदिर जाओ, करि एक अघनार । आराधन केरो,
 ए नयमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र सब-
 कार । मनवी नवि मृको, शिवतुल्य कल महकार ॥
 ए जपनां जाण, दुरगति दोष विहार । सुपरे ए समता,
 नउद परबनां मार ॥ ४ ॥ जन्मो नरे जाणा, जो पावो

हुवे निमहाज ॥ पचासनी संख्या परगही । मि० ॥ ४ ॥
 अनीत अनागत गिगनां एम । दोइसे कल्याणकथा-
 ये तेम ॥ कुण तिथि छे ए तिथि जंबही । मि० ॥ ५ ॥
 अनंत चौबीसी इग परे गिगो । लाभ अनंत उपवास
 तगो ॥ ए तिथि सहृ तिथि गिरराखही ॥ मि० ॥ ६ ॥
 मौनपणे रहा श्री महिनाथ । एक दिवस संपम वन
 साध ॥ मौन तगो परिव्रत इम पही । मि० ॥ ७ ॥
 अठ पोहरी पोसां लाजिये । पाविहार विधिगुं कोजिये
 ॥ पण परमादन कोजे घही । मि० ॥ ८ ॥ वरम
 इग्यारे कोजे उपवास । जाय जीय पण अधिक उल्ला-
 स ॥ ए तिथि मोक्ष तगो पावही । मि० ॥ ९ ॥ उज-
 मणुं कोजे श्रीकार । ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार
 ॥ करो काउससग गुरु पाये पही । मि० ॥ १० ॥ देहरे
 म्नात्र कोजे बली । पोथी पूजीजे मन रली ॥ मुगतिपुरा
 कोजे दूकही । मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोदुं पर्य
 । आराध्यां सुग्य लहिये सर्व ॥ वन पधवत्याण करो आ-
 भही । मि० ॥ १२ ॥ जेमल सोल इवपासी समे । बी-
 धुं स्नयन सहृ मन गमे ॥ समय सुन्दर कहे करो प्याव-
 ही । मि० ॥ १३ ॥

ખેલેરાં, ઘટિલાં કુત્તર આપેરે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૮ ॥ તુમ
 સરિયા સાહિય વિળ મદારે, જાં નવિ કારજ મારેરે
 ॥ જ૦ ॥ મો મુમ્મ કરમ નર્ગી ગતિ અવર્તી, દોષ ન
 કોઈ તુમારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૯ ॥ દીનક્યાલ દયાકર્મી
 દોજે, શુદ્ધ સમકિત સહિનાર્તારે ॥ જ૦ ॥ સુગુણ મે-
 વકના ચાંન્નિહન પૂર્ગ, તેદોજગુણ મળિયારી રે ॥ જ૦
 મુ૦ ॥ ૧૦ ॥ વર્ષ અદારે ગુણમાલમે, જેષ્ટસુદામોમ-
 પારો રે ॥ જ૦ ॥ ત્યાલબંદ પ્રતિવદ્દિન મેટયા, વીકા-
 નેર મદારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૧૧ ॥

॥ શ્રી મીમંધરસ્વામિકા સ્તવન ॥

મકલ્પ સંસાર અવમાર ન હું ગણું, સ્વામી સ્વામીભરા
 તુમ્હા ભગને ખજું ॥ મેટયા વાગકમલ આવ દિવદેવળો,
 કરિય સુવમાય જે પોનયું મેં સુળો ॥ ૧ ॥ તુમ્હા શું
 કૃત અરિહેમ શું શામિયે, જિણ્યા અમે નિર્ગાં કર
 જોદિ કરિ આપિયે ॥ અતિ સવલ મુશ્કતિયે મોજ માયા
 વળી, વૃદ્ધ મન ભગતિ કિમ કર પ્રિભુવન ધર્મો ॥ ૨ ॥
 જોય આરતિ કરે નવનયા વરિગદે, રીઝા જટકો જદે
 મોખ વર્ણાનદે ॥ નવગરમવળગરમકામરમ રબોધો,
 મેમ અરિહેમ શું દિવદે નવિ વર્ણો ॥ ૩ ॥ દિવમ
 ને તાત દિવદે અનેગો ધર્મ, મુદ્ધ મન રીઝવા વલિય

ખલેરો, ઘદિલાં કત્તર આપેરે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૮ ॥ તુઝ
 સરિયા સાહિય વિળ મહારે, જો નવિ કારજ સારે
 ॥ જ૦ ॥ નોં મુઝ કરમ નગી ગનિ અવર્તી, દોષ ન
 કોઈ તુમારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૯ ॥ દીનદયાલ દયાકરી
 દોલે, શુદ્ધ સમક્તિ સહિનાગોરે ॥ જ૦ ॥ સુગુણ સે-
 વકના વાંન્દિત્ત પૂરાં, તેહાજગુણ મણિમાળા રે ॥ જ૦
 મુ૦ ॥ ૧૦ ॥ ઘર્ષ અદારે ગુણનાલામે, જેટસુદો સોમ-
 ઘારો રે ॥ જ૦ ॥ લાલસંદ પ્રતિપદદિન મેટવા, વીકા-
 નેર મહારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૧૧ ॥

॥ શ્રી સીમંધરસ્વામિકા સ્તવન ॥

સકલ સંમાર અવનાર ન હું ગણું, સ્વાર્માસીમંધરા
 તુમ્હ ભગને બળે ॥ મેટવા પાવકમલ ભાવ દિપદે ઘણો,
 કરિય સુપમાય જે ધોનયું તે સુણો ॥ ૧ ॥ તુમ્હ શું
 કૃદ અરિહંત શું રામિયે, જિણાં અગે તિમ્હો કર
 જોદિ કરિ આપિયે ॥ અનિ સવલ મુક્તિયે મોહમાયા
 ઘણી, નક મન અગતિ કિમ કરું ત્રિભુવન બળી ॥ ૨ ॥
 જીવે અરિહંત કરે નવનયા પતિગહે, રીજા પટકો પદે
 લોચ વર્ણનહે ॥ નવનરમવણરમકામરમ રવોયો,
 તેમ અરિહંત તું દિપદે નવિ ધર્માયો ॥ ૩ ॥ દિવસ
 ને રાત્રિપદે અનેયો બને, મૃદ મન રીઝવા યદિય

जो होय तो सहिय आयो मिलु ॥११॥ मेरुगिरि
 लेखणी आभ कागल कनं, क्षीरसागर तर्णा दूध खडिपा
 भनं । तुम्ह मिलयानगा स्वामी संदेशड़ा, इंद्र पण ल-
 खिय न शके अछे एहवा ॥१२॥ आपणे रंगभरि घात
 मुख जेटली, ऊपजे स्वामी न कहाय मुख तेटली ।
 सुणो सीमंधरा राज राजेसरा, लाड़ ने कोड़ प्रभु पूर-
 सविमाहरा ॥१३॥ पुण्यभवि मोह यश नेह हूवे जेहने,
 समरिये पणि संसार नित तेहने । मेहने मोर जिम
 कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तं निस्त मोरं गमे
 ॥१४॥ खनं अरिहंतनुं ध्यान हियड़े घरयुं, पापहुं पाप
 हिय रहिय फरशे कियुं । ठाम जिम गरुड घर पंखि
 आवेयहो, तनखिण रूपनी जानि न जकेरही ॥१५॥
 पाप में कज्ज मावज्ज सह परिहरी, स्वामी सीमंधरा तु-
 म्ह पप अणुमरी । शुद्ध पारिध कहिये प्रभु पालशुं,
 दुःख भेदार संसार भय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हूं दास
 हूं तुम्ह सेवक सही, एह में घात अरिहंत आगल
 कही । एवई माहरी भगनि जाणी करी, आपजो पा-
 पजी मार घेवल सही ॥१७॥ कलज ॥ एम माद्धि पृद्धि
 समृद्धि कारण, दुरित पारण सुख कही । उषज्जाप
 दर श्री भनि लाभे, धुण्यो श्री सीमंधरो । जय जयो
 जगगुरु जीव जीवन करी स्वामी मया घणी । कर जोही

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गयुं दोष अंगरी, देखी दीर्घ अनन्त ।
 भुजापले भवजल नखा, पूजो मंथ महन्त ॥४॥
 रसत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करमा अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपगम पल, पाल्या रागनें रोष ।
 हेम दौं वन मंथनें, हृदय तिलक मंथोष ॥६॥
 मोल पहर देई देशना, कंठ विधर धर मूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणें, निम गले निलक अमूल ॥७॥
 मारिंकर पद पुन्य भी, त्रिभुवन जन मेषंन ।
 त्रिभुवन निलक ममा प्रभु, भाल निलक जयवंन ॥८॥
 मिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांमिक भगवंन ।
 यमिया निण कारण सहा, मिद्ध जिया पूजेंन ॥९॥
 उपदेशक नय मयनां, निम नय अंग जिनेंद ।
 पूजो पहुविष भावरी, कोट सहु धार सुनिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हने राणी पद्मावती, जीवराजि लमावे । जाण
 पणुं जग मे अमृत, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते सुभ
 मिच्छामि दुष्टहं, अविमर्षी माण । जे में जीव विरा
 जिया, बडगती लाण ॥ ते० ॥ २ ॥ माण माण एधि-

करदंड । घंशियान भराविघा, कोरडा छट्टी दंड ॥ ते० ॥
 ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीर्घां नारकी वृःख ।
 वेदन भेदन वेदना, ताडन अनिनिग्न ॥ ते० ॥ १५ ॥
 कुंभारनेभवे में किया, नाभाह पचाव्या । तेन्दी भवे
 निल वीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 हाली भवे हल वेदीयां, फाट्यां पृथ्वीनां पेट । मृद
 निदान घणां किया, दीर्घां यत्तद पपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 मार्याने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मृत् पत्र-फल
 फूलनां, छायां पाप ते लक्ष्म ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधां
 वाईयाने भवे, भरथा अधिका भार । पोटी पटे कोटा
 पट्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छांवाने भय
 छेतरथा, कीर्घां रंगण पास । अग्नि आरंभ बीभा घणा,
 धातुवाद अग्न्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ जारवणे रण जुझ
 ता, मारवां माणमर्द । मदिश मांस मायण भर्त्ता,
 खाधां मूल ने वंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ ग्याण ग्यणाधी
 धातुनी, पाणी उल्लेख्यां । आरंभ बीभा अतिपणा,
 पोने पापज संख्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ वसि धंगार बीया
 वली, दरमें दय दीधा । तम ग्याधा बीनरागना, कृरा
 कोमज बीभा ॥ ते० ॥ २३ ॥ विरली भवे उंदर लीया,
 गिरली हयारी । मृद गमार लणे भवे, में जु लीय
 मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भादभुजा लणे भवे, एवेदिय

जेव । जेवनि चणा गहं ओकिया, पाहंतां रीव ॥ ते०
 ॥ २७ ॥ स्वांठण वीमण गारना, आरंभ अनेक ।
 रांधण हंधण अग्निनां, कीर्थां पाप उदेक ॥ ते० ॥ २८ ॥
 विकथा गार कोणी बली, मंड्या पांच प्रमाद । इष्टवि-
 योग पाह्या कोया, मंडन विपवाद ॥ ते० ॥ २९ ॥ माधु
 अने भ्रात्रक नगा, वन लहीने भांग्यां । मल अने
 उत्तर नगां, मृम दूषण लाग्यां ॥ ते० ॥ ३० ॥ मार
 बाळी मिह बीवरा, शकराने समली । हिमक जीवतणे
 भवे, हिमा कीर्था मयली ॥ ते० ॥ ३१ ॥ मृवावडी
 दूषण घणां, बली गर्भ गलाव्या । जीवार्था डोल्हा घणां,
 गोलवत भंजाव्या ॥ ते० ॥ ३२ ॥ भव अनेत भमतां
 धकां, कीर्था देह संबंध । त्रिविध करी वोसिके, तिणशुं
 प्रतियन्व ॥ ते० ॥ ३३ ॥ भव अनेत भमतां धकां,
 कीर्था परिग्रह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिके,
 तिणशुं प्रतियन्व ॥ ते० ॥ ३४ ॥ भव अनेत भमतां
 धकां, कीर्था कुटुंबसंबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिके,
 तिणशुं प्रतियन्व ॥ ते० ॥ ३५ ॥ इणि परे इहभव पर-
 भवे, कीर्था पाप अग्यग्र । त्रिविध त्रिविध करी वोसिके,
 क्रमे जन्म पविग्र ॥ ते० ॥ ३६ ॥ एणि विधे ए आग-
 धना, भावे करदो जेह । समय सुंदर कह पाकथा, बली
 सुदो तेह ॥ ते० ॥ ३७ ॥ राग वेराही जे सुणे, एह

श्रीजी हात । समस्तसुन्दर कहें पापभा, छटे नमकाल
॥ने०॥३६॥इति॥

अथ श्रावक नीचे लखेला त्रण मनोरथने चिन्-

वने महा मोहोटी निज्जंग कर । तथा

संसारना अंत कर, ते लिखिये छेये॥

क्यारे हूं याहा तथा अभंगपर परिचय जे
महापापने मूल, दुर्गतिने बंधारनांग, काम काय मान
माया, मोह, विषय अने कथापनां स्वाधी, महादुःखनु
कारण, महा अनर्थकारं दुर्गतिनां शिला मोटी लेइयां
परिणामी, अज्ञान, मोह, मन्मा भग जने छेपने मूल,
दशविध गतिपथ ह्य कल्याणलता दावानल ज्ञान
क्रिया, क्षमा, दया, मन्म, मनाय तथा वारिधोजरूप
समकितनां नाश करनांग मगम अने प्रकाशना पात
करनांग, कुमति तथा कुबुद्धिरूप ५ महाविद्वना देवा
यालो, सुमति अने सुबुद्धिरूप सुखसा नाशना नाश
करनांग, भव संगम ह्य धनने लुप्तनांग लान बलेश
रूप समुद्रनां बंधारनांग, जन्म जरा अने मरणनां
देवायालो, कपटना मोहार, मिथ्यात्व दर्शन रूप दासव-
नां भंगलो, मोक्षमार्गना विघ्नकारं कदवा बरं विपा-
कनां देवायालो, अनेन संसारनां बंधारनांग, महा पापी,



इच्छामि ममि काउससगं जो मे राइआ० क०। नम
उत्तरी० क०, नम विनयनीनां या चार नंगरम अथवा
सोह नयकारनो काउससग करघां, ते पार्श्वे प्रगट
लोगस क०, इहा आघटयकनो मुहवनि पट्टिनेशनं
पांशुनां वे देवां ॥

११ सकल नार्थवन्दन कर्त्तव्यं यथाशक्ति, नम
क्याण करघुं ॥

॥ अथ नार्थवन्दना ॥

सकल नार्थ वंदुं करजाह, जिनवर नामे मंगल
कोह । पहिले स्वर्ग लाग्य घर्षाम, जिनवर चमप नमु
निशदीस ॥ १ ॥ पांजे लाग्य अष्टाविश कर्मां, श्रीजे
शर लाग्य सदस्यां । पांशे स्वर्ग अष्ट लाग्य भार, पांशमे
वंदुं लाग्य जवार ॥ २ ॥ छट्टे स्वर्ग सहस पचाम, मानमे
भालिश सहस प्रामाद । आठमे स्वर्ग छ हजार, नयदश
मे वंदुं ज्ञान बार ॥ ३ ॥ अग्वार बारमे धरणेशं सार, नम
प्रेवेपके प्रणमं अदर । पांश धनुस्तर सर्व मली, लाग्य
गोरार्जो अधिकां घली ॥ ४ ॥ सहस सत्पाणुं प्रेवीज
सार, जिनवर भुवन मणो अभिकार । लांवां सो जोजन
विस्तार, पचास उंचां पदोनेर बार ॥ ५ ॥ एकमो पंचो दिव
परिमाण, सभासहित एक चम्ये जाण । सो कोह बा-
बान कोह मंभाल, लाग्य गोरार्जु सहस पांजाल ॥ ६ ॥

, पडिक्क-
म पोली

' धायुं

माणं "

इयाणं,
मोर्जम्

, कली
मये

चार

मु"

न ।

॥ अथ वरकनक ॥

वरकनकशंखचिह्नम-मरकतचनमस्तिभ विगनमोहं ।
ममनिगतं जिनानां सर्वामरप्रजितं वेदे ॥ १ ॥

॥ अथ अड्डाड्डजेसु मुनिवन्दन ॥

अड्डाड्डजेसु दीवसमुद्देशु, पत्तरमसु कम्मभुमासु ।
जायंते केचि माह, रत्तहण गुच्छ पटिग्गहभागा ।
पेयमहव्ययभागा, अट्टारममहम्मसालेगभागा ।
अकण्णपा-
शावगिस्ता, ते मध्ये मिरसा मणसा मन्थणवन्दामि ॥

२. एवमासमग दट् " इच्छाकारेण संदिमह भग-
वन् ! देवमिय पायच्छिन्न विमोहणन्धं काउम्मग
मं ? इच्छं, " " देवमिय पायच्छिन्न विमोहणन्धं
तिमि काउम्मगं " अस्तन्ध उम्मिगणं० कर्त्ता पार
लोगम्म अथवा मोल नवकारनां काउम्मग करयो. मे
मार्गी प्रगट् लोम्मग कर्त्तने पत्ता

३. वेसा एवमासमग दट्, " इच्छाकारेण संदिमह
भगवन् ! मज्जाय संदिमाहं ? इच्छं " कर्त्ता, पामं
एवमासमग दट् " इच्छाकारेण संदिमह भगवन् !
मज्जाय भणुं ? इच्छं " एव मज्जायना आदेज मार्गी,
एव नवकार गर्णी मज्जाय कहेयी ॥ पत्ता

४. एव नवकार गर्णी, एवमासमगे दट् " इच्छा-



